CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5

Presentation copy Vidyāpatigītasaṅgraha

विद्यापतिगीतसंग्रह विद्यापतिगीतसंग्रह

संपादक - सुभद्र झा, M.A., D.Litt.

प्रकाशक - मोतीलाल बनारसीदास

पटना, १९५७

9.5

S.M. Mukhopadhyaya
Kashi 1957.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यापति-गीतसंग्रह

डा० सुभद्रझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यापति-गीत-संग्रह

[नेपालक पोथी, रागतरङ्गिणी तथा
रामभद्रपुरक पोथीक आधार पर]

संपादक—
श्री सुभद्रझा
भूमिका लेखक
श्री आनन्दमिश्र

प्रकाशकः—
मोतीलाल बनारसीदास,
बाँकीपुर, पटना

मूल्य १॥)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशकः—
मोतीलाल बनारसीदास
बाँकीपुर, पटना

मुद्रकः—
श्रीशान्तिलाल जैन
श्री जैनेन्द्र प्रेस,
नेपालीखपरा, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्तव्य

महाकवि विद्यापतिक रचनाक अनेको संस्करण भए चुकल अछि। सबहि संस्करणमे संपादकक किछुने किछु वक्तव्य तथा हुनक कएल अर्थ आदि देल रहैछ। एहि सभसँ पुस्तकक आकार बढ़ि जाइछ, तथा एकर फलस्वरूप तकर मूल्य सेहो अधिक भए गेल करैछ। दोसर दोष एहिसँ ई होइछ जे विद्यार्थी लोकनि संपादकहिक कएल अर्थ पढ़ि सन्तुष्ट भए जाइत छथि, तथा ओ स्वयं अर्थ करबाक हेतु यत्न नहि करैत छथि। एकर अतिरिक्त गायक-गायिका लोकनिक रुचिक सर्वथा अनुकूल ई लभ्य संस्करण सभ नहि होइछ।

एहि सभ विषयकेँ दृष्टिमे राखि प्रामाणिक सूत्र मात्रक आधार पर वर्त्तमान संस्करण प्रकाशित कएल जाइत अछि। आशा अछि पाठक लोकनिक ई रुचिकर होएत।

श्रीआनन्दमिश्र एकटा छोट तथा रुचिपूर्ण भूमिका एहि संस्करणक लेल लिखलन्हि, तदर्थ हम अपन अधमर्णताक विज्ञापन करैत छी।

संपादक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

विद्यापति मैथिलीक सभसँ यशस्वी कवि भेलाह। हिनक मैथिली-में रचित गीत मिथिलाक कोन कथा, बङ्गाल, आसाम तथा उत्तर-प्रदेशहुमे गाओल जाइत अछि। उत्तर भारतवर्षमे प्रचलित आधुनिक आर्य भाषा क्षेत्रमे एहन यश प्रायः ककरहुं नहि प्राप्त भेलैन्हि। चारि-चारि भाषा भाषी क्षेत्रमे हिनक गीत अपन अधिकार जमओलक। आसामी, बङ्गला, हिन्दी तथा मैथिली—एहि चारू भाषा-भाषीकेँ विद्यापतिक गीत एक नवीन प्रेरणा दैत अएलैन्हि अछि। बङ्गालमे त ई गीत सभ एक कृत्रिम भाषा ब्रजबुलिक जन्म दए देलक, जाहिमे बङ्गलाक परम यशस्वी कवि लोकनि रचना कएलैन्ह। विश्वकवि रवीन्द्रनाथठाकुर आदिमे एही भाषामे 'भानुसिंहक' नामसँ रचना कएल।

विद्यापतिक जन्म दड़िभंगा जिलान्तर्गत 'बिसपी' ग्राममे भेल छलैन्हि। हिनक जन्म कहिआ भेल तथा मृत्यु कहिआ—ताहि विषय पर मतैक्य नहि अछि। विद्वान लोकनि भिन्न भिन्न उपलब्ध सामग्रीक आधार पर हिनक समयक विषयमे भिन्न-भिन्न अनुमान करैत छथि। स्वर्गीय नगेन्द्रनाथगुप्तक अनुसार विद्यापतिक जन्म जँ १३५७ ई० मे भेल छलैन्हि त स्वर्गीय हरप्रसादशास्त्रीक अनुसारे १३५० ई० मे। मिथिलामे हिनका विषयमे जे अनुसन्धान भेल अछि, तकरा आधार पर श्री उमेशमिश्र, श्री सुभद्रझा, स्वर्गीय शिवनन्दन ठाकुर तथा श्रीरमानाथझा लोकनि विद्यापतिक जन्म १३६० ई० मे मानैत छथि। एतवा धरि निश्चित अछि जे विद्यापति दीर्घजीवी छलाह, कारण हिनक रचना सभक अध्ययनसँ ई विषय स्पष्ट भए जाइछ जे ई कतेक राजा लोकनिक दरबारसँ सम्बद्ध छलाह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा लोकनिक समयक निश्चित प्रमाण उपलब्ध रहलाक कारणे विद्यापतिक समयक एक मोटामोटी ज्ञान भए जाइछ। बहुमतसँ विद्यापति ईस्वी सन् १३६० सँ १४४८ धरि वर्त्तमान छलाह।

रचना

अपन दीर्घकालीन जीवन मे विद्यापति अनेक ग्रन्थक रचना कएलैन्हि। ओहि रचनासभक अध्ययनसँ कविक बहुमुखी प्रतिभा स्पष्ट होइछ। ओ एक कवि, शिक्षक, कथाकार, ऐतिहासिक, भूवृत्तान्त-लेखक, स्मार्त्त-निबन्धकार आदिक रूपमे अपन प्रतिभा देखओलैन्हि अछि। कथाक माध्यमसँ शिक्षा बड़े प्रभावोत्पादक होइत छैक। संस्कृत-साहित्यक प्रभावसँ विद्यापतिओ विष्णुशर्माक शैली पर 'पुरुषपरीक्षा' क रचना कएल, जकर चारि परिच्छेदमे उदाहरण प्रत्युदाहरण सहित ओ दानवीर, युद्धवीर, दयावीर तथा सत्य-वीरक वर्णन उपस्थित कएने छथि। एहि ग्रन्थमे एहेन दृष्टान्त सभ देल गेल अछि जकरा लोक शीघ्र हृदयंगम कए सकए। ई ग्रन्थ कतबा लोकप्रिय भेल तकर अनुमान एहीसँ भए जाएत जे एकर अनुवाद अंग्रेजी, मैथिली, बङ्गला तथा हिन्दी आदि भाषामे भए चुकल अछि। ई ग्रन्थ महाराज शिवसिंहक आज्ञासँ संस्कृतमे लिखल गेल, तथा एकर प्रधान उद्देश्य नेना लोकनिकेँ नीतिसँ परिचय कराएब थीक।

विद्यापतिक समयमे यातायातक सुविधा ओतेक नहि छलैक, जतेक आइकाल्हि हमरालोकनिकेँ प्राप्त अछि। तेहना समयमे मिथिलासँ नैमिषारण्य पर्यन्त प्रधान प्रधान तीर्थक वर्णन अपन 'भूपरिक्रमा' ग्रन्थमे लिखि कवि हमर एक महान् उपकार कएल। ई ग्रन्थ महाराज देवसिंहक आज्ञासँ लिखल गेल, तथा अद्यावधि अप्रकाशित अछि।

थोड़ो पढ़ल लिखल व्यक्तिकेँ लौकिक-व्यवहारक चिट्ठी-पत्री लिख-वाक शिक्षा देबाक हेतु राजाबनौलीक राजा पुरादित्यक आज्ञासँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यापति 'लिखनावली' † नामक ग्रन्थक रचना कएल। चिट्ठीक नमूना सभ संस्कृतहिमे अछि, जकरा पढ़लासँ समकालीन सामाजिक व्यवस्थाहुक ज्ञान होइत अछि।

संस्कृत भाषामे हुनक आओर बहुत ग्रन्थ उपलब्ध होइछ यथा—शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वसार-प्रमाणभूत पुराणसंग्रह, गङ्गावाक्यावली, दानवाक्यावली, वर्षकृत्य आदि। एक गोट नाटक 'मणिमञ्जरी' से हो हिनक लिखल संस्कृतहिमे उपलब्ध होइछ। 'गोरक्ष-विजय' नामक दोसर नाटक सेहो नेपालमे भेटल अछि, जाहिमे संस्कृतसँ भिन्न मैथिलीक सेहो गीत सभ छैक।

संस्कृतसँ अतिरिक्त विद्यापति 'अपभ्रंश'मे दुइ गोट ग्रन्थक रचना कएल—कीर्त्तिलता तथा कीर्त्तिपताकाक। 'कीर्त्तिलता' कविक प्रथम रचना कहल जाइछ, तथा एहिमे ओ अपनाकेँ 'खेलन' कवि कहने छथि*, प्रथम रचना रहितहुँ कविकेँ अपना भाषा पर गर्व छैन्हि, आओर ओ कहैत छथि :—

बालचन्द विज्जावइ भासा।
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा॥
ओ परमेसर हर सिर सोहइ।
इ णिच्चइ णाअर मन मोहइ॥

एहि ग्रन्थमे कीर्त्तिसिंहक वीरताक उल्लेख अछि। कोन रूपेँ

---

† लिखनावली बहुत दिन पूर्व छपि चुकल अछि। मुदा ओंकर एकहुटा पूर्ण प्रति देखबामे नहि आएल। स्वर्गीय डा० गङ्गानाथझाक पुस्तकालयक प्रति अलभ्य भएगेल अछि। हँ, भाग्यवश डा० जयकान्तमिश्रकेँ एकटा पोथी कतहु अवश्य भेटल छलैहि। यदि कोनो पाठकक ध्यान पर ई पोथी अबैहि त तकर सूचना कृपया अवश्य देथि—सं०

* ई उक्ति मिथिलाक्षर पढ़बामे कोनो अपटु व्यक्तिक कीर्तिलताक अन्तिम पद्यक 'खेलतु कवेर्भारती'क अशुद्ध पाठ 'खेलनकवेर्भारती' पर अवलम्बित अछि।—सं०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गणेश्वरक मृत्युक अनन्तर इब्राहिमसाहक साहाय्यें कीर्त्तिसिंह असलानकें हराओल तथा राज्य प्राप्त कएल तकर कथा कीर्तिलतामे वर्णित अछि। एहि ग्रन्थमे देश-दशा, युद्धयात्रा, हाटक वर्णन अत्यन्त रोचक भेल अछि। एहि पोथीक अनुवाद अंग्रेजी, बङ्गला तथा हिन्दीमे भेल अछि। ग्रन्थक भाषा पर संस्कृत क प्रभाव स्पष्ट अछि।

अपभ्रंशमे लिखल विद्यापतिक एक आओर ग्रन्थ भेटैछ- कीर्ति-पताका- जाहिमे सुल्तानक संग शिवसिंहक युद्धक विस्तृत वर्णन अछि। ई ग्रन्थ खण्डित रूपमे उपलब्ध भेल अछि, तथा अद्यावधि अमुद्रित अछि †।

संस्कृत तथा अपभ्रंश भाषामे रचनाक अतिरिक्त विद्यापतिक काव्यक एक विशाल अंश मैथिलीमे मुक्तकरूपमे विद्यमान अछि। विद्यापतिक यश विशेषतः एहि मुक्तक रचनहिमे सुरक्षित अछि तथा हुनक परोक्ष भेना यद्यपि आइ पाँच सए वर्ष भए गेल, तथापि ओकर प्रचार घर-घरमे अछि। हुनक गीत सभक संग्रह भिन्न-भिन्न समयमे विद्वान-लोकनि प्रस्तुत कएलैन्हि अछि। सभ संग्रह अपन किछुने किछु वैशिष्ट्य रखैत अछि।

गीतसंग्रह

विद्यापतिक गीतक प्रचार उत्तर भारतवर्षमे पूर्ण रूपें भेल। पहिने कोनो नीक संस्करण क आधार पर कविक रचनाक अध्ययन करब कठिन छल। लोक साधारणतः कविता कण्ठस्थ कए लैत छल, तथा एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ जाइत जाइत ओहि गीतमे गायकक योग्यतानुसार परिवर्त्तन एवं परिवर्द्धन सेहो भए जाइत छलैक। विद्यापतिक समस्त गीतसंग्रह कतहु एक

† कीर्तिलता तथा कीर्तिपताका, दूनू ग्रन्थक संशोधन श्रीरमानाथझा तथा श्रीतन्त्रनाथझा कए रहल छथि। एकर प्रकाशन भेला पर अनेको विषम स्थलक पाठक विशुद्धिक कारणे अर्थ स्पष्ट होएत— सं०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठाम नहि भेटैछ। हिनक अनेक गीत नेपाल, मिथिला तथा बङ्गालक प्राचीन गीतसंग्रह सभमे भेटैत अछि। जाहि जाहि गीतमे विद्यापतिक भनिता भेटैत अछि, तेहन गीत सभक संग्रह अनेक प्रकाशित भेल अछि। ग्रिअर्सन, चन्दाझा तथा नगेन्द्रनाथगुप्त एहि रूपक गीतक संग्रह कएने छलाह। यदि विद्यापति गीत समन्वित पोथी सभपर सम्यक् रूपेँ विचार कएल जाएत, तखन ओहि आकर ग्रन्थ सभक विभाजन तीन श्रेणीमे होएत यथा—नेपालक पोथी (१) लोचन कृत 'रागतरंगिणी', शिवनन्दनठाकुर द्वारा सम्पादित रामभद्र पुरक पोथी तथा नगेन्द्रनाथगुप्त द्वारा वर्णित तरौनी क तालपत्र (२) बङ्गाल में संगृहीत 'क्षणदागीतचिन्तामणि 'पदामृतसमुद्र', 'पदकल्पतरु', संकीर्तनामृत' एवं कीर्तनानन्द'।

'नेपालक पोथी' नेपाल-दरबार-लाइब्रेरीमे † संरक्षित अछि। पोथी मिथिलाक्षर मे लिखल अछि पोथीक ऊपरमे देवाक्षरमे केओ 'विद्यापति को गीत' लीखि देने छथि। पोथीमे १०८ गोट पत्र छैक, तथा प्रत्येक पत्रमे पाँच सँ सात पङ्क्ति छैक। किछु अक्षर संदेहास्पद अवश्य अछिः—यथा—र, व तथा व; ल तथा न; तु एवं ओ; ठ तथा च।

एहिमे २८८ गोट गीत अछि, जाहिमे २६१ गीतमे विद्यापतिक भनिता भेटैत छैक। एक टा गीतमे भनिताक स्थानमे उगनाक नाम भेटल अछि। तेरह गोट गीतमे ककरहु भनिता नहि अछि, तथा शेष तेरह गीत एगारह विभिन्न कविक भनितासँ युक्त अछि। एहि संग्रहक भाषा पर पूर्ण विचार करैत, एक संस्करण १९५४ ई० मे श्रीसुभद्रझा द्वारा प्रकाशित भेल अछि। यद्यपि एहि कोपकी उपयोग स्व० नगेन्द्रनाथगुप्त, श्री खगेन्द्रनाथमित्र तथा श्री विमानविहारीमजुमदार सेहो कएलैन्हि अछि, किन्तु हुनका लोकनिकेँ मैथिलीक प्राचीन प्रयोग तथा एकर भाषा-वैशिष्ट्यसँ अपरिचित

† अखन एकर नाम वीर लाइब्रेरी अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहलासँ पाठ-शुद्धि नहि भए सकलैन्हि अछि। प्रस्तुत संस्करण मे नेपालक पोथीक २६२ गीत समाविष्ट अछि।

लोचनकृत 'रागतरङ्गिणी' में विद्यापतिक ५१ गोट गीत भेटैत-अछि, जाहि गीतकेँ स्वेच्छा सँ परिवर्तन कए परवर्त्ती संग्रह कर्ता लोकनि अपना-अपना संग्रहमे स्थान देने छथि। एहि पोथीक ९ टा गीत नेपालोक पोथीमे भेटैत अछि। लोचनक पोथीमे अन्यो-कविक जे गीत अछि, ताहिमे विद्यापतिक भनिता जोड़िकए संग्रह-कर्ता लोकनि अपना अपना पोथीमे विद्यापतिक गीतक संख्यामे वृद्धि कएने छथि।

'विहार एण्ड उड़िसा रिसर्च सोसाइटी' क तत्त्वावधानमे कार्य करैत प० श्रीविष्णुलालझा 'शास्त्री'केँ रामभद्रपुरमे विद्यापतिक गीतक एक संग्रह भेटलैन्हि, जे तालपत्र पर लिखल छल, तथा ओ पोथी खण्डित से हो छलैक। ओकरहि आधार पर स्व० शिवनन्दन ठाकुर 'विशुद्ध विद्यापति पदावली' क सम्पादन कएल जे १९३८ ई० मे मैथिली-साहित्य-परिषद् द्वारा प्रकाशित भेल। एहिमे ८६ गोट गीत अछि। ई पोथी चारि लेखक क लिखल बूझि पड़ैछ। सम्प्रति ई कोष 'पटना विश्वविद्यालयक पुस्तकालय'मे अछि। एहि पोथीक किछु पद नेपालोक पोथीमे भेटैत अछि। किन्तु दूनूक भाषाकेँ देखला सँ कतोक अंशमे नेपालक पोथीक भाषा वेसी प्राचीन बुझना जाइत अछि। प्रस्तुत संस्करणमे एहू पोथीक सभ पद संगृहीत अछि†।

नगेन्द्रनाथगुप्त अपना पोथीमे 'तरौनीक पोथी' क उल्लेख कएने छथि, किन्तु ओ पोथी आब प्राप्य नहि अछि। एहिसँ भिन्न बंगालक विभिन्न पद-संग्रह मे विद्यापतिक गीत संगृहीत अछि, किन्तु ओकर भाषामे यथेष्ट परिवर्तन कए देल गेल छैक, तथा ओ

---

† एतए ई ज्ञातव्य अछि जे विशुद्धविद्यापतिपदावलिहुमे कतेको एहन पद्य अछि, जाहिमे विद्यापतिक नाम नहि अछि, तथा अनेकोमे आन कविक नाम अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रामाणिक ग्रन्थमे वर्तमान विद्यापतिक नाम युक्त गीत सभक भाषा आदिक दृष्टिएँ नहि मानल जा सकैछ ।

प्रस्तुत संस्करण नेपाल, रामभद्रपुर तथा लोचनक प्रचलित गीतक आधार पर भेल अछि । एहिमे पाठान्तर नहि दए सम्पूर्ण गीते उद्धृत भेल अछि। किछु प्रहेलिका जे नेपाल तथा रामभद्रपुरक पोथीमे छैक तकरो समावेश एहिमे छैक । एकर गीत संख्या २७० अछि, तथा प्रत्येक गीतक ऊपरमे रागक नाम सेहो देल छैक, जाहिसँ यदि केओ मिथिलाक संगीत पर किछु अनुसंधान करए चाहथि तँ हुनका साहाय्य भेटैन्हि ।

विद्यापतिक विचारधारा

विद्यापतिक विचारधाराक विषयमे मतान्तर अछि। एक मत विद्यापतिक राधाकृष्ण सम्बन्धी गीतकेँ अन्योक्ति एवं रहस्योक्तिसँ परिपूर्ण मानैत अछि । कृष्णक अर्थ परमात्मा, राधाक अर्थ जीवात्मा तथा दूतीक अर्थ मार्गप्रदर्शक गुरु कहल जाइछ। एहि मतक समर्थन डा० ग्रिअर्सन अपन पोथी 'मैथिली क्रेष्टोमैथी'मे कएने छथि । एहि भावक पुष्टि स्वर्गीय नगेन्द्रनाथगुप्त सेहो कएल। डा० जनार्दन मिश्र उक्त दूनू विद्वानक मतक अनुसरण करैत लिखैत छथि जे विद्यापतिक समयमे रहस्यवादक पूर्ण प्रचार छल, तेँ स्त्री तथा पुरुषक रूपमेँ जीवात्मा एवं परमात्माक उपासनाक जे धारा चलल ताहीमे विद्यापतिओ अपनाकेँ बहाए देल। हुनका अनुसारेँ विद्यापतिक गीत आध्यात्मिक विचार तथा दार्शनिक गूढ़ रहस्यसँ परिपूर्ण अछि ।

दोसर मत विद्यापतिक राधाकृष्ण-सम्बन्धी गीतक विषयमे ई अछि जे ओ गीत सभ पूर्णतः शृङ्गार रसक भावनासँ ओतप्रोत अछि । एहि मतक प्रतिपादन समीचीन रूपेँ म० म० हरप्रसाद शास्त्री अपन 'कीर्त्तिलता' क भूमिकामे कएने छथि । हुनका अनुसारेँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यापतिक रचनामे वर्णित राधा-कृष्ण एक साधारण मैथिल युवती एवं युवक छथि। स्व० नगेन्द्रनाथ गुप्तक पदावलीक ८४० पदमे ३३७ टा पद राधा-कृष्णक नामसँ विहीन अछि। म० म० शास्त्रीक मते विद्यापति कीर्त्तनक गान नहि लिखलैन्हि,प्रत्युत हुनक गीत सभ कीर्त्तनमे मिला लेल गेलैन्हि अछि। विद्यापति सौन्दर्यक कवि छलाह, ओ अपना रचनामे ओकरे सृष्टि कएलैन्हि अछि।

स्व०शिवनन्दनठाकुर अपन 'महाकवि विद्यापति' पुस्तकमे पूर्ण रूपेँ विचार करैत एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे विद्यापति पूर्णतः शृङ्गार रसक कवि छलाह। श्रीरमानाथझा अपन "की विद्यापति वैष्णव छलाह ?" शीर्षक गवेषणापूर्ण निबन्धमे एहि विषयकेँ प्रतिपादित कएने छथि जे विद्यापतिक रचनाक मिथिलामे कहिओ वैष्णव भजनक रूपमे आदर नहि भेल। ओ बराबरि सहृदयक हृदयमे शृङ्गार रसक उद्रेक करैत आएल अछि। विद्यापतिक कृष्ण सच्चिदानन्द ब्रह्म नहि थिकाह, ओ एक साधारण मैथिल युवक थिकाह, तथा राधा सेहो एक साधारण मैथिल युवती। कीर्तनक सृष्टि तँ विद्यापतिक २०० वर्ष पश्चात् भेल तेँ यदि चैतन्य विद्यापतिक गीत गबैत गबैत मूर्च्छित भए जाइत छलाह त ओकर कारण केवल राधाकृष्णक नाम मात्र थिक, आन किछु नहि। मिथिलामे एखनहु विद्यापति राधा-कृष्ण सम्बन्धी गीत विवाह आदि माङ्गलिक अवसर पर गाओल जाइछ। भजनक स्थानमे लोक हिन्दीक सूर, तुलसी तथा मैथिलीक साहेबराम आदिक गीत गबैत अछि।

विद्यापतिक संप्रदाय

विद्यापति स्वयं अपन रचनामे कतहु अपन सम्प्रदायक चर्चा नहि कएने छथि। हुनक रचना समूहकेँ देखलासँ ई भान होइछ जे ओ जँ कतहु दुर्गाक स्तुति करैत छथि, त कतहु शिवक, कतहु जँ गङ्गाक गीत लिखैत छथि, त कतहु विष्णुक। हुनक रचनाक आधार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर विद्वान् लोकनि भिन्न-भिन्न तर्कक संग विद्यापतिकेँ भिन्न-भिन्न सम्प्रदायक सिद्ध करैत छथि। बङ्गालमे ओ एक विशिष्ट वैष्णवक रूपमे गृहीत होइत छथि। ओ-लोकनि हिनका सहजिआमतानुयायी कहैत छथि। प० भगीरथप्रसादशुक्लक अनुसारेँ विद्यापतिकेँ पञ्च देवोपासक मानलैन्हि। हुनका मतेँ विद्यापति गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा तथा शिव एहि पाँचोक उपासक छलाह। स्व० नगेन्द्रनाथगुप्त तथा शिवनन्दनठाकुर विद्यापतिकेँ शैव कहैत छथि। श्रीखगेन्द्रनाथमित्र तथा डा० विमानविहारीमजुमदार विद्यापतिकेँ वैष्णव सिद्ध करबाक प्रयास कएने छथि।

विभिन्न विद्वान् लोकनिक द्वारा प्रतिपादित विषय सभक अध्ययन एवं विद्यापतिक रचनाक पर्यवेक्षण सँ ई स्पष्ट भए जाइछ जे कवि भिन्न भिन्न आराध्यमे एकेटा रूप पबैत छलाह। ओहो एक शक्तिकेँ ओ भिन्न-भिन्न नामे कहने छथि।

काव्यसौष्ठव

विद्यापतिक गीतक प्रधानतः दू भाग कएल जाइछ। प्रथम त ओहेन गीत जाहिमे कवि राधा-कृष्णकेँ आलम्बन मानि शृङ्गार रसक गीतक रचना कएने छथि तथा दोसर, ओहेन गीत जाहिमे भक्तिभावनासँ प्रेरित भए कवि शिव, गोसाउनि आदिक गीत लिखने छथि। कविक काव्यक विशेष अंश शृङ्गारस प्रधाने अछि, जाहिमे संस्कृत साहित्यशास्त्रानुसार कवि वयःसन्धि, अभिसार, मान, मिलन, विरह आदिक अति चित्ताकर्षक वर्णन कएलैन्हि अछि। विद्यापति प्रधानतः मुक्तक गीतक रचना कएने छथि। हुनक नायक साहित्य-शास्त्रक अनुसार धीर ललित दक्षिण नायकक रूप मे चित्रित भेल छथिन्ह। कवि स्वतन्त्र रूपेँ अपन नायकक चित्रण कम ठाम कएने छथि। नायिकाक चित्रणक संगहि हुनकहु चित्रण भए जाइत छैन्हि। ओ वयस्कक रूपमे हमारा लोकनिक समक्ष उपस्थित कएल जाइत छथिः —

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिनव जलधर सुन्दर देह ।
पीत वसन जनि दामिनि रेह ॥
सामर झामर कुटिलहि केस ।
काजर साजल मदन सुवेस ॥

कवि नायकक पूर्व रागक सुन्दर वर्णन कएने छथि। यद्यपि ओ जयदेवसँ पूर्ण प्रभावित छलाह आओर 'अभिनव जयदेव'क रूपमे प्रसिद्धिओ पाओल, किन्तु पूर्वरागक वर्णनमे ओ अपन काव्य गुण सँ आगाँ वढ़ि गेल छथि। देखू एक गीतः—

नन्दक नन्दक कदवेरि तरु-तरेँ
धिरेँ-धिरेँ मुरलि बोलाव ।
समय सँकेत निकेतन बैसल,
वेरि-वेरि बोलि पठाव ।
सामरी तोरा लागि अनुखने विकल मुरारि ॥

विद्यापतिक नायिका वयःसन्धिक अवस्थहिमे पाठकक समक्ष उपस्थित होइत छथि। ई कल्पना मौलिक बूझि पड़ैछ। जयदेवक राधा वयःप्राप्त, यौवन-प्राप्त, एवं केलि-चतुरा छथि, किन्तु विद्यापति हुनका यौवनक पथ पर सद्यः आरूढ़ चित्रित कए भारतीय साहित्यमे एक अभिनव सृष्टि कएने छथि।

वयःसन्धिक वर्णनक पश्चात् कवि नखशिख-वर्णनक योजना कएने छथि। ई अनेक रूपेँ नखशिख लिखवाक चेष्टा कएलैन्हि अछि। ओहि वर्णनमे प्राचीन कविक रुढिक ग्रहण कए ओकरा अभिनव ढङ्गसँ उपस्थित कएने छथि।

सौन्दर्य एवं प्रेम वर्णनक एहन विन्यासी कवि भारतीय आधुनिक भाषा साहित्यमे भेटब दुर्लभ। हिनक सौन्दर्य भावना एतेक प्रबल अछि जे नायिकाक दुःखपूर्ण अवस्थहुमे ई ओकर सौन्दर्यक वर्णन करैत छथि। एक-एक चित्रकेँ ई भिन्न-भिन्न उपमा, उत्प्रेक्षा द्वारा उपस्थित कए ओकर प्रभावकेँ वढ़वैत छथि। वर्णन-सम्बन्धी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतमे सजीवता एवं मूर्त्तिमत्ता सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ। गीत अत्यन्त सुन्दर, स्निग्ध तथा भावुकतासँ पूर्ण अछि। ओहिमे संगीतक प्रधानता छैक, आओर छैक भावक एकता, अनुभूतिक गाम्भीर्य तथा परिचित मूर्त्तिमत्ता।

कविक अभिसार वर्णनमे प्रियतमक प्रेमोद्वेगक संग जीवनक उपेक्षाक परिचय भेटैछ। प्रेमक धारामे कोनो प्रकारक बाधा आबि गेलासँ कोना ओ धारा उच्छृङ्खल भए जाइछ, तथा कोना प्रेमी एवं प्रेमिका अपन जीवनकेँ संकटमे दए ओहि धारासँ क्रीड़ा करबामे एक अपूर्व आनन्दक प्राप्ति करैछ आदि विषयक सुन्दर वर्णन कबि द्वारा प्रस्तुत भेल अछि। अभिसारकेँ कवि प्रेमक सिद्धिदायक मन्त्र मानैत छथि। हुनका अनुसारेँ प्रेमक साधना अभिसारक साधनसँ सिद्ध होइछ,–'सकल अभिसार सिद्धि दायक'। प्रेमक गहनता एवं तीव्रताक निदर्शनार्थ कवि कृष्ण तथा शुक्ल दूनू प्रकारक अभिसारक वर्णन कएने छथि। एहिसँ भिन्न ओ दिवसाभिसार तथा पुरुषक वेषमे अभिसार तकरहु वर्णन कएलैन्हि अछि।

संयोग शृङ्गारक विद्यापति एक उत्कृष्ट कवि छथि। हुनक मान वर्णन पुनः ओकर भङ्ग आदिक वर्णन देखि केओ मुग्ध भए सकैछ। किन्तु एकर ई तात्पर्य नहि जे विद्यापति विप्रलम्भ शृङ्गार नहि लिख-लैन्हि। नायिकाक विरहकेँ कवि विभिन्न दृष्टिएँ वर्णन कएलैन्हि अछि। नायिकाक आन्तरिक व्याकुलताक जे सफल चित्रण ई कएलैन्हि, ओकर संगहि नायिकाक हृदयक प्रत्येक मनोवेगकेँ ध्यानमे राखि अपन काव्यकेँ नैसर्गिकता एवं यथार्थतासँ युक्त कएल।

दोसर प्रकारक जे हिनक गीत अछि ताहिमे एक भक्त कविक उद्‌गार प्रकट भेल अछि। ओ गीत सभ ततबा लोकप्रिय भेल जे एखन पर्यन्त गाम-गाममे सर्वत्र गाओल जाइत अछि। ओहि गीतमे, भए सकैछ, जे साहित्यशास्त्रानुसार किछु व्यक्तिकेँ भिन्न-भिन्न गुण नहि भेटैन्हि किन्तु हुनक 'नचारी' एवं 'महेशबानी' कतबा प्रसिद्धि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राप्त कएलक तकर एहीसँ अनुमान कएल जाए सकैछ जे अकबर बादशाहक दरबारी अबुल फ़जल अपन पुस्तक 'आइने अकबरी' पर्यन्तमे एकर प्रशंसा कएने छथि, तथा ताहू दिन मे ई गीत सभ पूर्ण प्रचलित छल।

मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय
१६·३।५७

श्री आनन्दमिश्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत सूची

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
	अ	
२३	अगमने पेम गमने कुल जाएत	९
२१९	अघट घट घटावए चाहसि	८३
२३५	अधर मगइते अजोध कर माथ	८९
६५	अपनहि नागरि अपनहि दूत	२४
६८	अपना मन्दिर बैसलि अछलिहु	२५
१०३	अपनेहि पेम तरुअर बाढल	३७
३३०	अबला अंशुक बालभु लेला	१२८
२१४	अम्बरे वदन झपावह गोरि	८१
१५८	अरुण लोचन घूमि घुमाओल	६०
१२१	अवधि बहिए हे अधिक दिन भेल	४५
१२९	अवधि बढाओलन्हि पुछिहह कान	४८
३२	अवयव सबहि नयन पए भास	१३
६	अविरल नयन गलए जलधार	३
९१	अहनिसि बचने जुडओलह कान	३३
	आ	
३२८	आँचरे वदन झपावह	१२७
१००	आएल पाउस निविड अन्धार	६४
२३७	आएल बसन्त सकल बन-रञ्जक	९०
९२	आकुल चिकुर बेढल मुख-सोभ	३३
१५९	आकुल चिकुर बेढल मुख-सोभ	६०
३५५	आकुल चिकुरे बेढल मुख-सोभ	१३७
३३९	आज पुनिमाँ तिथि जानि मोञे	१३१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
२५३	आजे अकामिक आएल भेषधारी	९६
१४८	आजे मञे हरि समागम जाएब	५६
२२	आदर अधिक काज न बन्ध	९
२०७	आदरि आनलि परेरि नारी	७७
७८	आध नयन दए तहुकर आध	२८
१०६	आलसे अरुण लोचन तोर	३९
९५	आसा खण्डह दए विसवास	३४
११२	आसा दइए उपेखह आज	४१
१८	आसा मन्दिर बैसि निसि गमावए	७
	इ, ई	
९८	इन्दु से इन्दु इन्दु हर इन्दुत	३६
२९५	ई दसिहालल	११४
	उ	
४५	उगमल जग भम काहु न कुसुम रम	१८
७२	उचित वएस मोर मनमथ चोर	२६
१७४	उघकल केस पास लाजे गुपुत हास	६५
३२९	उघसल केस कुसुम छिलिआएल	१२७
	ए	
२८१	एकहिँ बेरिँ अनुराग बढाओल	१०७
७९	एके मधुयामिनि सुपुरुष-सङ्ग	२९
३५	एघने पावञो ताहि विधाता	१४
१९४	एहि मही अधि अथिर जीवन	७२
	ओ	
२५८	ओतएक तन्त उदन्त न जानिअ	९८
७१	ओ पर-बालभु तञे पर-नारि	२६
३०८	ओहु राहु भीत एहु निसङ्क	११८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
	क	
७	कण्टक माझ कुसुम परगास	३
८७	कण्टक माझ कुसुम परगास	३१
३०९	कत एक हमे धनि कतए गोआल्	११६
२११	कतए गूजा कतए फूल	७६
१२७	कत खन वचन विलासे	४७
६	कत (न) अछ युवति कलामति आने	४
१२	कतन जीवन सङ्कट परए	५
२५६	कतन झोरी सिन्दुरे भरलि	६६
२१५	कतन दिवस लए अछल मनोरथ	८१
३३६	कतन वेदन मोहि देसि मदना	१३०
३६१	कतहु श्मश्रुधर कतहु पयोधर	१३६
३	कतहु साहर कतहु सुरभित	२
२८०	कमलकोष तनु कोमल हमारे	१०६
१८२	कमलिनि एडि केतकि गेला	६८
३६७	करतल कमल नयन ढर नीर	१४२
२३४	करतल लीन दीन मुखचन्द	८५
६६	करतल लीन सोभए मुख-चन्द	३६
२८२	करहि मिलल रह मुख नहि सुन्दर	१०८
३१६	करहि न सुन्दरि अलक तिलक राधे	१२३
२६३	काच-घटी अनुगत जल जेम	१००
२७७	काछिड काछिअ ई बडि लाज	१०५
२७२	काजर रंग वमए जनि राति	१०३
२१८	काजरे राङ्गलि मञे जनि राति	३२
१४४	कानन कोटि कुसुम परिमल	५४
१६७ ३३७,	कामिनि करए सनाने	७३,१३१
२४१	कामिनि वदन वेकत जनु करिहह	६२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
३३८	कालि कहल पिआजे साँझहि रे	१३१
१७९	काहु दिस काहल कोकिल रावे	६७
२३२	की कान्हु निरेषह भौह-विभङ्ग	८८
१७८	की पर-वचने कन्ते देल कान	६६
२००	कुच कलश लोटाइलि घन सामर वेणी	७४
११६	कुच-कोरी-फल नख-खत रेह	४३
२८४	कुच जुग धरए कुम्भ थल कान्ति	१०८
२०८	कुटिल विलोक तन्त नहि जान	७८
३३५	कुण्डल तिलकेँ विराज मुख-सोभ	१३०
३३१	कुन्द भमर सङ्गम सम्भाषव	१२९
२०९	कुन्द भरम सम्भ्रम सम्भार	७८
२३१	कुल-कामिनि भए कुलटा मेलिहु	८८
२५७	कुवलय कुमुदिनि चौदिस फूल	९८
३२६	कुसुम बान विलास	१२६
१७	कुसुमे रचित सेजा, दीप रहल तेजा	७
१६५	कुसुमे रचित सेज मलयज पङ्कज	६२
१७	कुसुमे रचित सेजा	७
७०	कूपक पानि अधिक होअ काढी	२६
९६	के बोल पेम अमिअके धार	३५
१४	के मोरा जाएत दुरहुक दूर	६
१३९	केस कुसुम छिलिआएल फुजि	५२
२५५	केहु देखल नगना	९७
११	कोकिल-कुल कलरव काहल बाहर बाजे	६
२९९	कोकिल गावए मधुरिम वानि	११५
१०९	कोटि कोटि देल तुलना हेम	४०
१९२	कोमल तनु पराभवे पाओब	७१
	ख	
१७३	खने सन्ताप सीत जल जाड	६५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
१३०	खेत कएल रखवारे लूटल	४८
	ग	
३६८	गगन गरज घन	१४२
३६६	गगन गरज मेघा	१४१
२२६	गगन तीन हे तिलक अरि-जुवती	८६
७१	गगन भरल मेघ उठलि थेघे	२७
४३	गगन मडल दुहुक भूखन	१७
३४५	गमने गमाउलि गरिमा	१३३
१२३	गाए चरावए गोकुल वास	४६
२८३	,,	१०८
२२२	गुञ्जा आनि मुकुता हमे गाथल	८४
४७	गुण अगुण सम कए मानए	१६
५१	गुरुजन कहि दुरजनसञो वारि	२०
२६६	,,	१०१
२८६	गुरुजन दुरजन परिजन वारि	१११
३६०	गेलाहुँ पुरुब पेमे	१३६
	घ	
६४	घटक विहि विधाता जानि	३४
	च	
१६२	चरण नूपुर उपर सारी	६१
२७४	चरन कमल कदली विपरीत	१०४
१२४	चरित चातुर चिते वेआकुल	४६
३४०	चल चल सुन्दरि शुभ कर आज	१३२
२६१	चल देखने जाउ ऋतु वसन्त	६६
२६०	चान्दक तेज रअनि धर जोति	१११
१०२	चान्द गगन रह	३७
२८	चान्द-वदनि धनि चान्द उगत जबे	११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
३१०	चारि पहर राति संगहि गमाओलि	११६
२६६	चिन्ताञे आसा कवललि	१०२
	छ	
२०५	छलिहु एकाकिनि गथइते हार	७६
१५६	छलि भरमे राहि	५९
१५५	छलिहु पुरुब भोरे	५८
	ज	
२४६	जकर नयन जतहि लागल	६४
२१२	जखने जाइअ सयन-पासे	८०
३१६	जखने संकेत चलु	१२२
१०१	जञो डिठिका ओल एइ मति तोरि	३७
१८७	जञो प्रभु हम पाए रे दा लेब	७०
३१७	जत जत तोहे कहल	१२२
१०७	जति जति घमिअ अनल	३६
५३	जनम होअओ जनु जञो पुनु होई	२०
३२७	जनि हुतवहँ हरि आनि मेराओल	१२६
१४६	जमुना-तीर युवति केलि कर	५६
३६२	जय जय भगवति भीमा भवानी	१४०
२९	जल्ओ जलधि मन्दा	१२
५६	जलद वरिस घन दिवस अन्धार	२२
१६६	जलद् वरिस जलधार	७४
२७१	,,	१०३
१३१	जलधर अम्बर रुचि परिहाउलि	४९
११५	जलधि मांगए रतन भण्डार	४२
१६८	जलधि सुमेरु दुअओ थिक सार	६३
६१	जहिआ कान्ह देल तोहि आनि	२३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
२६१	जहुआ कान्ह देल तोहि आनि	११२
११	जहिखने निअर गमन होअ मोर	५
१६१	जातकि केतकि कुन्द सहार	७१
३६३	जाति पदुमिनि कुन्द सहार	१४०
१००	जावे न मालति कर परगास	३६
१३३	जावे रहिअ तुअ लोचन आगे	५०
१२०	जावे सरस पिआ बोलए हसी	४५
३१३	जामिनि दुर गेलि	१२०
२६२	जाहि देस पिक मधुकर नहि	१००
२४५	जे छल से नहि रहले भाव	६३
४	जेहे अवयव पुरुब समय	२
२१३	जौवन चाहि रूप नहि ऊन	८०
१३२	जौवन रतन अछल दिन चारि	४९
३४१	जौवन रूप अछल दिन चारि	१३२
	झ	
३१	झटक झाटल छाडल ठाम	११
२४४	झाखि झाखि न खिन कर तनू	६३
	ट	
८४	टाट टुटले आङ्गन वेकत	३०
	ड	
३१२	डरे न हेरए इन्दु	१२०
	त	
७३	ततहि धाओल दुहु लोचन रे	२७
२७६	तन्हिकरि धसिमसि विरहक सोस	१०५
२६०	तरुअर वलि धर डारे जौंति	६६
१०५	ताके निवेदिअ जे मतिमान	१८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
३५२	तुअ गुन गौरव शील सोभाओ	१३६
१२६	तुलित लागि फुलल अरविन्द	४७
१८१	तेहँ हुँनि लागल उचित सिनेह	१८१
३४८	तारेए मोञे गेलिहुँ फूल	१३५
१२८	तोर साजनि पहिल पसार	४८
११४	तोरा अधर अमिञ लेल वास	४२
५	तोहर वचन अमिञ ऐसन	२
३४	तोहर हृदय कुलिस कठिन	१३
२६५	तोहरा लागि धनि खनि	१०१
११७	तोहे कुल--ठाकुर हमे कुल नारि	४३
१४२	तोहे कुलमति रति कुलमति नारि	५३
१४७	तोहे जलधर सम जलधर राज	५५
७७	त्रिवलि अछ(लि) तरङ्गिणि मेलि	२८
२२८	त्रिवलि तरङ्गिणि पुर दुगम जनि	८६
	थ	
२७५	थिर पद परिहरिए	१०४
	द	
२२७	दखिन पवन वह मदन धनुषि गह	८६
७४	दरसन लागि पुजए नित कामे	२७
३०३	,,	११७
६६	दरसने लोचन दीघर धाव	२५
१३५	दहए बुलिए बुलि	५१
१४५	दारुण कन्त निठुर	५४
१९०	दारुण सुनि दुरजन बोल	७१
३०५	दाहिन दिढ अनुरागे	११७
५०	दिने दिने बाढए सुपुरुष-नेहा	१९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
१७२	दिवस मन्द भल न रहए सब घन	६४
१८६	दुइ मन मेलि सिनेह अङ्कुर	७०
६६	दुरजन वचन लहए सब ठाम	२५
३०६	दुहुक अभिमत एक न मिलने	११७
११२	द्विज आहर-आहर-सुत	५७
	न	
३२४	नन्दक नन्दन	१२५
३१८	नगरक वानिनि ओ	१२३
५५	नदी (सतत) वह	२१
३४४	नव जौवन अभिरामा	१३३
२९६	न बुझए रस नहि बुझ परिहास	११४
१५७	नयनक ओत होइते होएत भाने	५६
१७६	नयन काजर अधरे चोराओल	६६
३००	नअनक नीर चरन तल गेल	११५
४२	नयनक नीर चरन तल गेल	१७
२६७	नवरति पति, नव परिमल	१०१
२६	नव हरि तिलक वैरि-सख यामिनि	११
२४६	नहि किछु पुछलि रहलि धनि बैसि	६३
१४०	नागर हो से हेरितहि जान	५२
१६०	नारङ्गि छोलङ्गि कोरिकि वेली	६०
१६१	निसि निसिअर भम भीम भुअङ्गम	६१
१८६	निसि निसिअरे भम भीम भुअङ्गम	६६
३२१	निसि निसिअरे भम भीम भुअङ्गम	१२४
१६६	नीन्दे भरल अछ लोचन तोर	७३
३०७	नूपुर रसना परिहरि देह	११८
२०४	नोनुअ वदन सिरि धनि तोरि	७६
३४७	नमित अलकैं वेढला	१३४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
	प	
८२	पछा सुनिअ मेलि महादेइ	३०
५४	पञ्चवदन हर भसमे धवला	२१
२०६	परक पेअसि आनलि चोरी	७७
५८	परतह परदेस परहिक आस	२२
३०४	पहिलहि अमिय लोभायी	११७
२४७	पहिलहि चोरि आएल पास	९४
१०४	पहिलहि परसए करे कुच-कुम्भ	३८
४१	पहिलहि सरस पयोधर कुम्भ	१६
१५४	पहिलुकिं परिचय पेमक संसय	५८
२९२	पहिलहि पेमक तरुअर बाढल	११२
२९८	पहु सञो उतरि	११५
२८६	पाए तक पाछु गेलि लाज	११०
२५२	पाहुन आएल भवानी	९६
३४९	पिआ परवास आस तुअ पासहिं	१३५
१९	पुरल पुर परिजन पिसुन	८
३०	पुरुब जत अपरुब भेला	१२
३११	पुरुष भमर सम	११९
१९३	प्रणमि मनमथ करहि पाएत	७२
२४	प्रथम पेम हरि जत बोलल	१०
२१०	प्रथम समागम के नहि जान	९५
८०	प्रथम समागम भुषल अनङ्ग	२९
११९	प्रथम सिरीफल गरब गमओलह	४४
६२	प्रथमहि अलक तिलक लेव साजि	२४
११३	प्रथमहि कएलह नयनक मेलि	४२
२४२	प्रथमहि कएलह हृदयक हार	९२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
२२३	प्रथमहि कतन जतन उपजओलह	८४
२३३	प्रथमहि गिरिसम गौरव मेल	८८
२५४	प्रथमहि शङ्कर सासुर गेला	९६
१४६	प्रथमहि सिनेह बढाओल	५५
३२०	प्रथमहि हाथ पयोधर लागु	१२३
१६४	प्रथमहि हृदय पेम उपजाए	६२
१७१	प्रथमहि हृदय बुझओलह मोहि	६४
	फ	
१७७	फूजलि कबरि अवनत कर आनन	६६
	ब	
४६	बसन्त रजनि रङ्गे	१८
४४	बडि जुडिए कुतुकक छाहरि	१७
२७०	बडेँ मनोरथेँ साजु अभिसार	१०३
९३	बदन झपावए घन कत भार	३३
३५९	बाँधए विकट जटा	१३९
८६	बाट भुअङ्गम उपर पानि	३१
१८०	बाढलि पिरिति हठहि दुर गेलि	६७
२९३	बाढिक पनि अधिक होअ काढी	११३
४०	बान्धल हीर अजरल ए हेम	१६
५२	बालि बिलासिनि जतने आनलि	२०
५६	बुझहि न पारलि परिणति तोरि	२१
७६	बोललि बोल उत्तिम पए राख	२८
	भ	
३३	भागल कपोल अलके लेल साजि	१३
१९८	भौँहँ भागि गेल लोचन मेल आड	७४
२०३	भौह-लता बड देखिअ कठोर	७६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
	म	
८	मज्झे सुधि पुरुष पेम भरे भोरि	४
१६	मज्झे सुधि पुरुष पेम भरे भोरि	६
१५०	मधु-रजनी सङ्गहि खेपबि	५६
३५६	मलिन कुसुम तनुचीरे	१३८
३३२	माघ मास सिरि पञ्चमि गँजाइलि	१२८
२३६	माधव मास तिथि भउ माधव	८६
३७०	मान परीहर हे करु वचन मोरा	१४३
२२०	माधवे आए कवाल् उवेल्लि	८३
२०८	माननि मान मौने मन साजि	१०६
१११	मालति मधु मधुकर कर पान	४१
३६४	मृगमद पङ्क अलका	१४०
२१६	मोर वउरा देखल केहु कतहु देखल जात	६७
२०	मोरि अविनय जत पल्लि खेओब तत	८
	य	
३३४	यदि तोरा नहि खन नहि अवकास	१३०
	र	
२३६	रअनि काजर वम भीम भुअङ्गम	९१
३६	रभसहितह बोललन्हि मुख कान्ति	१५
३६६	रयनि काजर वम भीम भुअङ्गम	१४१
२३४	रयनि समापलि फुलल सरोज	८६
१६७	रसिकक सरवस नागरि वानि	६३
२४३	रिपु पचसर जनि अवसर	६२
३४२	रोपलह पहु लहु लतिका	१३२
	ल	१२५
३२५	लता तरुअर मण्डप	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
६०	लहु कए बोललह गुरुतर भार	२३
३५७	लाखहु लता कोटि तरुअ	१३८
२१	लाखे तरुअर कोटीहि लता	६
१२५	लुबुधल नयन निरलि् रहु ठाम	४६
८६	वचन अमिअ सम मने अनुमानि	३२
२१६	वचनक वचने दन्द पए बाढल	८१

व

३०२	वदन कामिनि रे वेकत जनु करिहह	११६
३५१	वदन चाँद तोर नयन चकोर	१३६
२८८	वदर सरिस कुच	११०
५७	वसन हरइते लाज दुर गेल	२२
२६७	वसन हरइते लाज दुर गेल	११४
४६	वसन्त रजनि रङ्गे	१८
१७५	वरिसए लागल गरजि पयोधर	६५
१८८	वरिसए लागल गरजि पयोधर	७०
२६४	वामा नअन फुरन आरम्भ	११३
२	वारिस जामिनि कोमल कामिनि	१
१३४	वारिस निसा मज्झे चलि अइलिहु	५०
३३३	विकट जटाचय किछु न लोक भय	१२६
३४६	विदिता देवी विदिता हो	१३४
१५१	विधि-वसे तुअ सङ्गम तेजल	५७

स

३५३	सखि हे आज जाएब मोहीं	१३७
३६६	सखि हे बालँभ जितब विदेसे	१४२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
६३	सगर संसारक सारे	२४
१५	सजल नलिनि–दल सेज सोआइअ	६
३५८	सपने आएल मझु पिअ पासे	१३६
२३८	सपने देखल हरि उपजल रङ्गे	९०
३०१	सपने देखल हरि	११५
१८५	सपनेहु न पुरले मन-लोभे	६६
११८	सबे सबतहु कह-सहले लहिअ	४४
१४३	सयन ठवा रहि पावे	५४
१०	सरदक चान्द सरिस मुख तोर रे	४
३५०	सरदक ससधर	१३६
६७	सरूप कथा कामिनि सुनू	२५
१३६	सरोवर घाट विकट सङ्कट	५१
३३३	ससन-परसें खसु	१२५
२६८	सहज सुन्दर लोचन	१०२
१३८	सहजहि आनन अछल अमूल	५२
३१५	सहज सीतल	१२१
२२९	सहजहि तनु खिनि माझ बेवि सनि	८७
१६९	साकर सूध दूधे परिपूरल	६३
२४८	साझक बेरि उगल नव शशधर	९४
२५१	साँझहि निज मकरन्द पिआए	९६
१९५	सामर सुन्दर अे बाटे आएल	७३
८३	सिनेह बढाओब हम छल भान	३०
३५४	सिरिहिं मिलल देहा	१३७
९४	सुखे न सुतलि कुसुम सयन	१९
३७	सुजन वचन हे जतने परिपालए	१५
९०	सुजन वचन हे षोटि न लाग	३२
२२१	सुनि सिरिखँड तरु ते मञे गमन करु	८४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
६४	सुपुरुस भाषा चौमुख वेद	२४
१३७	सुरत परिश्रम सरोवर तीर	५१
३१४	सुरभि निकुञ्ज वेदिभल भेलि	१२१
३२२	साँझक वेरौं जमुनाक तीराँ	१२४
२४०	सुरुज सिन्दुर विन्दु	९१
३४३	सुरुज सिन्दुर विन्दु	१३३
२७९	सूखल सर	१०६
३८	सून सङ्केत निकेतन आइलि	१५
१०८	से अति-नागर गोकुल कान्ह	४०
२८७	से अति नागर तजे रस सार	११०
४८	सेओल सामि सब-गुण-आगर	१९
२५	सेहे परदेस पर-जोषित-रसिआ	१०
१२२	सोलूह सहस गोपि महरानि	४५
२१७	सौरभ लोभे भमर भमि आएल	८२

ह

१६	हमरे वचने सखि सतत न जएबे	१४
१६६	हमे एकसरि पियतम नहि गाम	६२
८१	हमे युवती पति गेला हे विदेश	२९
१८४	हरि-पति-हित-रिपु-नन्दन-वैरि-वाहन	६९
९७	हरि-रव सुनि हरि गोभय-गोभरि	३५
१५३	हरि-रिपु-रिपु-प्रभु-तनय	५८
२२५	हरि-रिपु-रिपु-सुअ-अरि-बल-भूषण	८५
२७	हरि-रिपु-वरद-पए	११
२३०	हरि विसरल बाहर गेह	८७
२१०	हसि निहारल पलटि हेरि	७९
२६४	हसि निहारल पटलि हेरि	१००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतसंख्या	आदिम पद	पृष्ठसंख्या
१८३	हसु तारापति-रिपु-खण्डन कामिनि	६८
२०१	हास विलासिनि दसन देखिअ	७५
१६३	हिमकर हेरि अवनत कर आनन	६१
८५	हिम सम चान्दन आनी	३१
८८	हृदयक कपट भेल नहि जानि	३१
२०२	हृदयक हार भुअङ्गम भेल	७५
२४१	हृदयक कुसुम सम मधुरिम वानी	५३
१	हृदय तोहर जानि नहि भेला	१
२७३	हृदय तोहर जानि न भेला	१०४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः

विद्यापति-गीत-संग्रह

(१) मालवरागे

हृदय तोहर जानि नहि भेला। परक रतन आनि मन्हे देला ॥१॥
कएल माधव हमे अकाज। हाथि मेराउलि सिंह समाज ॥२॥
राखह माधव मोरि विनती। देहे परिहरि पर-युवती ॥३॥
चुम्बने नयन काजर गेला। दसने अधर खण्डित भेला ॥४॥
पीन पयोधर नख(रेख) मन्दा। जनि महेसर सरद(शेखर)चन्दा॥५॥
न मुख वचन न चित (रह) थीरे। काप घनहन सवे सरीरे ॥६॥
घर गुरुजन दु(र)जन शङ्का। गुनह (न) माधव मोहि कलङ्का ॥७॥
भने विद्यापति दूती भोरि। चेतन गोपए गुपुति (वेकत) चोरि ॥८॥

(२)

वारिस जामिनि कोमल कामिनि दारुण अति अन्धकार ॥१॥
पथ निशाचर सहसे सञ्चर घनतर पर जलधार ॥२॥
माधव प्रथम नेहे से भीती ॥३॥
गए अपनहि से अवलोकिअ करिअ तैसनि रीती ॥४॥
अति भयाउनि आतर जउनि कैसे कए आउति पार ॥५॥
सुरत-रस सुचेतन वालमु ता-पति सवे असार ॥६॥
एत गुनि मने विमुख सुमुखि तोह मने नहि लाज ॥७॥
कतए देखल मधु अपने जा मधुकर (केर) समाज ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३)

कतहु सुरभि(त) कतहु नवि मञ्जरी ॥१॥
कतहु कोकिल पञ्चम गावए समय गुने गुजरी ॥२॥
कतहु भमर भमि भमि कर मधु मकरन्द पान ॥३॥
कतहु सारस वासर जोरए गुपुत कुसुमवान ॥४॥
सुन्दरि नहि मनोरथ ओल ॥५॥
अपन वेदन जाहि निवेदओ तइसन मेदिनि थोल् ॥६॥
पिआ देसातर हृदय आतर पर(क) दुआरे समाद ॥७॥
काज विपरीत बुझए न पारिअ अपद हो अपवाद ॥८॥
पथिक(हु)दए (हम)समदए चाहिअ बाटे घाटे नहि आब ॥९॥
खने विसरिअ खने सुमरिअ थीर न थाकए भाव ॥ ०॥

(४)

जेहे अवयव पुरुव समय निचर विनु विकार ॥१॥
से आवे जाहु ताहु देखि झापए चिन्हिमि न वेवहार ॥२॥
कन्हा तुरित सुनसि आए० ॥३॥
रूप देख(इ)ते नयन भुलल सरूप तोरि दोहाए ॥४॥
सैसव बापु(र) वहीरि फेदाएल जौवने गहल पास ॥५॥
जेओ किछु धनि विरुह बोलए से सेओ सुधासम भास ॥६॥
जौवन सैसव खेदए लागल छाडि देहे मोर ठाम ॥७॥
एत दिन रस तोहे विरसल अवहु नहि विराम ॥८॥

(५)

तोहर वचन अमिञ ऐसन ते मति भुललि मोरि ॥१॥
कतए देखल भल मन्द होअ साधु न फाबए चोरि ॥२॥
साजनि आवे कि बोलब आओ ॥३॥
आगु गुनि जे काज न करए पाछे हो पचताओ ॥४॥
अपनि हानि जे कुल के(र) लाघव किछु न गुनल तबे ॥५॥
मन मनोरथ बानिहि लागल आओर गमाओल हमे ॥६॥
जतने कत न के न बेसाहए गुजा केदहु कीन ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परक वचन कुञ्ज धस देअ तैसन के मतिहीन ॥८॥
भमर भमर सबे केओ बोलए मञ्जे धनि जानल मोर ॥९॥
पढि गुनि हमे सबे (किछु) विसरल दोस नहि किछ तोर ॥१०॥

(६)

अविरल नयन गलए जलधार
नवजल विन्दु सहए के पार ॥ १ ॥
कुच दुहु उपर आननहि हेरु
चान्द राहु डरे चढल सुमेरु ॥ २ ॥
कि कहब सुन्दरि ताहेरि कहिनी
कहहि न पारिअ देखलि जहिनी ॥ ३ ॥
अनल अनिल वम मलयज वीख
जे छल सीतल से भेल तीख ॥ ४ ॥
चान्द सन्तावए सविताहु जीनि
नहि जीवन एक मत भेल तीनि ॥ ५ ॥
किछु उपचार न मानए आन
एहि वेआधि अथिक पचवान ॥ ६ ॥
तुअ दरसन विनु तिलाओ न जीव
जैअओ कलामति पीउख पीव ॥ ७ ॥

(७)

कंटक माझ कुसुम परगास ।
भमर विकल नहि पावए पास ॥ १ ॥
रसमति मालति पुनु पुनु देखि ।
पिबए चाह मधु जीव उपेखि ॥ २ ॥
भमरा विकल भमए सब ठाम ।
तोह विनु मालति नहि विसराम ॥ ३ ॥
ओ मधुजीवी तञ्जे मधुरासि ।
साँचि धरसि मधु तञ्जे न लजासि ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने मने धनि बुझ अवगाहि।
तोहर दुषन वध लागत काहि॥ ५॥

(८)

मञो सुधि पुरुब पेम भरे भोरि।
भान अछल पिआ आइति मोरि॥ १॥
जाइते पुछलहि भले ओ न मन्दा
मन वसि मनहि बढओलन्हि दन्दा॥ २॥
ए सखि सामि अकामिक गेला
जिवहु अराधन अपन न भेला॥ ३॥
सुपुरुस जानि कैइलि तुअ सेरी
पाओल पराभव अनुभव वेरी॥ ४॥
तिला एक लागि रहल अछि जीवे
(विनु) सिनेह वरए जनि दीवे॥ ५॥
चान्द-वदनि धनि झाखह जनू
तुअ गुण लुबुधि आओत पुनु कान्हू॥ ६॥

(९)

कत (न) अछ युवति कलामति आने
तोहि मानए जनि दोसरि पराने॥ १॥
तुअ दरसन विनु तिलाओ न जिवइ
दारुण मदन वेदन कत सहई॥ २॥
सुन सुन गुणमति पुनमति रमणी
न कर विलम्ब छोटि मधुर-जनी॥ ३॥
सामर अम्बर तनुक रङ्गा
तिमिर मिलओ ससि तुलित तरङ्गा॥ ४॥
सपुन सुधाकर आनन तोरा
पिउत अमिअ हसि चान्द चकोरा॥ ५॥

(१०)

सरदक चान्द सरिस मुख तोर रे
छाडल विरह अन्धारक दुख रे॥ १॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमिल मिलल अछ सुदृढ समाज रे
पुरुबक पुन परिणत भेल आज रे॥ २॥
हेरि हल सुन्दरि सुनहि वचन रे
परिहरि लाज सुलहि मन मोर रे॥ ३॥
रसमति मालति भल अवसर रे
पिवओ मधुर मधु भूषल भमर रे॥ ४॥
उपगत पाहोन रितुपति साह रे
अपनुक अङ्गिरल कर निरवाह रे॥ ५॥
सुपुरुषे पाओल सुमुखि सुनारि रे
दैवे मेराओल उचित विचारि रे॥ ६॥

(११)

जहि खने निअर गमन होअ मोर।
तहि खने कान्ह कुशल पुछ तोर॥ १॥
मन दिए बुझल तोहर अनुराग।
पुन-फले गुणमति पिआ मन जाग॥ २॥
पुनु पुछ पुनु पुछ मोर मुख हेरि।
कहिलिओ कहिनी कहबि कत बेरि॥ ३॥
आन बेरि अवसर चाल आन।
अपने रभसे कर कहिनी कान॥ ४॥
लुबुधल भमरा कि देव उपाम।
बाधल हरिण न छाडए ठाम॥ ५॥

(१२)

कतन जीवन सङ्कट परए कत न मीलए नीधि॥ १॥
उत्तिम तैअओ सत्य न छाडए भल मन्द कर बीधि॥ २॥
साजनि गए बुझावह कान्हू॥ ३॥
उचित बोलइते जे होअ से हो(अ) दैन न भाखह जनू॥ ४॥
जैसनि सम्पति तैसनि आसति पुरुब अइसन छला॥ ५॥
मोन बेचि यदि प्राण जे राषीअ ताते मरण भला॥ ६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१३)

कोकिल-कुल कलरव काहल बाहर बाजे
मञ्जरि कुज मधुकर गुजर से सुनि कुजर गाव ॥ १ ॥
मने मलान परान दिगन्तर गुनु (नु)काएल लाज ॥ २ ॥
विरहिनि-जन म(ा)रन कारन बेकत भउ विधुराज ॥ ३ ॥
सुन्दरि अबहु तेजिअ रोस ।
तु वर-कामिनि इ मधु यामिनि अपद न दिअ दोस ॥ ४ ॥
कमल चाहि कलेवर कोमल वेदन सहए न पार ॥ ५ ॥
चान्दन चन्द कुन्द तनु ताबए तावल मोतिम-हार ॥ ६ ॥
सिरिसि-कुसुम सेज ओछाओल तहु न आवए नीन्द ॥ ७ ॥
आकुल चिकुर चीर न समर(ह) सुमर(ह) देव गोविन्द ॥

(१४)

के मोरा जाएत दुरहुक दूर सहस सौतिनि वस माधुरपूर ॥१॥
अपनहि हाथ चलालि अछ नीधि जुग दश जपल आजे भेल सीधि॥२॥
भल भेल माइ हे कुदिवस गेल चान्द कुमुद दुहुं दरसन भेल ॥३॥
कतए दमोदर देव वनमालि कतएक हमे धनि गौर गोआरि ॥४॥
आजे अकामिक दुइ डिठि मेलि देव दहिन भेल हृदय उवेलि ॥५॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि कुदिवस रहए दिवस दुइ चारि ॥६॥

(१५)

सजल-नलिनि-दल सेज सोआइअ परसे जा असिलाए ॥ १ ॥
चान्दने नहि हित, चान्द विपरित, करब कओन उपाए ॥ २ ॥
साजनि सुदृढ कइए जान ॥ ३ ॥
तोहि विनु दिने दिने तनु खिन विरहे विमुख (भेल) कान्ह ॥ ४ ॥
कारनि वैदे निरसि तेजलि आन नहि उपचार ॥ ५ ॥
एहि बेआधि औषध तोहर अधर अमिअ (केर) धार ॥ ६ ॥

(१६)

मञ्चे सुधि पुरुब पेम भरे भोरी ।
भान अछल पिआ आइति मोरी ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाए खने पुछलन्हि भले ओ न मन्दा।
मन वसि मनहि वढओलन्हि दन्दा ॥ २ ॥
ए सखि सामि अकामिक गेला।
जिवहु अराधन अपन न भेला ॥ ३ ॥
सुपुरुष जानि कै(इ)लि तुअ सेरी।
पाओल पराभव अनुभवि वेरी ॥ ४ ॥
तिला एक लागि रहल अछि जीवे।
जनि अन्धार बरइ घर दीवे ॥ ५ ॥
सुख जनमातर सुरत (भेल) सपना।
सुन भेले नीन्द गुन दरसि अपना ॥ ६ ॥
ताहि सुपुरुसके कि बोलिबो आइ।
अनुसए पाओल वचन बडा इ ॥ ७ ॥
वचन रभस नहि सुख नहि हासे।
भागि ने विचए भऊ विलासे ॥ ८ ॥
हृदय न डरे बड हेतु जनाइ।
कओने परि सेओब निठुर कन्हाइ ॥ ९ ॥

(१७)

कुसुमे रचित सेजा, दीप रहल तेजा, परिमल अगर चन्दने ॥ १ ॥
जबे जबे तुअ मेरा, निफले बहलि वेरा, तबे तबे पीडलि मदने ॥ २ ॥
माधव तोरि राही वासकसजा ॥ ३ ॥
चरण-सबद (भाने), चौदिस आपए काने,
पिआ लोभे परिनति लजा ॥ ४ ॥
सुनिऊ सुजननामे, अवधि न चूकए ठामे, जनि वन पसेर लहरी ॥ ५ ॥
से तुअ गमन आसे, निन्द न आवए पासे, लोचन लागल देहरी ॥ ६ ॥

(१८)

आसा मन्दिर बैस निसि गमावए सुखे न सूत सयान ॥ १ ॥
जखने जतने जाहि निहारए ताहि ताहि तुअ भान ॥ २ ॥
वन उपवन कुज कुटीरहि सवहि तोर निरूप ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तोहि विनु (हरि) पुनु पुनु मुरुछए अइसन पेम सरूप ॥ ४ ॥
मालति सफल जीवन तोर ॥ ५ ॥
तोरे विरहे भूवन भमए भेल मधुकर भोर ॥ ६ ॥
जातकि केतकि कत न अछ(ए) कुसुम-रस समान ॥ ७ ॥
सपनहु (ओ) नहि काहु निहारए मधु कि करत पान ॥ ८ ॥
जकर हृदय (सखि) जतए रह(ट)ल धसि (से) पए ततहि जाए ॥९॥
जैअओ जतने बान्धि निरोधिअ निमन नीर समाए ॥ १० ॥

(१९)

पुरल पुर परिजन पिसुन जामिनि आध अन्धार ॥ १ ॥
बाहु पैरि हरि पलटि जाएव पुनु (हम) जमुना पार ॥ २ ॥
ञ कुले कुल-कलङ्क डराइअ ओ कुले आरति तोरि ॥ ३ ॥
पिरिति लागि पराभव सहिअ इथि अनुम(ति) मोरि ॥ ४ ॥
माधव तेज भुज-गीम-पास ॥ ५ ॥
जानब कन्ते दुरन्त के जाएत अछि होएत उपहास ॥ ६ ॥
एत बोलि मोर गोचर धरब राषबि दुअओ लाज ॥ ७ ॥
मला(न)हु मुह मलान न करव होएत पुनु समाज ॥ ८ ॥
जगत कतन जुव-जुव(ती) जन कत न लाबए पेम ॥ ९ ॥
वापु पुरुष विचेखन बोलिअ जे चिन्ह आएस हेम ॥१०॥
भालभु समन्दि चलु ससिमुखि कवि विद्यापति भान ॥११॥
निकृत नेह निमेषओ बहुत न इ छछ छैलओ जान ॥१२॥

(२०)

मोरि अविनय जत, पल्ल खेब्बोब तत ।
चिते सुमरवि मोरि नामे ॥ १ ॥
मोहि सनि अभागलि दोसरि जनु होअ ।
तन्हि सन पहु मिल काम (कामे) ॥ २ ॥
माधव मोरि सखि समन्दल सेवा ॥ ३ ॥
युवति-सहस सङ्गे सुख विलसव रङ्गे ।
हम जल - आजुरि देवा ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरुब पेम जत निते सुमरव तत ।
सुमर(व) जत न होअ सेखे ॥ ५ ॥
रहए सरिर जओ की न भुजिअ तओ ।
मिलए रमणि सत संखे ॥ ६ ॥
पेअसि समाद सुनिअे हरि विसमय ।
करु पाए ततहि बेरा ॥ ७ ॥
कवि भने विद्यापति रूपनराएन ।
लखिमा देवि सुसेना ॥ ८ ॥

(२१)

लाखे तरुअर कोटीहि लता जुवति कत न लेख ॥ १ ॥
सवहि फूला मधु मधुकर मधुहु मधु विशेष ॥ २ ॥
सुन्दरि अबहु वचन सून ॥ ३ ॥
सबे परिहरि तोहि इछ हरि आपु सराहसि पून ॥ ४ ॥
जे मधु भमर निन्दहु सुमर वासि विसरए न पार ॥ ५ ॥
एलि मधुकर जाहि उडि पल सेहे संसारक सार ॥ ६ ॥
तोरि सराहनि तोरिए चिन्ता सेजहु तोरिए ठाम ॥ ७ ॥
सपनेहु तोहि देखि पुनु कए लए उठ तोरिए नाम ॥ ८ ॥
आलिङ्गन दए पाछु निहारए तोहि विनु सुन कोर ॥ ९ ॥
पाछिलि कथा अकथ कथा लाजे न तेजए नोर ॥१०॥

(२२)

आदर अधिक काज न बन्ध माधव बुझल तोहर अनुबन्ध ॥१॥
आसा (अे) राखह नएन पठाए कति खन कौसले क (प)ट नुकाए ।
ए कान्हु ए कान्हु तोहे जे सयान ताके बोलिअ जे उचित न जान ॥३॥
कसिअ कसौटी चीन्हिअ हेम प्रकृति परेषिअ सुपुरुष पेम ॥४॥
सौरभे जानिअ कुसुम पराग नयने नीर दिअ नव अनुराग ॥५॥

(२३)

अगमने प्रेम गमने कुल जाएत ।
चिन्ता - पङ्क लागलि करिणी ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मञो अबला दह दिस भमि झाखञो ।
जनि व्याध - डरे भीरु हरिणी ॥ २ ॥
चन्दा दुरजन गमन विरोधक ।
उगल गगन भरि वैरि मोरा ॥ ३ ॥
कुहू - भरमे पथ पद आरोपल ।
आए तुलाएल पञ्चदशी ॥ ४ ॥
हरि अभिसार मार उदवेजक ।
कञोने निवारव कुगत ससी ॥ ५ ॥

(२४)

प्रथम प्रेम हरि जत बोलल आदर ओछ न भेल ॥ १ ॥
बोलल जनम भरि जे रहत दिने दिने (से) दुर गेल ॥ २ ॥
किदहु मोर अविनय पलुल की मोर दीघर मान ॥ ३ ॥
कि पर-पेअसि पिसुन वचन तथी पिआञे देल कान ॥ ४ ॥
साजनि माधव नहि गमार ॥ ५ ॥
पेमे पराभव बहुत पाओल करम(क) दोस हमार ॥ ६ ॥
बड बोलि हरि जतने सेओल सुरतरु सम (तनि) जानि ॥ ७ ॥
अनुभवे भेल कपट मन्दिर आवे की करब आनि ॥ ८ ॥
सुपहुक वचन रद-सम मो हिअ अखलुल भान ॥ ९ ॥
अपन भासा बोलि विसरए इथी (कि) बोलत आन ॥ १० ॥

(२५)

सेहे परदेस पर - जोषित - रसिआ
हमे धनि कुलमति नारि ॥ १ ॥
तन्हि पुनु कुशले आओब निज आलए
हम - जीव गेलाह मारि ॥ २ ॥
कहब पथिक पिआ मन दए रे
जौवन वले चलि जाए ॥ ३ ॥
जञो आविअ तञो सुइना आओब
जाओ विजयी रितुराज ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवधि बहुत हे रहत नहि जीवन
पलटि न होएत समाज ॥ ५ ॥
गेला नीर निरोधक की फल
अवसर बहला दान ॥ ६ ॥
जञो अपने नहि जानीआ रे
भल जन पुछब आन ॥ ७ ॥

(२६)

नवहरितिलक-वैरिसखयामिनि कामिनि कोमल कान्ती ॥ १ ॥
जमुनाजनक-तनयरिपु-घरिणी-सोदर-सुअकर साती ॥ २ ॥
माधव तुअ गुणे लुबुधलि रमणी ॥ ३ ॥
अनुदिने खिन तनु दनुज-दमन-धनि-भवनज-वाहनगमनी ॥ ४ ॥
दाहिनहरि-तह पाव पराभव एत सबे सह तुअ लागी ॥ ५ ॥
बेरि एक सर-सागर गुनि खाइति बधक होएब तोहे भागी ॥ ६ ॥
सारङ्ग-साद विषाद बढावए पिक-धुनि सुनि पचताबे ॥ ७ ॥
अदिति-तनय-भोअण-रुचि सुन्दर दसमि दशा लग आवे ॥ ८ ॥

(२७)

हरि-रिपु-वरद-पए-गृह-रिपु ताहर काल हे ॥ १ ॥
तासु भीमरुत-विरहे वेआकुल से सुनि हृदया साल रे ॥ २ ॥
सुन सुन्दरि तेज मान कुरु गमने ॥ ३ ॥
अनुदिने-तनु खिनि तुहिन नही जीनि तुअ दरसने ता जीवने ॥४॥
हरि-रिपु-असन ऐसन वर-गो जिम मुञ्चसि गो-व्रजमे गोविन्द ॥५॥
करे कपोल गहि सीदति सुन्दरि गोज मिलल ससिहि कला ॥६॥
हरि रिपु नन्द-प्रिआ-सहोदर नहि दे तिह्नी ता-सुअ कामिनी ॥७॥

(२८)

चान्द वदनि धनि चान्द उगत जबे ।
दुहूक उजोरे दुरहि सञो लखत सबे ॥ १ ॥
चल गज-गामिनि जावे तरुण तम ।
किम्बा कर अभिसारहिँ उपसम ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चान्द-वदनि धनि रयनि उजोरी ।
कओने परि गमन होएत सखि मोरी ॥ ३ ॥
तोहो परिजन परिमल दुरवार ।
दुर सओ दुरजने लखब अभिसार ॥ ४ ॥
चौदिस चकित नयन तोर देह ।
तोहि लए जाइते मोहि सन्देह ॥ ५ ॥
अगिरि अएलाहुँ पर-आएत काज ।
विफल भेले मोहि जाइते लाज ॥ ६ ॥

(२९)

जल्ओ जलधि मन्दा जहा वसे दारुण चन्दा ॥ १ ॥
वचन नहि के परमाने समय न सह पचवाने ॥ २ ॥
कामिनि पिआ विरहिनी केवल रहलि कहिनी ॥ ३ ॥
अवधि समापित भेला कइसे हरि वचन चुकला ॥ ४ ॥
निठुर पुरुष-पिरिती जिव दए सन्तर जुवती ॥ ५ ॥
निचल नयन-चकोरा ढरिए ढरिए पल नोरा ॥ ६ ॥
पथए रहओ हेरि हेरी पिआ गेल अवधि विसरी ॥ ७ ॥
विद्यापति कवि गावे पुन फले सुपुरुष की नहि पावे ॥ ८ ॥

(३०)

पुरुब जत अपुरुब भेला
समय वसे सेहओ दुर गेला ॥ १ ॥
काहि निवेदओ कुगत पहू
परम हो पर-रत ओ लहू ॥ २ ॥
तोहँहुँ मानवि ओ अभिमानी
परजना ओ वड भय हानी ॥ ३ ॥
हृदय - वेदन राखिअ गोए
जे किछु करिअ भुजिअ सोए ॥ ४ ॥
सवहि साजनि धैरज सार
नीरसि कह कवि कण्ठहार ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३१)

झटक झाटल छाडल ठाम
कएल महातरुतर विसराम ॥ १ ॥
ते जानल जिव रहत हमार
सेष डार टुटि पल्लल कपार ॥ २ ॥
चल चल माधव कि कहब जानि
सागर अछल थाह भेल पानि ॥ ३ ॥
हम जने अनओले की भेल काज
गुरुजन परिजने होएतउ हे लाज ॥ ४ ॥
हमरे वचने जे तोहहि विराम
फेकलओ चेप पाव पुनु ठाम ॥ ५ ॥

(३२)

अवयव सवहि नयन पए भास अहनिसि झाषए पाओव पास ॥१॥
लाजे न कहए हृदय अनुमान प्रेम अधिक लघु जानत आन ॥२॥
साजनि कि कहव तोर गेआन पानी पाए सीकर भेल कान्ह ॥३॥
बहिर होइआ नहि कहिअ समाद होएतौ हे सुमुखि पेम परमाद ॥४॥
जओ तन्हिके जीवने तोह काज गुरुजन-परिजन परिहर लाज ॥५॥
दण्ड दिवस दिवसहि हो मास मास पार गओ वर्षक पास ॥६॥
तोहर युडाइ तोहरे मान गेल रुआए केओ आन परान ॥७॥

(३३)

भागल कपोल अलके लेल साजि। सङ्कुचल नयन काजरे आँजि ॥१॥
पकला केश कुसुम कर वास। अधिक सिङ्गारे अधिक उपहास ॥२॥
आहा वएस कतए चलि गेल। बड उपताप देखि मोहि भेल ॥३॥
थोथल थैआ थन दुइ भेल। गरुअ नितम्ब सेहओ दुर गेल ॥४॥
जौवन सेष सुखाएल अङ्ग। पछेहलि लुलए उमत अनङ्ग ॥५॥

(३४)

तोहर हृदय कुलिस कठिन वचन अमिअ (केरि) धार ॥१॥
पहिलहि नहि बुझए पारल कपट के(र) वेवहार ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जत जत मन (अ)छल मनोरथ विपरित सवे भेल ॥३॥
आखि देखिइते कुपथ धसिलिहु आरति गौरव गेल ॥४॥
साजनि हमे कि बोलब आओ ॥ ५ ॥
आगु गुनि जे काज न करए पाछे हो पचताओ ॥६॥
उत्तिम जन वेवथा (जओ) छाडए निज वे(व)था चुक ॥७॥
कैसे कए से मुह देषावए पैसि पतारल कूप ॥८॥
अवे हमे तुअ सिनेह जान(ल) कओन उपमा देब ॥९॥
ए हरि चोचक खोन्धा अइसन किछु लबा लिषेव ॥१०॥

(३५)

एषने पावओ ताहि विधाता
ताहि बान्धि मेलओ अन्ध-कूप ॥ १ ॥
जकर नाह सुचेतन नही
ताके कके दिअ रूप ॥ २ ॥
ई रूप हमर वैरी भए गेल
देह बहुति विसाल ॥ ३ ॥
आनका ई रूप हिते पए होअए
हमर ई भेल काल ॥ ४ ॥
साजनि अवे कि पुछह सार
परदेस पर-रमनि-रतल
न आव कन्त हमार ॥ ५ ॥

(३६)

हमरे वचने सखि सतत न जएवे
तहु परिहरिहह राति ॥ १ ॥
पढल गुनल सुग विराडे खाएव
सब दिस होएत अकान्ति ॥ २ ॥
अनुविवर (सखि) हमर उपदेस ॥ ३ ॥
विरडा नाम जते दुषे सूनिब
हठे छाडब से देस ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारो आनि से चानके सोपलह
देषतहि अपनी आखि ॥ ५॥
सूध मासु हाडहिसञो खएलक
केवल पखिआ राखि ॥ ६॥
भमि भमि विरडा सवडि निहारए
डरे नहि करे उकासी ॥ ७॥
दही दुधहु सञो षएलक
गिरिहथ पलल उपासी ॥८।

(३७)

सुजन वचन हे जतने परिपालए कुलमति राषए गारि ॥ १ ॥
से पहु वरिसे विदेस गमाओत जञो की होइति वर-नारि ॥ २ ॥
कन्हाइ पुनु पुनु सुभ-धनि समदि पठाओल
अवधि समापलि आए ॥ ३ ॥
साहर मुकुलित (कर) कोलाहल पिक भमर करए मधु-पान ॥ ४ ॥
ऋतु जामिनि हे कैसे कए गमाउति तोह विनु तेजति परान ॥ ५ ॥
कुच-रुचि दुर गेल देह अति खिन भेल नयने गरए जलधार ॥ ६ ॥
विरह पयोधि काम नाव तहि आस धरए कडहार ॥ ७ ॥

(३८)

सून सङ्केत निकेतन आइलि सुमुखि विमुखि भेलि ॥ १ ॥
मन मनोरथ वानी लागलि रजनि निफले गेलि ॥ २ ॥
सुन सुन (हे) हरि राही परिहरि की फल पाओल तोहे ॥ ३ ॥
उचित छाडि(कहुं) अनुचित करसि गेले न करिअ कोहे ॥ ४ ॥
वारि सरसि नरी सब धारा धरि जलधर कोपि ॥ ५ ॥
तरुण तिमिर दिग न जानए (पद) अहिसिर गए रोपि ॥ ६ ॥

(३९)

रभसहितह वोललन्हि मुख कान्ति ।
पुलकित तनु मोर कत धर भान्ति ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आनन्द - नोरे नयन भरि गेल।
पेम - आकुर अङ्कुर भेल ॥ २ ॥
भेटल मधुर-पति सपने मो आज।
तखनुक कहिनी कहइते लाज ॥ ३ ॥
जखने हरल हरि आंचर मोर।
रस-भरे ससरु कसनी भोर ॥ ४ ॥
करे कुच-मण्डल रहलिहुँ गोए।
कमले कनक-गिरि झापि न होए ॥ ५ ॥

(४०)

बान्धल हीर अजरल ए हेम।
सागर तह हे गहिर छल पेम ॥ १ ॥
ओ डभकल ई गेल सुखाए।
नाह-वलाह मोहे भरि जाए ॥ २ ॥
ए सखि एतवा मागवो तोहि।
मोरेहु अएले रखिहिसि मोहि ॥ ३ ॥
आरति दरसहु बोलित(थि) राति।
से सवे सुमरि जीवका साति ॥ ४ ॥
जल थल घर बाहर सम नेह।
आरसि कए मोर देखितह देह ॥ ५ ॥
गत परान गेले होअ लाज।
भल नहि अनुवद सुपहु समाज ॥ ६ ॥
मालति मधु मधुकर ले पोछि।
मान ओ करति पहु अइसनि ओछि ॥ ७ ॥
भनइ विद्यापति कवि-कण्ठहार।
कवहुँ न होअए जाति-व्यभिचार ॥ ८ ॥

(४१)

पहिलहि सरस पयोधर कुम्भ।
आरति कतन करए परिरम्भ ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधर-सुधारस दरसए लोभ।
राङ्कक हाथ रतन नहि सोभ ॥ २ ॥
साजनि की कहब कहइते लाज।
कान्हक आइति पललुह आज ॥ ३ ॥
नीवी ससरि कृतए दहु गेलि।
अपनाहु आग अनाइति भेलि ॥ ४ ॥
करतल तले (जाँति) धरिअ कुच गोए।
पलले तलित झापि नहि होए ॥ ५ ॥
भनइ विद्याप(ति) न कर सन्देह।
मधुतह सुन्दरि मधुर सिनेह ॥ ६ ॥

(४२)

नयनक नीर चरण-तल गेल।
थलहुक कमल अम्भोरुह भेल ॥ १ ॥
अधर अरुण निमिष नहि होए।
किसलय सिसिरे छाडि हलु धोए ॥ २ ॥
ससि-मुखि-नोरे ओल नहि होए।
तुअ अनुराग शिथिल सब कोए ॥ ३ ॥

(४३)

गगन मडल दुहुक भूखन एकसर उग चन्दा ॥ १ ॥
गए चकोरी अमिञे पीवए कुमुदिनि सानन्दा ॥ २ ॥
मालति काञिञे करिअ रोस ॥ ३ ॥
एकल भमर बहुत कुसुम (रम) कमन ताहेरि दोस ॥ ४ ॥
जातकि केतकि नवि पदुमिनि सब सम अनुराग ॥ ५ ॥
ताहि अवसर तोहि न विसर(ए) एहे तोर बड भाग ॥ ६ ॥
अभिनव रस रभस पञोले कमन रह विवेक ॥ ७ ॥
भने विद्यापति पर-हित कर (जे) तैसन हरि पए एक ॥ ८ ॥

(४४)

बडि जुडि ए कुतुकक छाहरि ठामे ठामे वस गाम ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमे एकसरि पिआ देसान्तर नही (रह) दुरजन नाम ॥ २ ॥
पथिक एथा लेहे विसराम ॥ ३ ॥
जत वेसाहब कीछु न महघ सवे मिल एहि ठाम ॥ ४ ॥
सासु नही घर पर परिजन (नहि) ननद सहज भोरि ॥ ५ ॥
एतहु अथिक विमुख जाएब अवे अनाइति मोरि ॥ ६ ॥
भने विद्यापति सुन तञे जुवति जे पुर परक आस ॥ ७ ॥

(४५)

उगमल जग भम काहु न कुसुम रम
परिमल कर परिहार ॥ १ ॥
जकरि जतए रीति ते विनु नही थिति
नेह न विषय विचार ॥ २ ॥
मालति तोहि विनु भमर सदन्द ॥ ३ ॥
बहुत कुसुम वन सवही विरत-मन
कतहुं न पिव मकरन्द ॥ ४ ॥
विमल कमल-मधु सुधा सरिस विधु
नेह न मधुप विदार ॥ ५ ॥
हृदय सरिस जन न देषिअ जति षन
तति षन सयर अन्धार ॥ ६ ॥

(४६)

वसन्त रजनि रङ्गे पलटि खेपलि सङ्गे
परम रभस पिआ गेल कही ॥ १ ॥
कोकिल पञ्चम गाव तैअओ न सुवन्धु आव
उत्तिम वचन व्यभिचर नही ॥ २ ॥
साए साए उगलि वेवथा अवधि न अएले कन्ता ।
(नहि भल परजन्ता) ॥ ३ ॥
मो-पति पछिमे सुर उगि गेला
साहर मजर दिसा चान्दे उजरि निसा
(तरुतर मधुकर पसरला) ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(४७)

गुण अगुण सम कए मानए भेद न जानए पहू ॥ १ ॥
निज चतुरिम कत सिखाउबि हमहुं भेलिहु लहू ॥ २ ॥
साजनि हृदय कहञो तोहि ॥ ३ ॥
जगत भरल नागर अछए विहि छललिहु मोहि ॥ ४ ॥
काम-कला-रस कत सिखाउबि पुब पछिम न(हि) जान ॥ ५ ॥
रभस वेरा निन्दे वेआकुल किछु न ताहि गेआन ॥ ६ ॥

(४८)

सेओल सामि सब गुण आगर सदय सुदृढ नेह ॥ १ ॥
तहुं सबे सबे रतन पावए निन्दहु मोहि सन्देह ॥ २ ॥
पुरुष वचन हो अवधान ॥ ३ ॥
एसन नहि एहि महि-मण्डल जे पर-वेदन जान ॥ ४ ॥
नहि हित-मित कोउ बुझावए लाख-कोटी तोहे सामी ॥ ५ ॥
सवक आसा तोहे पुरावह हम विसरह काञी ॥ ६ ॥

(४९)

सुखे न सुतलि कुसुम-सयन नयने मुञ्चसि वारि ॥ १ ॥
तहा की धरब पुरुष दूषण जहा अहसनि नारि ॥ २ ॥
राही हठे न तोलिअ नेह ॥ ३ ॥
कान्ह सरीर दिने दिने दूबर तोराहु जीव सन्देह ॥ ४ ॥
परक वचन हित न(हि) मानसि बुझसि न सुरत(क) तन्त ॥ ५ ॥
मने तञो जञो मौन करिअ चोरि आनए कन्त ॥ ६ ॥
किछु किछु पिआ आसा दीहह अति न करब कोप ॥ ७ ॥
अधिके जतने वचन बोलब सङ्गम करब गोप ॥ ८ ॥
नव अनुरागे किछु होएबा रह दिन दुइ तिनि चारि ॥ ९ ॥
प्रथम प्रेम ओल धरि राखए सेहे कलामति नारि ॥ १० ॥

(५०)

दिने दिने बाढए सुपुरुष नेहा
अनुदिने जैसन चान्दक रेहा ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जे छल आदर त(क)रहुँ आधे
आओर होएत की पछिलाहुँ बाधे ॥ २ ॥
विधि-वसे यदि होअ अनुगति-बाधे
तैअओ सुपहु नहि धर अपराधे ॥ ३ ॥
पुरत मनोरथ कत छल साधे
आवे कि पुछह सखि सब भेल बाधे ॥ ४ ॥
सुरतरु सेओल अभि(मत) लागी
तसु दूषण नहि हमहि अभागी ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति सुनहु सयानी
आओत मधुर-पति तुअ गुण जानी ॥ ६ ॥

(५१)

गुरुजन कहि दुरजन सओ वारि कौतुके कुन्द करसि फुल धालि ॥१॥
कैतवे वारि सखीजन-सङ्ग अह-अभिसार दूर रति-रङ्ग ॥२॥
ए सखि वचन करहि अवधान रति कि करति आरति समधान ॥३॥
अन्ध-कूप-सम रयनि विलास चोरक मन जनि वसए तरास ॥४॥
हरषित होए लङ्काके राए नागर की करत नागरि पाए ॥५॥

(५२)

बालि बिलासिनि जतने आनलि रमन करब राषि ॥ १ ॥
जैसे मधुकर कुसुम न तोल(ए) मधु पिब मुख माषि ॥ २ ॥
माधव करब तैसनि मेरा ॥ ३ ॥
विनु हकारेओ सुनिकेतन आबए दोसरि वेला ॥ ४ ॥
सिरिसि-कुसुम-कोमल ओ धनि तोहहु कोमल कान्ह ॥ ५ ॥
इङ्गित उपर केलि जे करब जे न पराभव जान ॥ ६ ॥
दिने दिने दून पेम बढाओब जैसे बाढ सिसु ससी ॥ ७ ॥
कौतुकहु किछु वाम न बोलब निअर जाउवि हसी ॥ ८ ॥

(५३)

जनम होअए जनु जओ पुनु होई
जुवती भए जनमए जनु कोई ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होइह जुवति जनु हो रसमन्ती
रसओ बुझए जनु हो कुलमन्ती ॥ २ ॥
निधन मागओ विहि एक पए तोही
थिरता दिहह अवसानहु मोही ॥ ३ ॥
मिलि(ह) सामि नागर रस-धारा
पर-वस जनु हो हमर पिआरा ॥ ४ ॥
होइह पर-वस बुझिह विचारि
पाए विचार हार कओन नारि ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति अछ परकारे
दन्द समुद होएत जीव दए पारे ॥ ६ ॥

(५४)

पञ्च-वदन हर भसमे धवला तीनि नयन एक वरए अनला ॥ १ ॥
दुखे बोलए भवानी जगत-भिषारि मिलल हम सामी ॥ २ ॥
विसधर भूषण दिग परिधाना विनु वित्ते इसर नाम उगना ॥ ३ ॥
भनइ विद्यापति सुनह भवानी हर नहि निधन जगत(केर) सामी॥४॥

(५५)

नदी (सतत) वह नयन क नीर पललि रहए (सखि से) तहि तीर ॥१॥
सब खन (तकर) भरम गेआन आन पुछिअ (हम ओ) कह आन ॥२॥
माधव अनुदिने खिनि भेलि राही चौदसि चान्दहु चाही ॥ ३ ॥
केओ सखी रहलि उपेषि केओ सिर धुन धनि देषि ॥ ४ ॥
केओ कर सासक आस मओ धउलिहु तुअ पास ॥ ५ ॥
विद्यापति कवि भानि एत सुनि सारङ्ग-पानि ॥ ६ ॥
हरषि चलल हरि गेह सुमरिए पुरुब सिनेह ॥ ७ ॥

(५६) मालवरागे, घनछीरागे

बुझहि न पारलि परिणति तोरि
अधरेओ ललए वाट टकटोरि ॥ १ ॥
फल पाओल कए तोह सनि सीट
कएलह हाडी वासक वीट ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मञ्चे जानलि अनुरागिनि मोरि
ओल् धरि रहति हृदय संग चोरि ॥ ३ ॥
निरजन जानि कएल तुअ कान
गुपुत रहल नही जानत आन ॥ ४ ॥
सबतहु भेटी कएलह बोल
दुरजन-वचने बजओलह ढोल ॥ ५ ॥
विद्यापति ता - जीवन - सार
जे पर-दोस लुकावए पार ॥ ६ ॥

(५७) धनछीरागे

वसन हरइते लाज दुर गेल पिअाक कलेवर अम्बर भेल ॥ १ ॥
अोघे मुहे निहारए दीब मुदला कमल भमर मधु पीब ॥ २ ॥
मनमथ-चातक नही लजाए बड उनमसिअो अवसर पाए ॥ ३ ॥
से सबे सुमरि मनहु की लाज जत सबे विपरित तन्हिकर काज ॥४॥
हृदयक धाधस धसमसि मोहि आओर कहब की कहिनी तोहि ॥ ५ ॥

(५८)

परतह परदेस परहिक आस
विमुख न करिअ अवस दिअ वास ॥ १ ॥
एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा ॥ २ ।'
भल-मन्द ननन्द हे मने अनुमानि
पथिकके न बोलिअ टूटलि वाणि ॥ ३ ॥
चरण-पखालन आसन दान
मधुरहु वचने करिअ समधान ॥ ४ ॥
ए सखि अनुचित एते दुर जाइ
आओर करिअ जत अधिक बडाई ॥ ५ ॥

(५९)

जलद वरिस घन दिवस अन्धार
रयणि-भरमे हमे साजु अभिसार ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आसुर-करमे सफल भेल काज
जलदहि राखल दुहु दिस लाज ॥ २ ॥
मञे कि बोलव सखि अपन गेआन
हाथिक चोरि दिवस परमान ॥ ३ ॥
मञे दूती मति मोर हरास
दिवसहु के जा निआ-पिआ-पास ॥ ४ ॥
आरति तोरि कुसुम-रस-रङ्ग
अति जीवने देखिअ अति सङ्ग ॥ ५ ॥
दूती-वचने सुमुखि भेल लाज
दिवस अएलाहु पर-पुरुष-समाज ॥ ६ ॥

(६०)

लहु कए बोललह गुरुतर भार
दुत्तर रजनि दूर अभिसार ॥ १ ॥
बाट भुअङ्गम उपर पानि ।
दुहु कुल अपजस अङ्गिरल जानि ॥ २ ॥
तोरे बोले दूती तेजल निज-गेह
जिवसञो तौलल गरुअ सिनेह ॥ ३ ॥
दसमि दसाहे बोलब की तोहि
अमिआ बोलि विष देलए मोहि ॥ ४ ॥
पर-निधि हरलए साहस तोर
के जान कओन गति करबए मोर ॥ ५ ॥

(६१)

जहिआ कान्ह देल तोहि आनि मने पाओल भेल चौगुन बानि ॥१॥
आवे दिने दिने पेम भेल थोल कए अपराध बोलब कत बोल ॥२॥
आवे तोहि सुन्दरि मने नहि लाज हाथक काकन अरसी काज ॥३॥
पुरुष(क) चञ्चल सहज स्वभाव कए मधु पान दहओ दिस धाव ॥४॥
एकहि बेरि तञे दूर कर आस कूप न आवए पथिकक पास ॥५॥
गेले मान अधिक होअ सङ्ग बड कए की उपजाओब रङ्ग ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(६२)

प्रथमहि अलक तिलक लेब साजि काजरे चञ्चल लोचन आजि ॥१॥
वसने जाएब हे आग सबे गोए दुरहि बरते अरथित होए ॥२॥
सुन्दरि प्रथमहि रहब लजाए कुटिले नयने देब मदन जगाए ॥३॥
झापब कुच दरसाओब आध खने मुहढ करब निवि-बान्ध ॥४॥
मान कइए दरसाओब भाव रस राखब ते पुनु पुनु आव ॥५॥
सुन्दरि मञे कि सिखओविसि आओर रङ्ग अपनहि गुरु भए कहत अनङ्ग ॥६॥

(६३)

सगर ससारक सारे अछए सुरत-रस हमर पसारे ॥१॥
छुइ जनु हलह कन्हाइ आरति मान न हलिअ नडाई ॥२॥
दुरहि रहओ मोरि सेवा पहिल पढओक उधारि न देवा ॥३॥
हृदय-हार मोर देषी लोभे निकट नहि होएव विशेषी ॥४॥
मिलत उचित परिपाटी मधथ मनोज घरहि घर साटी ॥५॥
विद्यापति कह नारि हरिसओ कैसन रोक उधारी ॥६॥

(६४)

सु-पुरुस-भाषा चौमुख वेद एत दिन बुझल अछल नहि भेद ॥१॥
से तहि अछ सब मन जाग तोह बोलि विसरल हमर अभाग ॥२॥
चल चल माधव कि कहब जानि समय-दोसे आगि वम पानि ॥३॥
रयनिक (बन्ध)व दुर जा चन्द भल जन हृदय तेजए नहि मन्द ॥४॥
कलियुग गतिके साधु मन भङ्ग सबे विपरीत करब अनङ्ग ॥५॥

(६५)

अपनहि नागरि अपनहि दूत
से अभिसार न(हि) जान बहूत ॥१॥
की फल तेसर कान जनाए
आनव नागर नयने बझाए ॥२॥
ए सखि रखिहिसि अपनुक लाज
परक दुआरे करह जनु काज ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परक दुआरे करिअ जञो काज
अनुदिने अनुखने पाइअ लाज ॥४॥
दुहु दिस एकसञो होइक विरोध
तकरा बजइते कतए निरोध ॥५॥

(६६)

दरसने लोचन दीघर धाव दिनमणि तेजि कमल जनि जाव ॥ १ ॥
कुमुदिनि चान्द मिलल सहवास कपटे नुकाविअ मदन विकाश ॥ २ ॥
साजनि माधव देखल आज महिमा छाडि पलाएल लाज ॥ ३ ॥
नीवी ससरि भूमि पलि् गेलि देह नुकाविअ देहक सेरि ॥ ४ ॥
अपनेञो हृदय बुझावए आन एकसर सब दिस देखिअ कान्ह ॥ ५ ॥

(६७)

सरूप कथा कामिनि सुनु परेरि आगे कहह जनु ॥ १ ॥
तञे अति नीठुरि ओ अनुरागी सगरि निसि गमावए जागी ॥ २ ॥
एरे राधे जानि न जान तोरे विरहे विमुख कान्ह ॥ ३ ॥
तोरिए चिन्ता तोरिए नाम तोरि(ए) कहिनी कहए सब ठाम ॥ ४ ॥
आओर की कहब सिनेह तोर सुमरि सुमरि नयन (भर) नोर ॥ ५ ॥
निते से आवए नीते से जाए हेरइते हसइते से न लजाए ॥ ६ ॥
न पिन्ध कुसुम न बान्ध केस सबहि सुनाव तोर उपदेस ॥ ७ ॥

(६८)

अपना मन्दिर बैसलि अछलिहु घर नहि दोसर केरा ॥ १ ॥
तहि खने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा ॥ २ ॥
के जान कि बोलति पिसुन परौसिनि बचनक भेल अवकासे ॥ ३ ॥
धर अन्धारा निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने ॥ ४ ॥
कञोनक कहब हम के पतिआएत जगत विदित पचवाने ॥ ५ ॥

(६९)

दुरजन-वचन लहए सब ठाम
बुझल न रहए जावे परिनाम ॥ १ ॥
ततहि दुर जा जतहि विचार
दीप देले नहि रह घर अन्धार ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुर वचने सखि कहब मुरारि
सुपहु रोस कर दोस विचारि ॥ ३ ॥
से नागरि तोहे गुण(क) निधान
अलपहि माने बहुत अभिमान ॥ ४ ॥
कके विसरलि हे पुरुब परिपाटी
लागलि लतिका की फल काटी ॥ ५ ॥

(७०)

कूपक पानि अधिक होअ काढी नागर-गुणे नागरि रति बाढी ॥१॥
कोकिल कानन आनिअ सार वर्षा दादुर करए विहार ॥ २ ॥
अह-निसि साजनि परिहर रोस तअे नहि जानसि तोहरे दोस ॥ ३ ॥
छव ओ बारह मासक मेलि नागर चाहए रङ्गहि केलि ॥ ४ ॥
ते परि तकर ओ परि(नाम) के वसु बोल जनु होए विरा(म) ॥ ५ ॥
मोरे बोले (सखि) दूर कर रोस हृदय फुजी कर हरि परितोस ॥ ६ ॥

(७१)

ओ पर-बालभु तअे पर-नारि
हमे पए दुहुं दिस भेलिहु आरि ॥ १ ॥
तोह-हुनि दरसन इ हम लाग
तत कए सुमुखि जैसन तोर भाग ॥ २ ॥
अभिसारिनि तअे सुभ-कर साज
ततमत करइते न होअए काज ॥ ३ ॥
काजके कारणे आगुके आह
अपन अपन भल सबकेओ चाह ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति दूती से
इम नारी मेलि करावए जे ॥ ५ ॥

(७२)

उचित वएस मोर मनमथ चोर चेलिआ बुढिआ करए अगोर ॥ १ ॥
बारह वरष अवधि कए गेल चारि वर्ष तन्हि गेला भेल ॥ २ ॥
वास चाहइते पथिकहु लाज सासु ननन्द नहि अछए समाज ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सात पाच घर तन्हि सजि देल पिआ देसान्तर आतर भेल ॥ ४ ॥
पलङ ओस वास जोएन-सत भेल थाने थाने अवयव सवे गेल ॥ ५ ॥
साछ नुकाविअ तिमिरक सीन्धि पलङसिन देअए फलकी बान्धि ॥६॥
मोरा मन हे खनहि खन भाग गमन गोपब कत मनमथ जाग ॥ ७ ॥

(७३)

ततहि धाओल दुहु लोचन रे जेहि पथे गेलि वरनारि।
आसा-लुबुधल न तेजए रे कृपणक पाछु भिषारि ॥ १ ॥
सहजहि आनन सुन्दर रे भौह निवि(लि)त आखि।
पङ्कज मधुकर मधु पिबि रे उडए पसारलि पाखि ॥ २ ॥
आजे देखलि धनि जाइते रे रूप रहल मन लागि।
रूप लागल मन धाओल रे कुच कञ्चन-गिरि-सान्धि ॥ ३ ॥
ते अपराधे मनोभव रे ततए धएल जनि बान्धि ॥ ४ ॥
विद्यापति कवि गाविह रे गुण बुझ रसिक सुजान ॥ ५ ॥
राजाहुँ रूप नराएण रे लखिमा देवि रमान ॥ ६ ॥

(७४)

दरसन लागिं पुजए नित काम
अनुषन जपए तोहरि पए नाम ॥ १ ॥
अवधि समापल मास अषाढ
अवे दिने दिने हे जीवन भेल गाढ ॥ २ ॥
कहव समाद बालभु सखि मोर
सवतह समय जलद बड घोर ॥ ३ ॥
एके अबला हे कुपुत पञ्चवान
मरम लखिए कर सर-सन्धान ॥ ४ ॥
तुअ गुण बान्धल अछए परान
पर वेदन देखि पर नहि जान ॥ ५ ॥

(७५)

गगन भरल मेघ उठलि धरनि थेथे पचसरे हिअ गेल सालि।
जैअओ से देह-खिन जिउति आजुक दिन के जान की होइति कालि॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कन्हाइ अबहु बिसर सबे रोस ।
पुरुष लाख एक लखबा पारिअ नारिक चारिम दोस ॥ २ ॥
कोपे कुगुति सबे समदि पठावथि दूती कहि से गेली।
ते असित तिथि सामर पख ससि तइसनि दसा मोरि भेली ॥ ३ ॥
की हमे साँझ क एकसरि तारा भादव चौठिक चन्दा।
अइसन कए पिआबे मुख मोल्ल मो पति जीवन मन्दा ॥ ४ ॥

(७६)

बोललि बोल उत्तिम पए राख नीच-सबद जन की नहि भाख ॥१॥
हमे उत्तिम-कुल गुणमति नारि एतबा निअ-मने हलब विचारि ॥२॥
सिनेह बढाओल सुपुरुस जानि (दिने) दिने कएलह आसा हानि ॥३॥
कतन जगत अछि रसमति फूल मालति मधु मधुकर पए भूल ॥४॥
गेल दिन पुनु प(ल)टि न आव अवसर बहला रह पचताव ॥५॥

(७७)

त्रिवली अछ(लि) तरङ्गिणि भेलि जनि बढिहाए उपटि चलि गेलि ॥१॥
नेआसब्बो हे उ(प)र चल धाए कनक भूधर गेल दहाए ॥२॥
माधव सुन्दरि नयनक वारि पीन पयोधर (चलु) वन झारि ॥३॥
सहजहि सङ्कट पर-वस पेम पातक भीत परापति जेम ॥४॥
तोहरि पिरिति रीति दुर गेलि कुलसब्बो कुलमति कुलटा भेलि ॥५॥

(७८)

आध नयन दए तहुकर आध
कत रे सहब मनसिज अपराध ॥ १ ॥
कालागि सुन्दरि दरसन भेल
जेओ छल जीवन सेओ दुर गेल ॥ २ ॥
हरि हरि कब्बोन कएल हमे पाप
जे सबे सुखद ताहितह ताप ॥ ३ ॥
सब दिस कामिनि दरसन जाए
तइअओ बेआधि विरह अधिकाए ॥ ४ ॥
कब्बोनक कहब मेदिनि से थोल्
सिव सिव एहि जनम भेल ओल ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(७९)

एके मधु-यामिनि सुपुरुष-सङ्ग आइति न करिअ आसा-भङ्ग ॥ १ ॥
मन्ने कि सिखाउबि तोहहि अबोध अपन काज होअ पर-अनुरोध ॥२॥
चल चल सुन्दरि चल अभिसार अवसर लाख लहए उपकार ॥ ३ ॥
तरतमे नहि किछु सम्भव काज आसा दए तोह मने नहि लाज ॥ ४ ॥
पिआ गुण-गाहक तञे गुण-गेह सुपुरुष-वचन पषानक रेह ॥ ५ ॥

(८०)

प्रथम समागम भुषल अनङ्ग
धनि रस राषि करब रति–रङ्ग ॥१॥
लोभ न करबे आइति पाए
बडेओ भुषल नहि दुइ करे खाए ॥२॥
चेतन कान्ह तोहहि जदि आथि
के नहि जान महते नव हाथि ॥३॥
आनलि जतने अधिके अनुरोधि
पहिलहि सबहि हलबि परबोधि ॥४॥
हठे न क(रिअ र)ति परिपाटी
कोमल कामिनि विघटति साटी ॥५॥
जाबे रभस रह ताबे विलास
विमति बुझिअ जने न जाएब पास ॥६॥
परिहरि कबहु धरबि नहि बाहु
उगिलि चान्द तम गीलए राहु ॥७॥

(८१)

हमे युवती पति गेला हे विदेश ।
लग नहि वसए पलउसिहु लेश ॥ १ ॥
सासु ननद किछुअओ ननि जान
आँखि रतै(ा)धी सुनए न कान ॥ २ ॥
जागह पथिक जाह जनु भोर
राति अन्धार गाम बड चोर ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सपनेहु भाओर न दे(अ) कोटवार
पओलहु लोते न करए विचार ॥ ४ ॥
नृप इथि काहु करए नहि साति
पुरुष महते रह सरब सजाति ॥ ५ ॥

(८२)

पछा सुनिअ भेलि महादेइ कनके लावे ओ कान ॥ १ ॥
गगन परसि रह समीरन सूपभरि के आन ॥ २ ॥
सुन्दरि अवे की देखह देह ॥ ३ ॥
विनु हटबइ अरथ-विहुन जैसन हाटक गेह ॥ ४ ॥
अपथ पथ परिचय भेले वसि दिन दुइ चारि ॥ ५ ॥
सुरत-रस खन एके पाविअ जाव जीव रह गारि ॥ ६ ॥

(८३)

सिनेह बढाओब हम छल भान
तोहर सोआधीन करब परान ॥ १ ॥
बहुल बुझओलह निच-वेवहार
मोहि पति सवे परजन्तक खार ॥ २ ॥
भल भेल मालति तोहहि उदास
पुनु मधुकरे न आओब तुअ पास ॥ ३ ॥
जत अनुराग भेल सवे राग
तोहरा की वोलव हमर अभाग ॥ ४ ॥

(८४)

टाट टुटले आङ्गन वेकत सवे परदा राष ॥ १ ॥
टुना चटक बाज-सओ रेसल दूती अइसन भाष ॥ २ ॥
साजनि तेजसि वचन-रोध ॥ ३ ॥
टाकु सन हिअ सोझे करसि मानसि वाङ्क विरोध ॥ ४ ॥
टेना चढल बकहुल देषल अँधेअ पोसल आनि ॥ ५ ॥
आवे दिने दिने तैसन कएलह बाघ-महिसा-कानि ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(८५)

हिम सम चान्दन आनी उपर पौरि उपचरिअ सआनी ॥ १ ॥
तैअओ न जा(ए) तसु आधि वाहर औषध भितर बेआधि ॥ २ ॥
अबहु हेरह (ह)रि मोहे जीउति जुवति जस पाओव तोहे ॥ ३ ॥
अवधि अधिक दिन लेखी मुद(ल) नयन मुख-वचन उपेषी ॥ ४ ॥
कण्ठ ठमाएल जीवे राति न वसि मिझाएल दीवे ॥ ५ ॥

(८६)

बाट भुअङ्गम उपर पानि
दुहु कुल अपजस अङ्गिरल आनि ॥ १ ॥
पर-निधि हरलए साहस तोर
के जान कओन गति करबए मोर ॥ २ ॥
तोरे बोले दुती तेजल निज गेह
जीव-सओ तौलल गरुअ सिनेह ॥ ३ ॥
लहु कए कहलह गुरु वड भा(र)
सुदभर रजनी दुर अभिसार ॥ ४ ॥
दसमि दसाहे बोलव की तोहि
अमिअ बोलि विष देलए मोहि ॥ ५ ॥

(८७)

कण्टक-माझ कुसुम परगास भमर विकल नहि पावए पास ॥ १ ॥
रसमति मालति पुनु पुनु देषि पिवए चाह मधु जीव उपेषि ॥
ओ मधु-जीवी तअ मधु-रासि साँचि धरसि मधु तओ न लजासि ॥ ३ ॥
भमरा भमए कत(क)हु ठाम तोह विनु मालति नहि विसराम ॥ ४ ॥
अपने मने धनि बुझ अवगाहि तोहर दुषण वध लागत काहि ॥ ५ ॥

(८८)

हृदयक कपट भेल नहि - जानि
पर-पेअसि हे देल हमे आनि ॥ १ ॥
सुपुरुष-वचन समय वेवहार
खत खरिआ दए सीचसि खार ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आबे हमे कान्ह बोलब की बोल
हाथक रतन हराएल मोर ॥ ३ ॥
कके परतारलि नागरि नारि
वचन-कौसल-छले देव मुरारि ॥ ४ ॥
पलटि पठावह तन्हिके ठाम
केओ जनु माधव वसए कुगाम ॥ ५ ॥
हरि अनुरागी तठमा जाह
से आवे अपन मनोरथ चाह ॥ ६ ॥
लघु कहिनी भल कहइते आन
देले पाइअ के नहि जान ॥ ७ ॥

(८६)

वचन अमिअ सम मने अनुमानि
निरव अएलाहु तुअ सुपरुष जानि ॥ १ ॥
तसु परिणति किछु कहहि न जाए
सूति रहल पहु दीप मिझाए ॥ २ ॥
ए सखि पहु अवलेप सही
कुलिस अइसन हिअ फाट नही ॥ ३ ॥
करे-जुगे परसि जगाओल भाव
तइअओ न तेज पहु नीन्द सभाव ॥ ४ ॥
हाथ झपाए रहल मुह लाए
जगइते निन्द गेल न होअ जगाए ॥ ५ ॥

(९०)

सुजन वचन हे षोटि न लाग
जनि दिढ कठु-आलक दाग ॥ १ ॥
झुठा बोल चकमक आभ
देषिअ सुनिअ एते लाभ ॥ २ ॥
मानिनि मने न गुणहि आन
गुण बुझ जओ हो गुणमान ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुपुरुषसञो की कए कोप
ओहञो कान्ह जदु-कुल-गोप ॥ ४ ॥
अति पवितर अति थिक गाए
सेहञो पुनु (थिक) बरदक माए ॥ ५ ॥

(९१)

अहनिसि वचने जुडओलह कान अचिरे रहत सुख ई भेल भान ॥१॥
अवे दिने दिने हे बुझल विपरीत लाज गमाए विकल भेल चीत ॥२॥
विहिक विरोधे मन्दासञो भेट भाँडो छुइल नहि भरले पेट ॥३॥
लोभे करिअ हे मन्द जत काम से न सफल होअ जञो विहि वाम ॥४॥

(९२)

आकुल चिकुर वेढल मुख-सोभ
राहु कएल ससि-मण्डल लोभ ॥१॥
उभरल चिकुर माल कर रङ्ग
जनि जमुना-जल गाङ्ग-तरङ्ग ॥ २ ॥
वड अपरुब दुहु चेतन-मेलि
विपरित रति कामिनि कर केलि ॥३॥
वदन सोहाञोन सम-जल-विन्दु
मदने मोति दएँ पूजल इन्दु ॥४॥
पिआ-मुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज
चान्द अधोमुख पिबए सरोज ॥५॥
कुच विपरीत विलम्बित हार
कनक कलस जनि दूधक धार ॥६॥
किङ्किनि रणित नितम्बहि छाज
मदन-महासिधि बाजन बाज ॥७॥

(९३)

बदन झपावए घन कत भार
चान्द-मडल जनि मिलए अन्धार ॥१॥
लम्बित सोभए हार विलोल
मुदित मनोभव खेल हिडोल ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

पिअतम अभिमत मने अवधारि
रति विपरीत रतलि वरनारि ॥३॥
माल-किङ्किनि कर मधुर विराव
जनि जएतुङ्ग भनोभव राज ॥४॥
रभसे निहारि अधर-मधु पीब
नाञी कुसुम-सर आकठ जीव ॥५॥

(९४)

घटक विहि विधाता जानि
काचे काञ्चने छाडलि हानि ॥१॥
कुच सिरिफल सञ्जा पूरि
कुन्दि बैसाओल (कनक) कटोरि ॥ २ ॥
रूप कि कहब मञे विसेषि
गए निरूपि(अ) झटिति देषि ॥३॥
नयन नलिन सम विकास
चान्दहु तेजल विरह-भास ॥४॥
दिने रजनी हेरए बाट
जनि हरिणी विछुरलि बाट ॥५॥

(९५)

आसा खण्डह दए विसवास
के जग जीवए तीनि पचास ॥१॥
आनक बोलिअ गोप गमार
तोहरा सहजक कुल वेवहार ॥ २ ॥
तोह यदुनन्दन कि बोलिबो जानि
धन्धहि सङ्ग सरूपसञो कानि ॥३॥
सुपुरुष-पेम हेम अनुमानि
मन्दा कालहि मन्दे हानि ॥४॥
आओर बोलब कत बोलइते लाज
फल उपभोगीअ जैसन काज ॥५॥
सुन्दरि बचने कान्ह उपताप ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(९६)

के बोल पेम अमिअके धार
अनुभवे बुझिअ गवउ अङ्गार ॥१॥
खएले विष सखि हो परकार
वड मारष ओ दषितहि मार ॥ २ ॥
एत सवे सजलह हमरा लागि
तूरे वेढि घर खोसलि आगि ॥३॥
तजे ओठ-पातरि कि बोलिवो तोहि
वड कए अपथ चलओलए मोहि ॥४॥
तोरा करम धरम पए साखि
मन्दिउ खाए पलउसिनि राखि ॥५॥

(९७)

हरि-रव सुनि हरि गोभय गोभरि
गोतम-गोरि लोटाई रे ॥ १ ॥
हरि-रिपु-रिपु-मुख-विदिस वसन देअ
गो-दिसे विदेसे बै(ा)राइ रे ॥ २ ॥
ए हरि जदि तोहे पर-वस
पेमे विरत-रस
वचन दए राखिअ राही रे ॥ ३ ॥
कुम्भ-तनय-भोजन-सुत सुन्दरि
मुख वसि अवनत भेला रे ॥ ४ ॥
सास समीर बाज जनि भुजगी
हरि बिनु मुहहु न बोल रे ॥ ५ ॥
समन्दल ससि-मुखि सात वरन लेखि
तेसरा पद दिढ जानि रे ॥ ६ ॥
राजा सिवसिंह रूपनराएण
विद्यापति कवि वाणि रे ॥ ७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

(९८)

इन्दु से इन्दु इन्दु हर इन्दुत आओर इन्दु जन परगासे ॥ १ ॥
एक इन्दु हमे ं म गगनहि देषल तीनि इन्दु तुअ पासे ॥ २ ॥
कालि देषल हम अदबुद रङ्गे मझु मन लागल दन्दा ॥ ३ ॥
कओनके कहब हमे के पतिआएत एक ठाम अछ (एत) चन्दा ॥ ४ ॥
कओनओ इन्दु तारा कओनेओ इन्दु तरुणी कओने इन्दु चक्र-समाजे ॥५॥
एक से इन्दु माधव सओ खेलएं एक इन्दु गगनेरि माझे ॥ ६ ॥

(९९)

कर-तल-लीन सोभए मुख-चन्द
किसलय मिलु अभिनव अरविन्द ॥ १ ॥
कि कहति ससि-मुखि कि पुछसि आन
विनु अपराधे विमुख भेल कान्ह ॥ २ ॥
अह-निसि नयने गलए जल-धार
खञ्जने गिलिउल्ल मोतिम हार ॥ ३ ॥
विरहे विखिन तनु भेल हरास
कुसुम सुखाएं रहल अछ वास ॥ ४ ॥
झषइते संसय पल्ल परान
अवहु न उपसम कर पचवान ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति दूती गोए
(विनु) परसे परहित नहि होए ॥ ६ ॥

(१००)

जावे न मालति क(र) (पर)गास तावे न ताहि मधु(कर) विलास ॥ १ ॥
लोभ परिहरि सूनहि राँक धके कि कतहु (केओ) डूब विपाक ॥ २ ॥
तेज मधुकर ए अनुबन्ध कोमल-कमल लीन मकरन्द ॥ ३ ॥
एखने ईछसि अहेन सङ्ग ओ अति सैसवे न बुझ(ए) रङ्ग ॥ ४ ॥
कर(ह) मधुकर दिढ गेआँन अपने आरति न मिल आन ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१०१)

जओ डिठिका ओल एइ मति तोरि
पुनु हेरसि हो खा परि गोरि ॥ १ ॥
(जाति-सभाव) हठए पर-नाह
बाघ-मिता न जीवे पए आह ॥ २ ॥
अइसना सुमुखि करिअ कके रोस
मज्ञे कि बोलिवो सखि तो(ह)रे दोस ॥३॥
अहेने अवयवे ई वेवहार
पर-पीडाए जीवन थिक छार ॥ ४ ॥
भल कए सिषलसि घुरि संसार
तर सूते गढि काट कुम्भार ॥ ५ ॥
गुण जओ रह गुणनिधिसओ सङ्ग
विद्यापति कह इ बड रङ्ग ॥ ६ ॥

(१०२)

चान्द गगन रह आओर तारागण सुर उगए परचारि ॥ १ ॥
निचल सुमेरु अथिक कनकाचल आनब कओने परचारि ॥ २ ॥
कन्हाइ नयनहुँ हलब निवारि ॥ ३ ॥
जे अनुपम (फल) उपभोगे न आओत की फल ताहि निहारि ॥ ४ ॥
जे चुरु कए साएर सोषए जीवए सुरासुर मारि ॥ ५ ॥
जल-थल पाए समहि सम पेलए (की फल ताहि) परचारि ॥ ६ ॥
दूती व्याज जाहि जे फावए पाहन हीरा लाग ॥ ७ ॥

(१०३)

अपनेहि पेम तरुअर बाढल कारण किछु नहि भेला ॥ १ ॥
साखा पल्लव कुसुमे वेआपल सौरभ दह दिस गेला ॥ २ ॥
सखि हे दुरजन दुरनय पाए ॥ ३ ॥
मूरा जओ मूडहिसओ भागल अपदहि गेल सुखाए ॥ ४ ॥
कुलक धरम पहिलहि अलिआतल कओने देब पलटाए ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चोर-जननि जओ मने मने झाखओ रोओ वदन झपाए ॥ ६ ॥
अइसना देह-नेह न सोहावए बाहर वम जनि आगि ॥ ७ ॥
विद्यापति कह अपनहि आउति सिरिसिवसिंह लागि ॥ ८ ॥

(१०४)

पहिलहि परसए करे कुच-कुम्भ
अधर पिबए के कर आरम्भ ॥ १ ॥
तखनुक मदन पुलके भरि पूज
नीवी-बन्ध विनु फोएले फूज ॥ २ ॥
ए सखि लाजे कहब की तोहि
कान्हक कथा पुछह जनु मोहि ॥ ३ ॥
धम्मिल भार हार अरुझाव
पीन पयोधर नख कत लाव ॥ ४ ॥
वाहु-वलय आकम भरे भाग
अपनि आइति नहि अपना आङ्ग ॥ ५ ॥

(१०५)

ताके निवेदिअ जे मतिमान
जलहि गुण-फल के नहि जान ॥ १ ॥
तोरे वचने कएल परिछेद
कौआ मूह न भनिअए वेद ॥ २ ॥
तोहे वहुवल्लभ हमहि अज्ञानि
तकराहु कुलक धरम भेलि हानि ॥ ३ ॥
कएल गतागत तोहरा लागि
सहजहि रयणि गमाउलि जागि ॥ ४ ॥
धन्ध बन्ध सफल भेल काज
मोहि आवे तन्हिकी कहिनी लाज ॥ ५ ॥
दूती-वचन सवहि भेल सार
विद्यापति कह कवि-कठहार ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१०६)

आलसे अरुण लोचन तोर
अमिञे मातल चन्द चकोर ॥ १ ॥
निचल भौँहँ न ले(अ) विसराम
रण जीनि धनु तेजल (जनि) काम ॥ २ ॥
एरे राधे न कर लथा
उकुति गुपुत वेकत कथा ॥ ३ ॥
कुच सिरीफल सहज सिरी
केसु विकशित कनक-गिरी ॥ ४ ॥
अलक वहल उधसु केस
हसि पलिछल कामे सन्देस ॥ ५ ॥

(१०७)

जति जति घमिअ अनल
अधिक विमल हेम ॥ १ ॥
रभस कोप कए कहु नागर
अधिक करए पेम ॥ २ ॥
साजनि मने न करिअ रोस ॥ ३ ॥
आरति जे किछ बोलए
वालभु तेँ नहि तन्हिक दोस ॥ ४ ॥
कतन तुअ अनाइति दरसि
कत कए(ल) नहि दीव ॥ ५ ॥
ओ नहि अनङ्ग अथिक भुजङ्ग
पवन पीबि जे जीव ॥ ६ ॥
सरस कवि विद्यापति गाओल
रस नहि अवसान ॥ ७ ॥
राजा सिवसिंह रूपनाराएन
लखिमादेवि रमान ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१०८)

से अति-नागर गोकुल कान्ह
नगरहु नागरि तोहि सवे जान ॥ १ ॥
कत वेरि साजनि की कहब बुझाए
कएले धन्धे धरम दुर जाए ॥ २ ॥
सुन्दरि रूप गुणहुसओ सार
आदि अन्त नहि महघ पसार ॥ ३ ॥
सरूप निरूपि बुझउलिसि तोहि
जनु परतारि पठावसि मोहि ॥ ४ ॥
विद्यापति कह बुझ रसमन्त
सिरिसिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥ ५ ॥

(१०९)

कोटि कोटि देल तुलना हेम
हीरासओ हे हरदि भेल पेम ॥ १ ॥
अति परिमसने पिअर (भेल) रङ्ग
मुख-मण्डल केवल रहु सङ्ग ॥ २ ॥
साजनि की कहब कहहि न जाए
भलेओ मन्द होअ अवसर पाए ॥ ३ ॥
नवल वात छल पहिलुक मोह
किछु दिन गेले भेल पनिसोह ॥ ४ ॥
अबे नहि रहले निछछेओ पानि
कारि न सहे कि करव जानि ॥ ५ ॥
कपट बुझाए बढओलन्हि दन्द
वडाक हृदय बडेओ हो मन्द ॥ ६ ॥

(११०)

से अतिनागर तञे सव-सार
पसरओ मल्ली पेम-पसार ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जौवन-नगरि वेसाहब रूप
ततें मुलइह जते सरूप ।. २ ॥
साजनि रे हरि रस-वनिजार
गोप-भरमे जनु बोलह गमार ॥ ३ ॥
विधि-वसे अधिक करह जनु मान
सोरह-सहस-गोपी-पति कान्ह ॥ ४ ॥
तोह-हुनि उचित रहत नहि भेद
मनमथ मधथे करव परिछेद ॥ ५ ॥

(१११)

मालति-मधु मधुकर कर पान
सुपुरुष जओ हो गुणक निधान ॥ १ ॥
अबुझ न बुझए भलाहु बोल मन्द
भेँभ न पिबए कुसुम मकरन्द ॥ २ ॥
ए सखि कि कहव अपनुक दन्द
सपनेहु जनु हो कुपुरुष-सङ्ग ॥ ३ ॥
दूधे पटाइअ सीचीअ नीत
सहज न तेज करइला तीत ॥ ४ ॥
कते जतने उपजाइअ गून
कहल न बुझए हृदयक सून ॥ ५ ॥
मन्दा रतन-भेद नहि जान
बान्दर मूह न सोभए पान ॥ ६ ॥

(११२)

आसा दइए उपेखह आज
हृदय विचारह कओनक लाज ॥ १ ॥
हमे अबला थिक अलप-गेँआन
तोहर छैलपन निन्दत आन ॥ २ ॥
सुपहु जानि हमे सेओल पाओ
आबे मोर प्राण रहओ कि जाओ ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कएल विचारि अमिअके पान
होएत हलाहल ई के जान ॥ ४ ॥
कतहु न सुनले अइसन बात
साङ्कर खाइते भाङ्गए दात ॥ ५ ॥

(११३)

प्रथमहि कएलह नयनक मेलि
आसा देलह हसि कहु हेरि ॥ १ ॥
ते हमे आज अएलाहु तुअ पास
वचने तोहे अति भेलिहे उदास ॥ २ ॥
साजनि तोहर सिनेह भल भेल
पहिला चुम्बन कि(अए) दुर गेल ॥ ३ ॥
आबहु करिअ रस परिहरि लाज
अङ्गिरल ऋण(तह) छडावह आज ॥ ४ ॥
अपना वचन नही परकार
जे अगिरिअ से देलहि नितार ॥ ५ ॥

(११४)

तोरा अधर अमिअे लेल वास
भल जन नेओतल दिअ विसवास ॥१॥
अमर होइअ यदि कएले पान
की जीवन जओ ख(ि)एडत मान ॥२॥
नागरि करब एकर गए झाट
दिवसक भोजने वर्ष न आट ॥३॥
वथु उपजाए करिअ जे काज
जे नहि जेमअे तकरा लाज ॥४॥
तअे नहि करबए पर-मुह सून
पर-उपकारे परम हो पून ॥ ५ ॥

(११५)

जलधि मागए रतन भँडार
चान्द अमिअ दे सब रस-सार ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नागर जे होअ कि करत चाहि
जकरा जे रह से दे(अ) ताहि ॥ २ ॥
साजनि कि कहव अपन गे आन
पर-अनुरोधे कतए रह मान ॥ ३ ॥
विनु पओले तकराहु दुर जाए
दुहु दिस पाए अनुताप जनाए ॥ ४ ॥
पओले अमर होए दहु कोए
काठ कठिन कुलिसहु सत होए ॥ ५ ॥

(११६)

कुच-कोरी-फल नख-खत-रेह
नव-ससि छन्दे अङ्कुरल नव-नेह ॥ १ ॥
जिव जओ जनि निरधने निधि पाए
षने हेरए षने राष झांपाए ॥ २ ॥
नवि अभिसारिणि प्रथमक सङ्ग
पुलकित होए सुमरि रति-रङ्ग ॥ ३ ॥
गुरुजन-परिजन-नयन निवारि
हाथ रतन धरि वदन निहारि ॥ ४ ॥
अवनत मुख कर पर जनु देख
अधर दरस खत निवरि निरेखि ॥ ५ ॥

(११७)

तोहे कुल-ठाकुर हमे कुल-नारि
अधिपक अनुचिते किछु न गोहारि ॥ १ ॥
पिसुने हसब पुनु माथ डोलाए
वडाक कहिनी बड़ि दुर जाए ॥ २ ॥
सुन सुन साजनि वचन हमार
अपद न अगिरिअ अपजस भार ॥ ३ ॥
परतह परतिति आबिअ पास
बड बोलि हमहु कएल विसवास ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से आवे मने गुनि भल नहि काज
बाजू राषए आँखिक लाज ॥ ५ ॥

(११८)

सबे सबतहु कह सहले लहिअ
जिव जओ जतने जोगओले रहिअ ॥ १ ॥
परसि हलह जनु पिसुनक बोल
सुपुरुष पेम जीव रह ओल ॥ २ ॥
मओ सपनेहु नहि सुम(र)ओ देओ
अइसन पेम तोलि्हल जनु केओ ॥ ३ ॥
रहिअ लुकओले अपना गेह
खडकौसले टुटि जाएत सिनेह ॥ ४ ॥
विमुख बुझाए न करिअए बोल
मुख-सुखे धेङुर काट पटोर ॥ ५ ॥

(११९)

अथम सिरीफल गरब गमओलह ।
जे गुण-गाहक आवे ॥ १ ॥
गेल जौवन पुनु पलटि न आबए
किछु दिन जा पचतावे ॥ २ ॥
सुन्दरि मोरे बोलब करब अवधाने ॥ ३ ॥
तोह सनि नारि दोसरि हमे अछलिहुँ
अइसन उपजु हम भाने ॥ ४ ॥
जौवन-सिरी तावे रह सुन्दरि
जावे मदन अधिकारी ॥ ५ ॥
दिन दस गेले छाडि पलाएत
सकल जगत परचारी ॥ ६ ॥
विद्यापति कह जुवति-लाख लह
पल् न पयोधर तूले ॥ ७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दि ने दिने आवे तैसनि होएबह
घोसिनीघोरक मूले ॥ ८ ॥

(१२०)

जावे सरस पिआ बोलए हसी तावे से बालमु तञे पेअसी ॥ १ ॥
जञो पए बोलए बोल निठूर तञो पुनु सकल पेम जा दूर ॥ २ ॥
ए सखि (किं कहबि) अपुरुब रीती कबहु न देखिअ अइसनि पिरीती ॥
जे पिआ मानए दोसरि परान तकराहु वचन अइसन अभिमान ॥ ४ ॥
तैसन सिनेह जे थिर उपताप के नहि वस हो मधुर अलाप ॥ ५ ॥
हठे परिहर निज दोसहि जानि हसि न बोलह मधुरिम दुइ बानि ॥६॥
सुरत निठुर मिलि भजसि न नाह का लागि बढावसि पिसुन उछाह ॥

(१२१)

अवधि बहिए हे अधिक दिन भेल
बालमु पर-रत परदेश भेल ॥ १ ॥
कञोने परि खेपब वसन्तक राति
जानल पुरुष निठुर थी(क) जाति ॥ २ ॥
साजनि आवे मोर अइसन गेँ आन
जीवनचाहि मरण भेल भान ॥ ३ ॥
कलिजुग एहे अथिक परमाद
दुरजन दुरनए बोल अपवाद ॥ ४ ॥
ते हमे एहे हलल अवधारि
पुरुष विहुनि जीवए जनु नारि ॥ ५ ॥
सुन्दर कह सब धैरज सार
तेज(ह) उपताप होएत परकार ॥ ६ ॥

(१२२)

सोलह सहस गोपि महरावि
पाट-महादेवि करबि हे आनि ॥ १ ॥
बोलि पठओलन्हि जत अतिरेक
उचितहुँ न रहल तन्हिक विवेक ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

साजनि की कहब कान्ह परोष
बोलि न करिअ बडाकाँ दोष ॥ ३ ॥
अब नित मति यदि हरलन्हि मोरि
जनला चोरे करब की चोरि ॥ ४ ॥
पुरबापरे नागरका बोल
दूती-मति पाओल गए ओल ॥ ५ ॥

(१२३)

गाए चरावए गोकुल वास गोपक सङ्गम कर परिहास ॥ १ ॥
अपनहु गोप गरुअ की काज गुपुतहु बोलसि मोहि बडि लाज ॥ २ ॥
साजनि बोलह कान्हसओ मेलि गोपवधूसओ जन्हिका केलि ॥ ३ ॥
गामक वसले बोलिअ गमार नगरहु नागर बोलिअ असार ॥ ४ ॥
बस वथान झालि दुह गाए तन्हि की विलसव नागरि पाए ॥ ५ ॥

(१२४)

चरित-चातुर चिते वेआकुल मोर मोर अनुबन्धे ॥ १ ॥
पूत-कलत्त-सहोदर-बन्धव सेष दसा सब धन्धे ॥ २ ॥
ए हर गोसाञे नाह मो जनु देह उपेषि ॥ ३ ॥
जम आगा मूह उत्तर डर छाडत जवे बुझाओत लेखी ॥ ४ ॥
अपथ पथ चरण चलाओल भगति मति न देला ॥ ५ ॥
पर-धन-धनि मानस लाओल मिथ्या जनम दुर गेल ॥ ६ ॥
कपट पलु कलेवर गीडल मदन-गोहे ॥ ७ ॥
भल-मन्द हमे किछु न गूनल समय बहल मोहे ॥ ८ ॥
कएल मञे उचित भेल अनुचित आवे मन पचतावे ॥ ९ ॥
आबे की करब सीर पए धूनब गेल दीन नहि आवे ॥ १० ॥
भने विद्यापति सून महेसर तैलोक आन न देवा ॥ ११ ॥
चन्दनदेवि-पति वैद्यनाथ गति चरण सरण मोहि देवा ॥ १२ ॥

(१२५)

लुबुधल नयन निरलि रहु ठाम
भरमहु कबहु लेब नहि नाम ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने अपन करब अवधान।
जओ परिचारिअ तओ पर जान ॥ २ ॥
एरे नागरि मन दए सून
जे रस जान तकर बड पून ॥ ३ ॥
जइअओ हृदय रह मिलिए समाज
अधिकेओ रह रजुधि भए लाज ॥ ४ ॥
कठे घटी अनुगत केम
नागर नखत हृदय गत पेम ॥ ५ ॥

(१२६)

तुलित लागि फुलल अरविन्द
भूषल भमरा पिब मकरन्द ॥ २ ॥
अविरल खत नख-मण्डल भास
से सुनि कोकिल भने भउ हास ॥ २ ॥
ए रे मानिनि पलटि निहार
अरुण पिवए लागल अन्धकार ॥ ३ ॥
मानिनि मान महध धन तोर
चोरावए अएलाहु अनुचित मोर ॥ ४ ॥
ते अपराधे मोर पँचवान
धनि धर हरि कए राष परान ॥ ५ ॥

(१२७)

कत-खन वचन-विलासे
सुपुरुष राखिअ आसा-पासे ॥ १ ॥
आवे हमे गेलिहु फेदाइ
अथिरक आतर मधथ लजाई ॥ २ ॥
बोलि विसरलह रामा
सखि असबौलिहे कह कत ठामा ॥ ३ ॥
पर-विपते न रह रङ्गे
कुसुमित कानन मधुकर-सङ्गे ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय खेपसि (निफले) कति भाँति
बडि छोटि भेलि मधुमासक राति ॥ ५ ॥

(१२८)

तोर साजनि पहिल[1] पसार
हमरे वचने करिअ वेवहार ॥ १ ॥
अमिअक सागर अधरक पास
पओले नागरे करब गरास ॥ २ ॥
लहु लहु कहिनी कहब बुझाए
पिउत कुगआ गोमुख लाए ॥ ३ ॥
पहिल पढओक भलाके हाथ
ते उपहस नहि गोपी साथ ॥ ४ ॥
मन्दा काज मन्दे कर रोस
भल पओलेहि अलपहि कर तोस ॥ ५ ॥

(१२९)

अवधि बढओलन्हि पुछिहह कान्ह जीवहुतह हे गरुअ छल मान ॥१॥
भलाहुक वचन मन्द आवे लाग कुम्भी-जल हे भेल अनुराग ॥२॥
साजनि कि कहब टुटल समाद परक दरब हो परसओ वाद । ३॥
ओहि धन्ध भेलि आसा-हानि कत पतिआएब झूठी वाणि ॥४॥
बहलि पेन्द टेढ सम बोल कत एक नागर आओ चौछोल ॥५॥
बिरहक बोलए नागरि बोल विद्यापति (कवि) कहए अमोल ॥६॥

(१३०)

खेत कएल रखवारे लूटल
ठाकुर-सेवा भोर ॥ १ ॥
बनिजा कएल(हु) लाभ नहि पओले
अलप निकट भेल थोल ॥ २ ॥
रामधन वनिजहु वेज अछ ए) लाभ अनेक ॥ ३ ॥
मोती-मजीठ-कनक हमे बनिजल
पोसल मनमथ चोर ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जोषि-परेषि मनहि हमे निरसल
धन्ध लागल मन मोर ॥ ५ ॥
ई संसार हाट कए मानह
सबो नेक बनिजए आर ॥ ६ ॥
जो जस बनिजए लाभ तस पावए
मुरष मरहि गमार ॥ ७ ॥
विद्यापति कह सुनह महाजन
राम-भगति अछि लाभ ॥ ८ ॥

(१३१)

जलधर-अम्बर-रुचि परिहाउलि
सेत-सारङ्ग कर वामा ॥ १ ॥
सारङ्ग-वदन दाहिन कर मण्डित
सारङ्ग-गति चलु रामा ॥ २ ॥
माधव तोरे बोले आनलि राही ॥ ३ ॥
सारङ्ग-भास-पाससञो आनलि
तुरित पठावह ताही ॥ ४ ॥
शम्भु-धरणि-वेरि आनि मेराउलि
हरि-सुत-सुत-धुनि भेला ॥ ५ ॥
अरुणक जोति तिमिर पिडि उगल
चान्द मलिन भए गेला ॥ ६ ॥

आसावरीरागे

(१३२)

जौवन-रतन अछल दिन-चारि
तावे से आदर कएल मुरारि ॥ १ ॥
आबे भेल झाल कुसुम-रस छूछ
वारि-विहुन सर केओ नहि पूछ ॥ २ ॥
हमरिओ विनति कहब सखि गोए
सुपुरुष-सिनेह अन्त नहि होए ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाबे से धन रह अपना हाथ
ताबे से आदर कर सङ्ग साथ ॥ ४ ॥
धनिकक आदर सबका होए
निरधन बापुल् पुछ नहि कोए ॥ ५ ॥

(१३३)

जाबे रहिअ तुअ लोचन आगे
ताबे बुझावह् दिढ अनुरागे ॥ १ ॥
नयन ओत भेले सबे किछु आन
कपट हेम धर कति षन बान ॥ २ ॥
बुझल मधुर-पति भलि तुअ रीति
हृदय कपट मुखे करह पिरीति ॥ ३ ॥
विनय-वचन यत रस-परिहास
अनुभवे बुझल हमे सेओ परिहास ॥ ४ ॥
हसि हसि करह कि सब परिहार
मधु-विषे माषल सर परहार ॥ ५ ॥

(१३४)

वारिस-निसा मञ्जे चलि अइलुहु सुन्दर मन्दिर तोर ॥ १ ॥
कत अहि मही देहे दमसल चरणे तिमिर घोर ॥ २ ॥
निज-सखि-मुख सुनि सुनि कहु बसि पेम तोहार ॥ ३ ॥
हमे अबला सहए न पारल पचसर-परहार ॥ ४ ॥
नागर मोहि मने अनुताप ॥ ५ ॥
कएलाहु साहस सिद्धि न पाविअ अइसन हमर (भेल) पाप ॥६॥
तोह् सन पहु गुन(क) निकेतन कएल मोर निकार ॥ ७ ॥
हमहुँ नागरि सबे सिषाउबि जनि कर (केओ) अभिसार ॥८॥
केलि कुतुहल दुरहि रहओ दरसनहुँ (भेल) सन्देह ॥ ९ ॥
जामिनि चारिम पहर पाओल वरु जाओ निज गेह ॥१०॥
मोरिओ सहस सहचरि जानति होइति ई बडि साति ॥११॥
विहि निकारुण परम दारुण मरओ हृदय फाटी ॥ १२ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१३५)

दहए बुलिए बुलि भमरि करुणा कर आहा दइ आई की भेल ॥ १ ॥
कोर सुतल पिआ, आन्तरो न देह हिआ, के जानँ कओन दिग गेल ॥२॥
अबे कैसे जीउब मओ रे सुमरि वालभु नव-नेह ॥३॥
एकहि मन्दिर वसि, पिआ न पुछए हसि, मोरे लेखे समुदक पार ॥४॥
इ दुई जौवना तरुण-लाख लह से आवे परस गमार ॥५॥
पट सुति बुनि बुनि, मोति-सरि किनि-किनि, मोरे पिआओ गाथल हार ॥
लाख लिखि तन्हि हम (ह)रवा गाथल से आवे तोलत गमार ॥७॥
अरे रे पथिक भइआ समाद लए जइहह जाहि देस वस मोर नाह ॥८॥
हमर से दुख-सुख तन्हि पिआ कहिहह सुन्दरि समाइलि वाह ॥९॥
भनइ विद्यापति अरे रे जुवति अवे चिते करह उछाह ॥१०॥
राजासिवसिंह रूपनाराएन लखिमादेवि-वरनाह ॥११॥

मलारीरागे

(१३६)

सरोवर-घाट विकट संकट तह हेरहि न पारले आगु ॥१॥
साङ्कलि वाट उवटि चलि भेलिहु ते कुच कण्टक लागु ॥२॥
ननन्द हे सरूप निरूपिअ रोस ॥३॥
विनु विचारे बिहुचार बुझओलह सासु करओलह रोस ॥४॥
कौतुके कमल नालसओ तोल्ल करए चाहल अवतंस ॥५॥
रोषे कोषसओ मधुकर धाओल तेहि अधर करु दंस ॥६॥
गरुअ कुम्भ सिर थिर नहि थाकए ते उधसल केस-पास ॥७॥
आतप दोसे रोसे चलि अइलिहु खरतर भेल निसास ॥८॥
वेकत विलास कओने तव छापव विद्यापतिकवि-भान ॥९॥
राजासिवसिंहरूप नराएन लखिमा-देवि-रमान ॥१०॥

(१३७)

सुरत-परिश्रम सरोवर-तीर
सुरु अरुणोदय सिसिर समीर ॥१॥
मधुनिसा वेर ए धनि भेलि नीन्द
पुछिओ न गेले मोहि निठुर गोविन्द ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाए खने दितहुँ आलिङ्गन गाढ
जनि जुआर परु से खेल पाढ ॥ ३ ॥
जत जत करितहुँ तत मन जाग
अनुसए - हीन भेल अनुराग ॥ ४ ॥

मालवीरागे

(१३८)

सहजहि आनन अछल अमूल
अलकेँ तिलकेँ ससधर-तूल ॥ १ ॥
कालागि अइसन पसाहन देल
जे छल रूप सेहओ दुर गेल ॥ २ ॥
अछल सोहाँओन की भए गेल
भूषण कएले दूषण भेल
दरसि जगावए मुनि-जन-आधि
नागरका ओ सहज बेआधि ॥ ४ ॥
लिहले उखलल अओछा भार
भेटले मेटत अछ परकार ॥ ५ ॥

धनछीरागे

(१३९)

केस कुसुम छिलिआएल फुजि ताराँएँ तिमिर छाडि हलु पूजि ॥१॥
हेरि पयोधर मनसिज आधि सम्भु अधोगति धएल समाधि ॥२॥
विपरित रमण रमण रमए वरनारि रति रस-लालसे मुगुध मुरारि ॥३॥
चुम्बने करए कलामति केलि लोचन नाह निमिलित हेरि ॥४॥
ता दुहु रूप ताहि परथाव। उदय वान दुहु जैसन सभाव ॥५॥

मलारीरागे

(१४०)

नागर हो से हेरितहि जान चौसठि कलाक जाहि गेआन ॥ १ ॥
सरूप निरूपिअ कए अनुबन्ध काठेओ रस दे नाना बन्ध ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केओ बोल माधव केओ बोल कान्ह मञो अनुमापल निछछ पखान॥२॥
वर्ष द्वादस तुअ अनुराग दुती तह तकरा मन जाग ॥ ४ ॥
कत एक हमे धनि कतए गोआला जलथल कुसुम-कैसन होअ माला
पवन न सहए दीपके जोति छुइले(हु) काच मलिन होअ मोति ॥ ६ ॥
इ सवे कहिकहु कहिहह सेवा अवसर पाए उतर हमे देवा ॥ ७ ॥
परधन लोभ करए सब कोइ करिअ पेम जञो आइति होइ ॥ ८ ॥
नागरिजनकेर बहुल विलास काखेहु वचने राखि गेलि आस ॥ ९ ॥

(१४१)

हृदय कुसुम सम मधुरिम वानी
निअर अएलाहु तुअ सुपुरुष जानी ॥ १ ॥
अवे कके जतन करह इथि लागी
कञोन मुगुधि आलिङ्गति आगी ॥ २ ॥
चल चल दूती कि बोलिबो लाजे
पुनु जनु आबह अइसना काजे ॥ ३ ॥
नयन-तरङ्गे अनङ्ग जगाइ
अबला मारन जान उपाई ॥ ४ ॥
दिढ आसा दए मन विघटावे
गेले अचिरहि लाघव पावे ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति सुनह सयानी
नागर लाघव करिअ जानी ॥ ६ ॥

(१४२)

तोहे कुलमति रति कुलमति नारि
वाङ्के दरसने भुलल मुरारि ॥ १ ॥
उचितहु बोलइते अवे अवधान
संसय मेललह तन्हिक परान ॥ २ ॥
सुन्दरि की कहब कहइते लाज
(तोर विलासे) परहु सञो बाज ॥ ३ ॥
थावर-जङ्गम मन (न)हि अनुमान
सबहिक विषय तोहर होअ भान ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आओर कहि की बुझओबिसि तोहि
जनि उधमति उमतावे मोहि ॥ ५ ॥

(१४३)

सयन ठवा रहि पावे दुर कर से सव सकल सभावे ॥ १ ॥
मुख अवनत तेज लाजे कत महि लिखसि चरण महिके आगे॥
रामा रह पिआ पासे अभिनव सङ्गम तेजहि तरासे ॥ ३ ॥
पिआसञो पहिलुकि मेली होउ कमल-कोक-अलि-केली ॥ ४ ॥
तरतम तञे कर दूरे ढैल इछहि छोडहि मोर चीरे ॥ ५ ॥
विद्यापति-कवि-भासा अभिनव सङ्गम तेज तरासा ॥ ६ ॥

(१४४)

कानन कोटि कुसुम परिमल
भमर भोगए जान ॥ १ ॥
सहस गोपी मधु मधु-मुख
मधुप एके पए कान्ह ॥ २ ॥
चम्पक चीन्हि भमर न आबए
मोसञो कान्हक कोप ॥ ३ ॥
आन्तरकार गमार मधुकर
गमले गोविन्द गोप ॥ ४ ॥
साजनि अबहु कान्ह बुझाञो ॥ ५ ॥
विरहि-वध वेआधि पचसर
जानि न जम जुडाओ ॥ ६ ॥
कओन कुलवहु वाल हो
अनङ्ग जावे से बालभु बाम ॥ ७ ॥

(१४५)

दारुण कन्त निठुर हिअ सखि रहल विदेस ॥ १ ॥
केओ नहि हित मझु सञ्चरए जे कह उपदेस ॥ २ ॥
ए सखि हरि परिहरि गेल निज न बुझीअ दोस ॥ ३ ॥
करम विगत गति माइ हे काहि करबो रोस ॥ ४ ॥
मोहि छल दिने दिने बाढत देष हरिसञो नेह ॥ ५ ॥
आबे निज-मने अवधारल पहु कपटक गेह ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१४६)

प्रथमहि सिनेह बढाओल
जे विधि (हरि) उपजाए ॥ १ ॥
से आवे हठे विघटाओल
दुषण कओन मोर पाए ॥ २ ॥
ए सखि हरि समुझाओब
कए मोर परथाव ॥ ३ ॥
तन्हिके विरहे मरि जाएब
तिरि-बध कओन आब ॥ ४ ॥
जीवन थिर नहि अथिकए
जौबन तहु थोल ॥ ५ ॥
वचन अप(न अवस) निरवाहिअ
नहि करिअए ओल ॥ ६ ॥

सामरीरागे

(१४७)

तोहे जलधर सभ जल-धर-राज
हमे चातक जल-विन्दुक काज ॥ १ ॥
धरब्रो परान आस कए तोर
समय न वरिससि असमय मोर ॥ २ ॥
जल दए जलद ज़ीव मोर राख
देले सहस अवस(र) हो लाष ॥ ३ ॥
जषने क(ला)निधि निअ-तनु पाब
तहि षने राहु पिआसल आब ॥ ४ ॥
ओहओ देअ तनु से कर पान
तैअओ सराहिअ न होअ मलान ॥ ५ ॥
वैभव गेला रहत विवेक
तैसन पुरुष लाखमह एक ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहिरानीरागे

(१४८)

आजे मञे हरि-समागम जाएब कथ मनोरथ भेल ॥ १ ॥
घर गुरु-जन नीन्द निरुपैते चन्दाञे उदय देल ॥ २ ॥
चन्दा कठिन तोहरि रीति ॥ ३ ॥
ञेहि मति तोहि कलङ्क लागल तैअओ न मानसि भीति ॥४॥
जगत-नागरि-मुह जिनइते गेलाहे गगन हारि ॥ ५ ॥
ततहुं राहु-गरास पल्लाह देब तोहि की गारि ॥ ६ ॥
एके मासे तोहि विहि सिरजए कतन-जतन बले ॥ ७ ॥
दोसर दिना रहए न पारह ओही पापक फले ॥ ८ ॥

(१४९)

जमुना तीर युवति केलि कर
उठि उगल सानन्दा ॥ १ ॥
चिकुर सेमार हार अरुझाएल
जूथे जूथे उग चन्दा ॥ २ ॥
मानिनि अपुरुब तुअ निरमाने ॥ ३ ॥
पाँचे वाने जनि सेना साजलि
अइसन उपजु मोहि भाने ॥ ४ ॥
आनि पुनिम-ससि कनक थोए कसि
सिरिजल तुअ मुख-सारा ॥ ५ ॥
जे सबे उबरल काटि नडाओल
से सबे उपजल तारा ॥ ६ ॥
उबरल कनक औटि बटुराओल
सिरिजल दुइ आरम्भा ॥ ७ ॥
सीतल छाह छैलि छुइ छाडल
छाडि गेल सबे दम्भा ॥ ८ ॥

(१५०)

मधु-रजनी सङ्गहि खेपबि कत कति छल आस ॥ १ ॥
विहि विपरिते सबे विघटल बहु रिपु-जन हास ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे सुन्दरि कान्हुं न बुझ(ए) विसेष ॥ ३ ॥
पिसुन-वचने उचित विसरि अपदहि निरपेष ॥ ४ ॥
कत गुरुजन कत परिजन कत पहरी जाग ॥ ५ ॥
एतहु साहसे मञे चलि अइलिहु हेन छल अनुराग ॥ ६ ॥

(१५१)

विधि-वसे तुअ सङ्गम तेजल
दरसन भेल साध ॥ १ ॥
समय वसे मधु न मिलए
सौरभ के कर बाध ॥ २ ॥
माधव कठिन तोहर नेह ॥ ३ ॥
तुअ विरह-वेआधि-मुरुछलि
जीवन तासु सन्देह ॥ ४ ॥
जगत-नागरि कत न आगरि
तथुहु गुपुत पेम ॥ ५ ॥
से रस वएस पुनु (न) पाविअ
देलहु सहस हेम ॥ ६ ॥

(१५२)

द्विज-आहर-आहर-सुत-(नन्दन)
न पुन आरम्भ - कामा ॥ १ ॥
वनज-बन्धु-सुत-सुत दए सुन्दरि
चललि संकेतक ठामा ॥ २ ॥
माधव बुझह विसेषी
मा-धव आइलि उपेषी ॥ ३ ॥
हरि-हरि-अरि-अरि-पति-तातक वाहन
जुवति नामे से होइ ॥ ४ ॥
गो-पति-अरि-वाहन दस मिलि
विरमति कबहु न सोई ॥ ५ ॥
सायक-योगे नाम तसु नायक
हरि-अरि-अरि-पति जाने ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवओ कला एक-पुर-वासी
सुकवि विद्यापति भाने ॥ ७ ॥

(१५३)

हरि-रिपु-रिपु-प्रभु-तनय से घरिनी-तुलना-रूप रमनी ॥ १ ॥
विबुधासन-सम वचन-सोहाओन कमलासन सम गमनी ॥ २ ॥
साए साए देषलि जाइते मग जिनए आइलि जग
विबुधाधिप-पुर गोरी ॥ ३ ॥
घटज-असन-सुत देषिअ तैसन मुख चञ्चल नयन चकोरा ॥ ४ ॥
हेरितहि सुन्दरि हरि जनि लए गेलि हर-रिपु-वाहन मोरा ॥ ५ ॥
उदधि-तनय-सुत सिन्दुर लोटाओल हासे देषलि रज-कान्ती ॥ ६ ॥
षट-पद-वाहन कोष वइसाओल विहिलुहु सिखरक पान्ती ॥ ७ ॥
रवि-सुत-तनय दइ गेलि सुन्दरि विद्यापतिकवि भाने ॥ ८ ॥

(१५४)

पहिलुकि परिचय पेमक संसय रजनी अधिक समाजे ॥ १ ॥
सकल-कला-रस सभालि न हलवे वैरिनि भेलि मोरि लाजे ॥२॥
(साए साए अनुसय रहल बहूते ।)
हुनिहि सुबन्धुके लिखिए पठाओब भमरा जञो हो(अ) दूते ॥३॥
कबहु हार कर कबहु चिकुर गह कबहु हृदय कुच सङ्गे ॥४॥
एकलि नारि हमे कत अनुरञ्जब एकहि बेरि सवे रङ्ग ॥५॥
आतुर-विनय जत से सवे कहब कत बोलए चाहिअ कर जोली ॥
नवए रङ्ग सब भङ्ग भैए गेल ओल धरि न भेले बोली ॥७॥
ओ नव-नागर सुपहु सुचेत(न) विद्यापतिकवि भाने ॥८॥
(राजा सिवसिंह रूपनारायन लखिमा-देवि रमाने ॥९॥)

कलहान्तरितः । केदाररागे ॥

(१५५)

छलिहु पुरुब भोरे, जाएब पिआँ मोरे
पालक सुतलि कलहई ॥ १ ॥
खने एके जागलि रोअए लागलि
पिआ गेल निज-कर मुदली दई ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिने दिने तनु-सेष, दिवस वरिस लेष
सुन कान्ह तोह विनु जैसनि रमनी ॥ ३ ॥
परक वेदन दुख न बुझए मुरुख
पुरुष निरापन चपल-मती ॥ ४ ॥
रभस-पलालि बोल, सत कए तन्हि लेल
कि करति अनाइति पललि जुवती ॥ ५ ॥

(१५६)

छलि भरमे राहि, पिआसे जाएब कहि
कोप कइए निन्द गेली ॥ १ ॥
जागि उठलि धनि, देखि सेज सुनि
हरि बोलइते निन्द गेली ॥ २ ॥
माधव ई तोर कओन गेआने
सबे सवतहु बोल, जे सह से वड
परे बुझावह अगेआने ॥ ३ ॥
भल न कएल तोहे, पेअसि अलप कोहे
दुर कर छैलक रीति ॥ ५ ॥
ओछासओ, हरि, न करिअए सरिपरि
ते करब रअनि(हु) साति ॥

(१५७)

नयनक ओत होइतें होएत भाने
विरह होएत नहि रहत पराने ॥ १ ॥
से आबे देसान्तर आन्तर भेला
मनमथ-मदन रसातल गेला ॥ २ ॥
कओन देस वसल रतल कओन नारी
सपने न देखए निठुर मुरारी ॥ ३ ॥
अमृत-सिचलि सनि बोललन्हि वानी
मन पतिआएल मधुर-पति जानी ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हम छल दुटत न जाएत नेहा
दिने-दिने बुझलक कपट सिनेहा ॥ ५ ॥

कानलरागे

(१५८)

अरुण लोचन घूमि घुमाओल जनि रतोपले पवन पाओल ॥१॥
आकुल चिकुर आनन झापल जनि तम-ठाञे चान्द चापल ॥२॥
माधव कैसे जाइति वासा देखि सखीजन हो उपहासा ॥३॥
नख-दोष देघल कुच करतल कमले झापि कि हो कनकाचल ॥४॥
फूजलि नीवी आनि मेराउलि जनि सुरसरि उतरे धाउलि ॥५॥
सुकवि भने विद्यापति गाओल ई रस रूपनाराएणे पाओल ॥६॥

(१५९)

आकुल चिकुल वेढल मुख-सोभ
राहु कएल ससि-मण्डल-लोभ ॥ १ ॥
उभरल चिकुर माल कर रङ्ग
जनि जमुना-जल गाङ्ग-तरङ्ग ॥ २ ॥
वड अपुरुब दुहु चेतन-मेलि
विपरित रति कामिनि कर केलि ॥ ३ ॥
हास-सोहाओन सम-जल-विन्दु
मदन मोति दए पूजल इन्दु ॥ ४ ॥
पिआ-मुख सुमुखि चूम्ब तेजि ओज
चान्द अधोमुख पिवए सरोज ॥ ५ ॥
कुच विपरीत विलम्बित हार
कनक-कलशा जनि दूधक धार ॥ ६ ॥
किङ्किणि रनित नितम्बहि छाज
मदन-महासिधि - बाजन बाज ॥ ७ ॥

(१६०)

नारङ्गि छोलङ्गि कोरिकि वेली कामे पसाहलि आचर फेली ॥ १ ॥
आबे भेलि ताल-फल-तूले कँहा लए जाइति अलप(हु) मूले ॥२॥
से कान्ह से हमे से धनि राधा पुरुब पेम न करिअ(ए) बाधा ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जातकि-केतकि-सरसि(ज)-माला तुअ गुन गहि गाथए हारा ॥४॥
सरस निरसि तोह के बुझावे कहा लए बुलति भेलि विभाने ॥५॥
सरस कवि विद्यापति गावे नागर-नेह पुनमत पावे ॥६॥

(१६१)

निसि निसिअर भम भीम भुअङ्गम जलधरे विजुरि उजोर ॥१॥
तरुण तिमिर राति तैअओ च(ल)लि जासि बड सखि साहस तोर ॥
साजनि कमन पुरुष धन, जे तोर हरल मन
जाहेरि उदेसे अभिसार ॥२॥
अँगातब्बो जब्बुन-नरि से कइसे जएबह तरि आरति देबह आपे ॥४॥
तोरा अछि पचरस ते तोहि नहि डर मोर हृदय बरु कापे ॥५॥

(१६२)

चरण नूपुर उपर सारी मुखर मेखल करे निवारी ॥१॥
अम्बरे समरि देह झपाई चलहि तिमिर पथ(हि) समाई ॥२॥
समुद-कुमुद-रभस-रसी अबही उगत कुगत ससी ॥३॥
आएल चाहिअ सुमुखि तोरा पिसुन-लोचन भम(ए) चकोरा ॥४॥
अलक-तिलक न करब राधे आङ्ग-विलेपन करहि बाधे ॥५॥
तब्बे अनुरागिणि ओ अनुरागी दूषण लागत भूषण लागी ॥६॥
भने विद्यापति सरस-कवि नृपति-कुल सरोरुह-रवि ॥७॥

कोलाररागे

(१६३)

हिमकर हेरि अवनत कर आनन कए करुणा पथ हेरी ॥ १ ॥
नयन काजर लए लिखए विधुन्तुद कए रहु ताहेरि सेरी ॥ २ ॥
माधव; कठिन हृदय परवासी ॥ ३ ॥
तुअ पेअसि मब्बे देषलि वराकी अबहु पलटि घर जासी ॥ ४ ॥
मीन-केतन भब्बे शिव-शिव-शिव कए धरनि लोटावए देहा ॥५॥
करज-कमल लए कुच-सिरिफल दए शिव पूजए निज-गेहा ॥६॥
दाहिन पवन वह से कैसे जुवति सह करे कवलित तसु अङ्ग ॥७॥
गेल परान आस दए राखए दसन खेलिहए मुअङ्गे ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुतर पयोधि फेने नहि सन्तरि विद्यापतिकवि भाने ॥९॥
राजा सिवसिंह रूपनाराएण लखिमा-देवि-रमाने ॥१०॥

(१६४)

प्रथम ह हृदय पेम उपजाए पेमक आङ्कुर गेलाह बढाए ॥१॥
से आबे तरुअर सिरिफल भास तहि तले बैले मनमथे लेल वास ॥
माधव कके विसरलि वर-नारि बड परिहर गुण-दोस विचारि ॥३॥
नयन-सरोज दुहू वह नीर काजर पखरि पखरि पल चीर ॥४॥
तेहि तिमित भेल उरज सुवेस मृगमदे पूजल कनक-महेश ॥५॥
काजरे बाहु उरग लिष काग विस मलयज पुनु मलयज-पाङ्क ॥६॥
चान्द-पवन-पिक-मदन-तरास सर गदगद घन छाड निसास ॥७॥

(१६५)

कुसुमे रचित सेज, मलयज पङ्कज, पेअसि सुमुखि समाजे ॥१॥
कत मधु-मास विलासे गमावह आबे कहितहु पर लाजे ॥२॥
माधव काहु जनु दिन अवगाहे ॥३॥
सुरतरुतर सुखे जनम गमाओल धुथुरा तर निरवाहे ॥४॥
दखिन पवन सौरभे उपभोगल पीउल अमिञ्च-रस-सारे ॥५॥
कोकिल-कलरव उपवन पूरल तहु कत कएल विकारे ॥६॥

(१६६)

हमे एकसरि पिअतम नहि गाम
तेँ तरतम अछइते एहि ठाम ॥ १ ॥
अनतहु कतहु करैतहु वास
दोसर न देषिअ पलउसिआओ पास ॥ २ ॥
चल-चल पथिक करिअ पकाह
वास नगर भमि अनतहु चाह ॥ ३ ॥
सात पाँच घर तन्हि सजि देल
पिआ देसान्तर आन्तर भेल ॥ ४ ॥
बारह बर्ष अवधि कए गेल
चारि वर्ष तन्हि गेला भेल ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोरा मन हे खनहि-खन भाङ्ग
गमल गोर कत मनसिज जाग ॥ ६ ॥

(१६७)

रसिकक सरवस नागरि-वानि
भल परिहर न(हि) आदरि आँनि ॥ १ ॥
हृदयक कपटी वचन-पिआर
अपने रसे उकठ कुसिआर ॥ २ ॥
आवे कि बोलव सखि विसरल जेओ
तुअ रुपे लुबुध मही नहि केओ ॥ ३ ॥
पएर पखाल रोषे नहि खाए
अन्धरा हाथ भेटल दुर जाए ॥ ४ ॥
तजे जे कलामति ओ अविवेक
न पिब सरोज अमिअ-रस भेक ॥ ५ ॥
अकुलिनसओ यदि कए सदभाव
तत कए कतए चतुरपन फाव ॥ ६ ॥
ओकरा हृदय रहए नहि लागि
सुनछल कतहु जूड हो आगि ॥ ७ ॥

(१६८)

जलधि सुमेरु दुअओ थिक सार सवतह गनिअ अधिक वेवहार ॥ १ ॥
मालति तोहे यदि अधिक उदास भमर गओ सओ आवे कमलिनि पास
लाथ करसि कत अवसर पाए देउर न होअए हाथे झपाए ॥ ३ ॥
कुच-युग कञ्चन-कलश समान मुनि-जन-दरसने उगए गेआन ॥ ४ ॥
तजे वर-नागरि अपने गून कओनक देले ही बड पून ॥ ५ ॥

(१६९)

साकर सूध दूधे परिपूरल सानल अमिअक सारे ॥ १ ॥
सेहे वदन तोर अइसन करम मोर खारे पए बरिसए धारे ॥ २ ॥
साजनि पिसुन-वचन देहे काने ॥ ३ ॥
दे(ह) विभिन्न विधाता आइति तोरा मोरा एके पराने ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोपहुसञो यदि समदि पठावह वचने न बोलह मन्दा ॥ ५ ॥
तोर वदन सम तोर वदन पए खार न वरिसए चन्दा ॥ ६ ॥
चौदिस लोचन चमकि चलावसि न मानसि काहुक शङ्का ॥ ७ ॥
तोरा मुहसञो किछु भेद कराओब ते देल चान्द कलङ्का ॥ ८ ॥

(१७०)

आएल पाउस निविड अन्धार सघन नीर बरिसए जलधार ॥ १ ॥
घनहन देषिअ विघटित रङ्ग पथ चलइते पथिकहु मन भङ्ग ॥ २ ॥
कओने परि आओत वालभु मोर आगु न चल(ए) अभिसारिनि पार
गुरु-गृह तेजि सयन-गृह जाथि तिथिहु वधू-जन शङ्का याथि ॥ ४ ॥
नदिआ जोरा भअउ अथाह भीम भुअङ्गम पथ चललाह ॥ ५ ॥

(१७१)

प्रथमहि हृदय बुझओलह मोहि वडे पुने वडे तपे पौलिसि तोहि ॥ १ ॥
काम-कला-रस दैव अधीन मञे विकाएव तञे वचनहु कीन ॥ २ ॥
दुति दयावति कहहि विशेषि पुनु वेरा एक कैसे होएत देषि ॥ ३ ॥
दुरे दुरे देषलि जाइते आज मन छल मदने साहि देब काज ॥ ४ ॥
ताहि लए गेल विधाता वाम पलटलि डीठि सून भेल ठाम ॥ ५ ॥

(१७२)

दिवस मन्द-भल न रहए सब षन
विधि न दाहिन रह वाम लो ॥ १ ॥
सेहे पुरुष-वर जेहे धैरज कर
सम्पद - विपदक ठाम लो ॥ २ ॥
माधव बुझल सवे अवधारि लो ॥ ३ ॥
जस-अपजस दुअओ चिरे थाकए
आओर दिवस दुइ-चारि लो ॥ ४ ॥
अपन करम अपनहि भूजिअ
विहिक चरित नहि वाध लो ॥ ५ ॥
काएर पुरुष हृदय हारि मर
सुपुरुष सुपुरुष सह अवसाद लो ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीनि भुवन मही, अइसन दोसर नही
विद्यापतिकवि भाने ॥ ७॥
राजासिवसिंह रूपनरायण
लखिमादेवि रमाने ॥ ८॥

(१७३)

खने सन्ताप सीत जल जाड की उपचरव सन्देह न छाड ॥ १ ॥
उचितओ भूषण मानए भार देह रहल अछ सोभा-सार ॥ २ ॥
ए सखि तुरित कहहि अवधारि जे किछु समदलि ते वरनारि ॥ ३ ॥
भेद न मानए चान्दन आगि बाट हेरए ओ अह-निसि जागि ॥४॥
जिनल इन्दु वदन ते ताव होएत किदहु एहि परथाव ॥ ५ ॥
नव आखर गदगद सर रोए जे किछु सुन्दरि समदल गोए ॥ ६ ॥
कहहि न पारिअ तसु अवसाद दोसरा पद अछि सकल समाद ॥७॥

(१७४)

उधकल केस-पास लाजे गुपुत हास रयनि उजागरि मुख न उजरा॥१॥
पीन पयोधर नख-खत सुन्दर कनक-कलस जनि केसु पुजला ॥ २ ॥
न-न-न-न कर सखि सारद-ससि-मुखि सकल चरित तुअ बुझल विसेषि॥
वस(न) पिधु विपरित तिलके तिरोहित अधर काजर मिलु कमने परी॥
एत सव लखन सङ्ग विचखन कपट रहत कति खन जे धरी ॥ ५ ॥
अलस गमन तोर वचन बोलसि भोर मदन मनोहर मोह-गता ॥ ६ ॥
जम्भसि पुनु पुनु जासि अवस तनु अतापे छुइल मृणाल लता ॥ ७ ॥

(१७५)

वरिसए लागल गरजि पयोधर धरणी (दम्भ)दि भेलि ॥ १ ॥
नवि-नागरि-रत परदेश बालभु आओत-आसा गेलि ॥ २ ॥
साजनि आवे हमे मदन असार ॥ ३ ॥
सून मन्दि(र) पाउसके जामिनि कामिनि की परकार ॥ ४ ॥
लघु-गुरु भए सरि पए भरे लागलि निचिन्त भयो अगाधे ॥ ५ ॥
कओन परि पथिके अपन घर आओव सहजहि सबका बाधे ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोपहुसञो यदि समदि पठावह वचने न बोलह मन्दा ॥ ५ ॥
तोर वदन सम तोर वदन पए खार न वरिसए चन्दा ॥ ६ ॥
चौदिस लोचन चमकि चलावसि न मानसि काहुक शङ्का ॥ ७ ॥
तोरा मुहसञो किछु भेद कराओब ते देल चान्द कलङ्का ॥ ८ ॥

(१७०)

आएल पाउस निविड अन्धार सघन नीर बरिसए जलधार ॥ १ ॥
घनहन देषिअ विघटित रङ्ग पथ चलइते पथिकहु मन भङ्ग ॥ २ ॥
कञोने परि आओत बालमु मोर आगु न चल(ए) अभिसारिनि पार
गुरु-गृह तेजि सयन-गृह जाथि तिथिहु वधू-जन शङ्का याथि ॥ ४ ॥
नदिआ जोरा भअउ अथाह भीम भुअङ्गम पथ चललाह ॥ ५ ॥

(१७१)

प्रथमहि हृदय बुझओलह मोहि बडे पुने वडे तपे पौलिसि तोहि ॥ १ ॥
काम-कला-रस दैव अधीन मञे विकाएब तञे वचनहु कीन ॥ २ ॥
दुति दयावति कहहि विशेषि पुनु वेरा एक कैसे होएत देषि ॥ ३ ॥
दुरे दुरे देषलि जाइते आज मन छल मदने साहि देब काज ॥ ४ ॥
ताहि लए गेल विधाता वाम पलटलि डीठि सून भेल ठाम ॥ ५ ॥

(१७२)

दिवस मन्द-भल न रहए सब षन
विधि न दाहिन रह वाम लो ॥ १ ॥
सेहे पुरुष-वर जेहे धैरज कर
सम्पद - विपदक ठाम लो ॥ २ ॥
माधव बुझल सबे अवधारि लो ॥ ३ ॥
जस-अपजस दुअओ चिरे थाकए
आओर दिवस दुइ-चारि लो ॥ ४ ॥
अपन करम अपनहि भूजिअ
विहिक चरित नहि वाध लो ॥ ५ ॥
काएर पुरुष हृदय हारि मर
सुपुरुष सुपुरुष सह अवसाद लो ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीनि भुवन मही, अइसन दोसर नही
विद्यापतिकवि भाने ॥ ७॥
राजासिवसिंह रूपनरायण
लखिमादेवि रमाने ॥ ८॥

(१७३)

खने सन्ताप सीत जल जाड की उपचरव सन्देह न छाड ॥ १ ॥
उचितओ भूषण मानए भार देह रहल अछ सोभा-सार ॥ २ ॥
ए सखि तुरित कहहि अवधारि जे किछु समदलि ते वरनारि ॥ ३ ॥
भेद न मानए चान्दन आगि वाट हेरए ओ अह-निसि जागि ॥४॥
जिनल इन्दु वदन ते ताव होएत किदहु एहि परथाव ॥ ५ ॥
नव आखर गदगद सर रोए जे किछु सुन्दरि समदल गोए ॥ ६ ॥
कहहि न पारिअ तसु अवसाद दोसरा पद अछि सकल समाद ॥७॥

(१७४)

उधकल केस-पास लाजे गुपुत हास रयनि उजागरि मुख न उजरा॥१॥
पीन पयोधर नख-खत सुन्दर कनक-कलस जनि केसु पुजला ॥ २ ॥
न-न-न-न कर सखि सारद-ससि-मुखि सकल चरित तुअ बुझल विसेषि॥
वस(न) पिधु विपरित तिलके तिरोहित अधर काजर मिलु कमने परी॥
एत सव लखन सङ्ग विचखन कपट रहत कति खन जे धरी ॥ ५ ॥
अलस गमन तोर वचन बोलसि भोर मदन मनोहर मोह-गता ॥ ६ ॥
जम्भसि पुनु पुनु जासि अवस तनु अतापे छुइल मृणाल लता ॥ ७ ॥

(१७५)

वरिसए लागल गरजि पयोधर धरणी (दम्भ)दि भेलि ॥ १ ॥
नवि-नागरि-रत परदेश बालभु आओत-आसा गेलि ॥ २ ॥
साजनि आवे हमे मदन असार ॥ ३ ॥
सून मन्दि(र) पाउसके जामिनि कामिनि की परकार ॥ ४ ॥
लघु-गुरु भए सरि पए भरे लागलि निचिन्त भयो अगाधे ॥ ५ ॥
कओन परि पथिके अपन घर आओव सहजहि सवका वाधे ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोहि वरु अतनु अतनु कए छाडथु से सुखे भूजथु राजे ॥ ७ ॥
तुअ गुन सुमरि कान्ह पुनु आओब विद्यापतिकवि भाने ॥ ८ ॥

(१७६)

नयन-काजर अधरे चौराओल नयने चोराओल रागे ॥ १ ॥
वदन वसन नुकाओब कति खन तिला एक कैतव लागे ॥ २ ॥
माधव कि आवे बोलब असताहे ॥ ३ ॥
जाहि रमणी सङ्गे रयणि गमओलह ततहि पलटि पुनु जाहे ॥ ४ ॥
सगर गोकुल जिनि से पुनमति धनि कि कहव ताहेरि विभागे ॥ ५ ॥
पद-यावक-रस जाहेरि हृदय अछ आओ कि कहब अनुरागे ॥ ६ ॥

(१७७)

फूजलि कवरि अवनत कर आनन
कुच परसए परचारि ॥ १ ॥
कामे कमल लए कनक सम्भु जनि
पूजल चामर ढारि ॥ २ ॥
पिउ पिउ पलटि हेरि हल पेअसि
वयना मदन सपथ तोहि रे ॥ ३ ॥
सामर लोम-लता कालिन्दी
हारा सुरसरि-धारा ॥ ४ ॥
मज्जन कए माधवे वर मागल
पुनु दरसन एक वेरा ॥ ५ ॥

(१७८)

की पर-वचने कन्ते देल कान
की (पुनु) पलुलि कलामति आन ॥ १ ॥
कि दिन-दोसे दैव भेल वाम
कब्बोने कारणे पिआ नहि ले नाम ॥ २ ॥
ए सखि ए सखि, देहे उपदेस
एक पुर काँन्ह वस मो पति विदेस ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आसे पासे मदने करु बन्ध
जिवइते जुवति न तेज अनुबन्ध ॥ ४ ॥
अवधि-दिवस नहि पाविअ ओल्
अनिअत जौवन जीवन थोल् ॥ ५ ॥

(१७९)

काहु दिस काहल कोकिल रावे
मातल मधुकर दह दिस धावे ॥ १ ॥
केओ नहि बुअए धएल धन आने
भमि-भमि लुनए मानिनि-जन-माने ॥ २ ॥
कि कहिबो अगे सखि अपन विभाला
विनु कारणे मनमथे करु धाला ॥ ३ ॥
किसलय-सोभित नव-नव चूते
ध्वजका धोरणि दोषिअ बहूते ॥ ४ ॥
कसि कसि रङ्ग कुसुम-सर लेइ
प्राण न हरए विरह पए देइ ॥ ५ ॥
दाहिन पवन कओने धरु नामे
अनुभव पाए सेहओ भेल वामे ॥ ६ ॥
मन्द समीर विरहि(नि) वध लागि
विकच पराग पजारए आगि ॥ ७ ॥

(१८०)

बाढलि पिरिति हठहि दुर गेलि नयनक काजर मुह-मसि भेलि ॥ १ ॥
ते अवसादे अवसिन भेल देह खड कुमढा सन बुझल सिनेह ॥ २ ॥
साजनि (अवे) की पुछसि मोहि अपद पेम अपदहि पिउ मोहि ॥ ३ ॥
जओ अवधानिअ पर जनु जान कण्टक सम भेल रहए परान ॥ ४ ॥
विरहानल कोइलि कर जोरि बाढलि हरि जनि सीचिअ वोरि ॥ ५ ॥

(१८१)

तेहँ हुँनि लागल उचित सिनेह
हम अपमानि पठओलह गेह ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमरिउ मति अपथे चलि गेलि
दूधक माछी दूती भेलि ॥ २ ॥
माधव कि कहब ई भल भेला
हमर गतागत ई दुर गेला ॥ ३ ॥
पहिलहि बोललह मधुरिम बानी
तोहहि सुचेतनि तोहहि सयानी ॥ ४ ॥
भेला काज बुझओल(ह) रोसे
कहि की बुझओबह अपनुक दोसे ॥५ ॥

(१८२)

कमलिनि एडि केतकि गेला सौरभे रहु घूरि ॥ १ ॥
कंटके कवलु कलेवर मुख माषल धूरि ॥ २ ॥
अबे सखि, भमरा भेल हे रति-रभसे सुजान ॥ ३ ॥
परिमलके लोभे धाओल पाओल नहि पास ॥ ४ ॥
मधु पुनु डिठिहु न देषल हे आवे जन उपहास ॥ ५ ॥
भल भेल भमि आबथु पाबथु मन खेद ॥ ६ ॥
एक-रस पुरुषा न बुझए गुण-दूषण भेद ॥ ७ ॥

(१८३)

हसु तारापति रिपु-खण्डन-कामिनि
गृह-वर वदन सुशोभे ॥ १ ॥
बाज मराल ललित गति सुन्दर
से देखि मुनिजन मोहे ॥ २ ॥
पिअतम समन्दु सजनी ॥ ३ ॥
सारङ्ग-रङ्ग-वदन-तात-रिपु-अतिसख
तातह महघि रजनी ॥ ४ ॥
दिति-सुत-रति-सुत अति बड दारुण
तातह वेदन होई ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर-पिडाए जे जन पाविअ
तैसन न देषिअ कोई ॥ ६ ॥

(१८४)

हरि-पति-हित-रिपु-नन्दन-वैरी-वाहन-ललित गमनी ॥ १ ॥
दिति-नन्दन-रिपु-नन्दन-नन्दन नागरि रूपे से अधिक रमणी ॥२॥
सिव-सिव तम-रिपु-वन्धव-जनी ॥ ३ ॥
रितु-पति-मित-वैरि-चूडामणि-मित्र-समान रजनी ॥ ४ ॥
हरि-रिपु-रिपु-प्रभु तसु रजनी-तात-सरिस कुचसिरी ॥ ५ ॥
सिन्धु-तनय-रिपु-रिपु-रिपु-वैरिनि-वाहन माझ उदरी ॥ ६ ॥
पन्थ-तनय-हित-सुत पने पाविअ विद्यापतिकवि भाने ॥ ७ ॥

(१८५)

सपनेहु न पुरले मनलोभे भेल परिभव-भागी एक साधे ॥ १ ॥
नयने देषल हरि एत अपराधे ॥ २ ॥
वाङ्क मनोभव मन जर आगी दुलभ-लोभे भेल परिभव भागी ॥३॥
चान्द-वदनि धनि चकोर-नयनी विरह-वेदने भेल चतुर रमनी ॥४॥
कि मोरा चान्दने की अरविन्दे नेह विसर जनो सूतिअ नीन्दे ॥५॥
अवुझ सखीजन न बुझए आधी आन औषध कर आन वेआधी ॥
मदन-वानके मन्दि वेवथा छाडि कलेवर मानस वेथा ॥ ७ ॥
चिन्ताए विकल हृदय नहि थीरे वद(न) निहारि नयन वह नीरे ॥

(१८६)

निसि निसिअर भम भीम भुअङ्गम गगन गरज घन मेघह ॥१॥
दुतर जौवुन नरि से आइलि वाहु पैरि एतवाए तोहर सिनेह ॥२॥
हेरि हल हसि समुह उगओ ससि वरिसओ अमिअक धारा ॥३॥
कत नहि दुरजन कत जामिक जन परिपन्तिअ अनुरागे ॥४॥
किछु न काहुक डर गुनल जुवति-वर एहि पर कि ओ अभागे ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१८७)

जओ प्रभु हम पाए रे दा लेब हमहु सुजने दोसराइत देव ॥ १ ॥
सुभ हो सामि कहव की रोए परतह तिल लए हम देव तोए ॥ २ ॥
आइलि जगत जुबति के अन्ध सामि समिहित कर प्रतिबन्ध ॥ ३ ॥
दिन दस चातर हलिअ विचारि तते होएत यत लिहल कपाल ॥४॥

(१८८)

वरिसए लागल गरजि पयोधर धरणी दन्तुदि भेलि ॥ १ ॥
नवि-नागरि-रत परदेस बालभु आओत आसा गेलि ॥ २ ॥
साजनि आवे हमे मदन अधारे ॥ ३ ॥
सून मन्दि(र) पाउसके जामिनि कामिनि की परकारे ॥ ४ ॥
लघु गुरु भए सरि पए भरे बाढलि नीचे ओ भअउ अगाधे ॥५॥
कओने परि पथिके अपन घर आओब सहजहि सबका बाधे ॥६॥
एहे वेआज कइए पिआ गेला आओब समय समाजे ॥७॥
मोहि वरु अतनु अतनु कए छाडथु से सुखे भुजथु राजे ॥८॥

(१८९)

दुइ मन मेलि सिनेह अङ्कुर
दोपद-तेपत भेला ॥ १ ॥
साखा-पल्लव फूले वेआपल
सौरभ दह दिस गेला ॥ २ ॥
सखि हे आवे कि आओत कन्हाई ॥ ३ ॥
पेम मनोरथ हठे विघटओलन्हि
कपटिहि के पतिआई ॥ ४ ॥
जानि सुपुहु तोहे आनि-भेराओल
सोना गाथलि मोती ॥ ५ ॥
कैतव कञ्चन अन्ध विधाता
छायाहु छाडलि मोन्ति ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१९०)

दारुण सुनि दुरजन बोल
जनि कम(ल) कमला गए गून ॥ १ ॥
के जान कओने सिखाओल गोप
ते नहि विसरए हृदय(क) कोप ॥ २ ॥
ए सखि, ऐसन मोर अभाग
परक कान्ह कहला लाग ॥ ३ ॥
एत दिन अछल अइसन भान
हम छाडि पेअसि नहि आन ॥ ४ ॥
जगत भमि सुपुरुष जोही
आसा सहसे भजलि(हु) तोही ॥ ५ ॥
दिवस-दुधने तोहे उदास
पिसुन(क) वचनेहु तात तरास ॥ ६ ॥

(१९१)

जातकि-केतकि-कुन्द-सहार
गरुअ ताहेरि पुन जाहि निहार ॥ १ ॥
सब फुल परिमल सब मकरन्द
अनुभवे विनु न बुझिअ भल-मन्द ॥ २ ॥
तुअ सखि, वचन अमिअ अवगाह
भमर-वेआजे बुझाओब नाह ॥ ३ ॥
एतबा विनती अनाइति मोरि
निरस कुसुम नहि रहिअ अगोरि ॥ ४ ॥
वैभव गेले भलाहु मति भास
अपन पराभव पर उपहास ॥ ५ ॥

(१९२)

कोमल तनु पराभवे पाओब
तेजि न हलबि तेहुँ ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भमर-भरे कि माजरि भागए
देषल कतहुँ केँहुँ ॥ २ ॥
माधव, वचन धरब मोर ॥ ३ ॥
नही नहि कए न(हि) पतिआओब
अपद(हि) लागत भोर ॥ ४ ॥
अधर निरसि धुसर करब
भाव उपजत भला ॥ ५ ॥
भने खने रति रभस अधिक
दिने दिने ससि-कला ॥ ६ ॥

(१९३)

प्रणमि मनमथ करहि पाएत मनक पाछे देह जाएत ॥ १ ॥
भूमि कमलिनि गगन सूर पेम-पन्था कतए दूर ॥ २ ॥
बाध न करहि रामा, पुर विलासिनि पिअतम-कामा ॥ ३ ॥
वदने जीनि कहु करसि मन्दा लग न आओत लाजे चन्दा ॥ ४ ॥
तेहि संकिअ पथ उजोर गमन तिमिरहि होएत तोर । ५ ॥
काज(क) संशय हृदय(क) बङ्का कत न उपजए विरह(क) शङ्का ॥६॥
सबहि सुन्दरि साहस सार तोहि तेजि के करए (ई) पार ॥ ७ ॥
सकल-अभिमत-सिद्धिदायक रूपे अभिनव-कुसुमसायक ॥८॥
राएसिवसिंह रस(क) अधार सरस कह कविकण्ठहार ॥ ९ ॥

(१९४)

एहि मही अधि अथिर जीवन जौवन अलप-काल ॥ १ ॥
इँथी जत न विलसिअ से रह हृदय साल ॥ २ ॥
साजनि कइसन तोर गेआन ॥ ३ ॥
जौवन संपद तोर सोआधिन कके न करसि दान ॥ ४ ॥
तोर धन धनि तोराहि रहत निधन होएत आन ॥ ५ ॥
दानक धरम तोहहि पाओव कवि विद्यापति भान ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारङ्गीरागे

(१९५)

सामर-सुन्दर ञे बाटे आएल तँ मोरि लागलि आँखी ॥ १ ॥
आरति आँचर साजि न भेले सबे सखी-जन साखी ॥ २ ॥
कहहि मो सखि कहहि मो कथा ताहेरि बासा ॥ ३ ॥
दूरहु दुगुण एडि मञे आवओ पुनु दरसन-आसा ॥ ४ ॥
कि मोरा जीवने कि मोरा जौवने कि मोरा चतुरपने ॥ ५ ॥
मदन-बाणे मुरुछलि अछओ सहओ जीव अपने ॥ ६ ॥
आध पयोधर ते मोर देखल नागर-जन-समाजे ॥ ७ ॥
कठिन हृदय भेदि न भेले जाओ रसातल लाजे ॥ ८ ॥
सुर-पति पाए लोचन मागओ गरुड मागओ पाखी ॥ ९ ॥
नादेरि नन्दन मञे देषि आबओ मन मनोरथ राखी ॥१०॥

(१९६)

नीन्दे भरल अछ लोचन तोर
लोनुअ वदन कमल-रुचि चोर ॥ १ ॥
कओने कुबुधि कुच नख-खत देल
हा हा शम्भु भगन भए गेल ॥ २ ॥
केस कुसुम झल् सिरक सिन्दुर
अलक तिलक हे सेहओ गेल दुर ॥ ३ ॥
निरसि धुसर भेल अधर पवार
कओने लुलल सखि मदन-भँडार ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति रसमति नारि
करए पेम पुनु पलटि निहारि ॥ ५ ॥

(१९७)

कामिनि करए सनाने हेरइते हृदय हरए पचवाने ॥ १ ॥
चिकुर गलए जलधारा मुख-शशि डरे जनि रोअए अँधारा ॥ २ ॥
तितल वसन तनु लागू मुनिहुंक मानस मनमथ जागू ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ते शङ्काए भुज-पाशे बान्धि धरि धरिअ पुनु उड(त) तरासे ॥ ४ ॥
कुच जुग चारु चकेवा निअ-कुल मिलत आनि कओने देवा ॥ ५ ॥

(१९८)

भौंहँ भागि गेल लोचन भेल आड तैअओ न शैशव सीमा छाड ॥१॥
आवे हसि हृदय चिर लए थोए कुच कञ्चन अङ्कुरए गोए ॥ २ ॥
हेरि हल माधव कए अवधान जौवन-परसे सुमुखि आवे आन ॥ ३ ॥
मधुर हासे मुख मुण्डित (लागु) अमिअक लोले कुशेशय (जागु) ॥
सखि पुछइते आवे दरसए लाज सीखि सुधाए अध-बोली बाज ॥ ५ ॥
एत दिन सैसवे लाओल साठ आवे सवे मदने पढाउलि पाठ ॥ ६ ॥

(१९९)

जलद वरिस जल-धार
सर जओ पलय प्रहार ॥ १ ॥
... ...
का(ज)रे राङ्गलि राति ॥ २ ॥
सखि अइसनाहु निसि अभिसार
तोहि तेजि करए के पार ॥ ३ ॥
भमए भुअङ्गम भीम
पङ्के पुरल चौसीम ॥ ४ ॥
दिगमग देषिअ घोर
पएर दिअए विजुरि उजोर ॥ ५ ॥
सुकवि विद्यापति गाव
महघ मदन परथाव ॥ ६ ॥

(२००)

कुच कलश लोटाइलि घन सामर वेणी ॥ १ ॥
कनय-(शम्भु) पर सुतलि जनि कारि सापिनी ॥ २ ॥
मदन-सरे मुरुछलि चिरे चेतहि (न) बाला ॥ ३ ॥
लम्बित अलके बेढला मुख कमल सोभे ॥ ४ ॥
राहु कि बाहु पसारला ससि-मण्डल लोभे ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२०१)

हास विलासिनि दसन देखिअ
जनित ललित जोती ॥ १ ॥
सार विनी विनि हार मज्झे गाथव
चान्दे परिहव मोती ॥ २ ॥
दए गेलि दए गेलि दुइ डिठि मेरा
पुनु मन कर ततहि जाइअ
देषिअ दोसरि वेरा ॥ ३ ॥

दिवस भमर कमल सुतल
सीसिरे भिनलि पाखी ॥ ४ ॥
खञ्जन-(न)यनि ताहि परिवह
तैसनि लोनुमि आँखी ॥ ५ ॥
भने विद्यापति जे जन नागर
तापर रतलि (वर)नारि ॥ ६ ॥
हासिनिदेविपति, देवसिंह नरपति
परसन होथु मुरारि ॥ ७ ॥

(२०२)

हृदयक हार भुअङ्गम भेल
दारुण दाढ मदने विस देल ॥ १ ॥
नख सिख लहरि पसर विष-धाधी
तुअ पए-पङ्कज अइलिहु कल वान्धि ॥ २ ॥
ए हरि तलागहि तजे गोहारि
संशय पललि अछए वरनारि ॥ ३ ॥
केओ सखि मन दए चरण पखाल
केओ सखि चिकुर चीर सम्भार ॥ ४ ॥
केओ सखि ऊठि निहारए सास
मज्झे सखि अएलाहु कहए तुअ पास ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुञ्जरीरागे

(२०३)

भौहलता बड देषिअ कठोर
अञ्जने आँजि हासि-गुन जोल् ॥ १ ॥
सायक तीष मदन अति चोष
व्याध मदन बध ई बड दोष ॥ २ ॥
सुन्दरि सुनह वचन मन लाए
मदन हाथ मोहि लेह छडाए ॥ ३ ॥
सहए के पार काम-परहार
कत अभिभव हो की परकार ॥ ४ ॥
एहि युग तिनिहु विमल जस लेह
कुच-युग-शम्भु-शरण मोहि देह ॥ ५ ॥

(२०४)

नोनुअ वदन-सिरि धनि तोरि
जस लागिह मोहि चान्दक चोरि ॥ १ ॥
दरसि हलह जनु हेरह काहु
चान्द-भरमे मुख गरसत राहु ॥ २ ॥
धवल नयन तीर काजरे कार
तीख तरल (धनु व्याधा जनि) धार ॥ ३ ॥
निरलि निहारि फास गुण जोलि
बान्धि हलत तोहि खञ्जन बोलि ॥ ४ ॥
सागर-सार चोराओल चन्द
ता लागि राहु करए बड दन्द ॥ ५ ॥
कतए लुकाओब चान्दक चोरि
जतहि लुकाइअ ततहि उजोरि ॥ ६ ॥

(२०५)

छलिहु एकाकिनि गथइते हार
ससरि खसल कुच-चीर हमार ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तखने अकामिक आएल कन्त
कुच की झाँपव निबुहुक अन्त ॥ २ ॥
कि कहब सुन्दरि कौतुक आज
पहु राखल मोर जाइते लाज ॥ ३ ॥
भेल भाव भरे सकल सरीर
कतन जतने बल राखिअ थीर ॥ ४ ॥
धसमस करए धरिअ कुच जाति
सगर सरीर धरए कत भान्ति ॥ ५ ॥
गोपहि न पारिअ तखन हुलास
मुन्दला कमल वेकत होअ हास ॥ ६ ॥

(२०६)

परक पेअसि आनलि चोरी
साति अङ्गिरलि आइति तोरी ॥ १ ॥
तोहि नही डर ओहि नहि लाज
चाहसि सगरि निसि समाज ॥ २ ॥
राख माधव राखहि मोहि
तुरित(हि) घर पठावह ओहि ॥ ३ ॥
तोहे न मानह हमर वाध
पुनु दरसन होइति साध ॥ ४ ॥
ओहोओ मुगुधि जानि न जान
संशय पलल पेम-परान ॥ ५ ॥
तोहहु नागर अति गमार
हठे कि होइअ समुद पार ॥ ६ ॥

(२०७)

आदरि आनलि परेरि नारी कता कठिन दुतर तारी ॥ १ ॥
गेले सम्भव तोहह तँहा एखने पलटि जाएव कँहा ॥
न कर माधव हेनि उकुती पुनु पठावए चाहिअ दूती ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आनि बिसारिअ भावक भोरा गरुअ नीलज मानस तोरा ॥४॥
हाथक रतन तेजह कोहे के बोल नगर नागर तोहे ॥ ५ ॥

वरलीरागे

(२०८)

कुटिल विलोक तन्त नहि जान
मधुरहु वचने देइ नहि कान ॥ १ ॥
मनसिज-भङ्गे बचन मञे जेओ
हृदय बुझाए बुझए नहि सेओ ॥ २ ॥
कि सखि करब कओन परकार
मिलल कन्त मोहि गोप गमार ॥ ३ ॥
कपट गमन हमे लाउलि वेरि
वाहु-मूल-दरसन हसि हेरि ॥ ४ ॥
कुच-जुग वसन सम्भरि कहु देल
तइअओ न मन तन्हिकर हरि भेल ॥ ५ ॥
विमुख होइते आवे पर उपहास
तनिके सङ्गे कला सहवास ॥ ६ ॥
कि कए कि करब हमे झखइते जाए
कह दहु अरे सखि जिवन उपाए ॥ ७ ॥

(२०९)

कन्द भरम सम्भ्रम सम्भार नयने जगाए अनङ्गे ॥ १ ॥
आसा दए अनुराग वढाओब लङ्गिम अङ्ग-विभङ्गे ॥ २ ॥
कामिनि तोहे उपदेश धरव जे सुन सुन सुललित वानी ॥ ३ ॥
नागरपन किछु कहवा चाहिअ कहलेओ बुझए सयानी ॥ ४ ॥
कोकिल कूजित कण्ठ वढाओ(व अनुरञ्जब रितुराजे) ॥ ५ ॥
मधुर हासे मुखमण्डल मण्डब तिला एक तेजव लाजे ॥ ६ ॥
कैतव कए कातरता दरसब गाढ आलिङ्गन दाने ॥ ७ ॥
कोप कला पर रोष न मानव अधिक न करबे माने ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम-पसेमनि सह तनु दरसब मुकुलित लोचन हेरी ॥ ९॥
नखे हरि पिआ मनि-दाम छडाओब सुरत वढाओब वेरी ॥१०॥
जूझल मनमथ पुनु जुझाओब केलि-रभस परचारी ॥ ११ ॥
गेल भाव जे पुनु पलटावए सेहे कलामति नारी ॥ १२ ॥
सुख-सम्भोग सरस कवि गावए बूझ समय पचवाने ॥ १३ ॥
राजा सिवसिंह रूपनाराएण विद्यापतिकवि भाने ॥ १४ ॥

(२१०)

हसि निहारए पलटि हेरि लाजे कि बोलब साझक वेरी ॥ १ ॥
आरति हठे हरलन्हि चीर सून पयोधर काप शरीर ॥ २ ॥
सखि कि कहब कहइते लाज गोरू चि(ह्न) एके गोपक काज ॥ ३ ॥
निवि निरासलि फूजलि वास ततओ देषि न आवए पास ॥ ४ ॥
आओर की कहब सिनेह(क) वानि काजरे दूध पखालल आनि ॥५॥
सखि बुझावए धरिए हाथ गोप बोलावए गोपी साथ ॥ ६ ॥
तोहे न चिन्हह रसक भाव बडे पुने (गुनमति) पुनमत पाव ॥७॥
आबे कि कहह तन्हिकि वानी कसि(अ) कसौटी अएलाहु जानी ॥

(२११)

कतए गुजा कतए फूल
कतए गुजा रतन तूल ॥ १ ॥
जे पुनु जानए मरम साच
रतन तेजि न किनए काच ॥ २ ॥
अरे रे सुन्दर उतर देह
कओन कओन गुण परेषि लेह ॥३॥
अनेके दिवसे कएल मान
मधु छाडि आन न मागए दान ॥४॥
ऐसन मुगुध थीक मुरारी
गावउ भषए अमिअ छाडि ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वरलीरागे

(२१२)

जखने जाइअ सयन पासे
मुख परेखए दरसि हासे ॥ १ ॥
तखने उपज अहेन भाने
जगत भरल कुसुम-बाने ॥ २ ॥
की सखि कहब केलि-विलासे
निज अनाइति पिआ-हुलासे ॥ ३ ॥
नीवि विघटए गहए हारे
सीमा लाघए मन – विकारे ॥ ४ ॥
सिनेह जाल वढावए जीवे
सङ्गहि सुधा अधर पीवे ॥ ५ ॥
हरषि हृदय गहए चीरे
परसे अवस कर सरीरे ॥ ६ ॥
तखने उपजु अइसन साधे
न दिअ समय न दिअ वाधे ॥ ७ ॥
भने विद्यापति ओहे सजानी
अमिअ मिश्रल नागरि वानी ॥ ८ ॥

(२१३)

जौवन चाहि रूप नहि ऊन धनि तुअ विषय देषिअ सबे गून ॥१॥
...एके प(ए) भेल विधाता भोर सम कए सामि न सिरिजल तोर ॥२॥
कि कहब सुन्दरि कहइते लाज से कहले पुनु तोह हो काज ॥ ३ ॥
मन्दाहु काज उकुति भल भेलि ते मञे किछु अनुमति तोहि देलि ॥४॥
जओ तोहे बोलह करञो इथि अङ्ग चोरी पेम चारि गुण रङ्ग ॥५॥
दुर कर अगे सखि अइसन वानि अमिअ खोअउविसि साङ्करे सानि॥६॥
छैलक उकुति कहइते नहि ओर अरथक गरुअ वचनकें थोल् ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन-सार जौवन जग-रङ्ग जौवन तञो जञो सुपुरुष-सङ्ग ॥ ८ ॥
सुपुरुष पेम कबहुं नहि छाड दिने दिने चान्द-कला जञो बाढ ॥९॥

(२१४)

अम्बरे वदन झपावह गोरि
राज सुनइछि चान्दक चोरि ॥ १ ॥
घरे घरे पहरी गेल अछ जोहि
अबही दूषण लागत तोहि ॥ २ ॥
सुनु सुनु सुन्दरि हित-उपदेश
सपनेहु जनु हो विपदक लेश ॥ ३ ॥
हास-सुधारस न कर उजोर
धनिके वनिकें धन बोलब मोर ॥ ४ ॥
अधर समीप दसन कर जोति
सिन्दुर सीम वैसाउलि मोति ॥ ५ ॥

(२१५)

कतन दिवस लए अछल मनोरथ
हरिसञो लाओब नेहा ॥ १ ॥
से सबे सुफल भेल विहि अभिमत (भेल)
सहजहि आएल मोर गेहा ॥ २ ॥
सखि हे जनम कृतारथ भेला ॥ ३ ॥
वदन निहारि अधर-रस पिउलन्हि
हरि परिरम्भण देला ॥ ४ ॥
पीन पयोधर दरसि परसलन्हि
निवि-बन्ध फोएलन्हि पाणी ॥ ॥ ५ ॥
तखने उपजु रस भेलिहुं परवस
बोललन्हि सुललित वानी ॥ ६ ॥

(२१६)

वचनक वचने दन्द पए बाढल
.....धरि गेला ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अबला गोप कओने की बोलब
झीसी कादव भेला ॥ २ ॥
नरि-पुरुष हठसिल दिने दिने ॥ ३ ॥
(पुरुब)-पेम आवे तन्हि विसरल
विनु वाहले पह खीन ॥ ४ ॥
कत बोलब, कत मओ जे सिखाउलि
कत पलुलाहु मओ पाओ ॥ ५ ॥
दबा वाङ्क कओने सरिआओब
तेउ विन मील कराओ ॥ ६ ॥

(२१७)

सौरभ-लोभे भमर भमि आएल
पुरुब--पेम—विसवासे ॥ १ ॥
बहुत कुसुम मधु-पान-पिआसल
जाएत तुअओ पासे ॥ २ ॥
मालति करिअ हृदय परगासे ॥ ३ ॥
कत दिन भमरे पराभव पाओब
भल नहि अधिक उदासे ॥ ४ ॥
कओनक अभिमत के नहि राखए
जीवओ दए जग हेरि ॥ ५ ॥
की करब तेँ धन अध जीवने
जे नहि विलसए वेरि ॥ ६ ॥
सबहि कुसुम मधु पान भमर कर
सुकवि-विद्यापति भाने ॥ ७ ॥

(२१८)

काजरे राँङ्गलि मओ जनि राति
अइसना बाहर होइते साति ॥ १ ॥
तलितहु तेजलि मित अन्धकाल
आसा-संशय परु अभिसार ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भल न कएल मञो देल विसवास
निकट जोएन-सत कान्हक वास ॥ ३ ॥
जलद-भुअङ्गम दुहु भेल सङ्ग
निचल निशाचर कर रस-भङ्ग ॥ ४ ॥
मन अवगाहए मनमथ-रोस
जिवञो देले नहि होए भरोस ॥ ५ ॥
अगमन-गमन बुझए मतिमान
विद्यापतिकवि एहु रस जान ॥ ६ ॥

(२१९)

अघट–घट घटावए चाहसि वचन बोलसि हसी ॥ १ ॥
आनहि आनहि पेम–वचना तञो सखि वसन-वसी ॥ २ ॥
सुन्दर देहा, विजुरी–रेहा, गगन–मण्डल सोभे ॥ ३ ॥
जतने रतन जे नहि पाबिअ तँ कके करिअ लोभे ॥ ४ ॥
सुन्दरि तोके बोलञो पुनु–पुनु वेरा एक परिहासे ॥ ५ ॥
मञो खेँ ओल ओ बोल बोलह जनू ॥ ६ ॥
कथा अमी कथा तुमी पार ओआरि वासा ॥ ७ ॥
जे निरवाह करए नहि पारिअ ता कके दीअए आसा ॥८॥
कामनि कुलक धरम निआञो कैसेँ अगिरति पास ॥९॥
सुरत-सुख निमेष वेरा जाब जीव उपहास ॥१०॥

(२२०)

माधवे आए कवाल उवेलि जाहि मन्दिर छलि राधा ॥ १ ॥
आलस कोपे आडहसि हेरलन्हि चान्द उगल जनि आधा ॥ २ ॥
माधव विलखि वचन बोल राही ॥ ३ ॥
जौवन-रूप-कला गुण-आगरि के नागरि हम चाही ॥ ४ ॥
माधुर-नगर विलम्ब हम लागल कके न पठओलह दूती ॥ ५ ॥
जन दुइ-चारि वनिक हम भेटल तठमाहु रहलाहु सूती ॥ ६ ॥
तुअ चञ्चल-चित थपना नहि थिर महिमा धार न धीरे ॥ ७ ॥
कुटिल कटाख मन्द हषि हेरलन्हि मितरहु श्याम सरीरे ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२२१)

सुनि सिरिखँड तरु ते मञे गमन करु
तेजत विरह-कलापे ॥ १ ॥
आरति अएलाहु मञे कुभिलएलाहु
के जान पुरुब कञोन पापे ॥ २ ॥
माधव तुअ मुख-दरसन लागी ॥ ३ ॥
वेरि वेरि आबञो उतर न पावञो
भेलाहु विरह-रस भागी ॥ ४ ॥
जतहि तेजल गेह सुमरि तोहर नेह
गुरुजने जानब तावे ॥ ५ ॥
एतए निठुर हरि जाएब कमने परि
ततहु अनादर आवे ॥ ६ ॥

(२२२)

गुञ्जा आनि मुकुता हमे गाथल बुझलि तुअ परिपाटी ॥ १ ॥
कञ्चनताहि अधिक कए कहलह काचहुतह भेल घाटी ॥ २ ॥
दूती अइसन तोहार वेवहारे ॥ ३ ॥
नगर सगर भमि जोहल नागर भेटल निछछ गमारे ॥ ४ ॥
बड सुपुरुष बोलि सिनेह वढाओल दिने दिने होइति बडाई ॥५॥
तेली—वलद थान भल देषिअ पालव नहि उजिआई ॥ ६ ॥
सब गुण-आगर सबतहु सूनिअ ते मञे लाओल नेहे ॥ ७ ॥
फल-कारणे तरु अवलम्बल छाहरि भेल सन्देहे ॥ ८ ॥

(२२३)

प्रथमहि कतन जतन उपजओलह
तें आनलि पर-रामा ॥ १ ॥
बोललह आन आन परिणति भेलि
आवे परजन्तक ठामा ॥ २ ॥
माधव आबे बुझलि तुअ रीती ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जे बेरि बले चेतन भेलिहु
पुनु न करब पततीती ॥ ४ ॥
बाट हेरि वर-नागरि रहलि
सून सङ्केत निसि जागी ॥ ५ ॥
जे नहि फले निरवाहए पारिअ
सेहे करिअ का लागी ॥ ६ ॥

(२२४)

करतल लीन दीन मुख - चन्द
किसलय मिलु अभिनव अरविन्द ॥१॥
अह-निसि नयने गलए जल-धार
खञ्जने गिलि उगिलल मोतिम-हार ॥२॥
कि करति ससि-मुखि कि पुछसि आन
विनु अपराधे विमुख भेल कान्ह ॥३॥
विरह विखिन तनु भेल हरास
कुसुम सुखाए रहल अछ वास ॥४॥
झखइते संसय पलुल परान
अबहु न उपसम कर पचवान ॥५॥
विद्यापति भन (कवि)कण्ठहार
विरह-पयोनिधि होएब पार ॥६॥

(२२५)

हरि-रिपु-रिपु-सुअ-अरि-बल-भूषण तसु भोअण अछ ठामा ॥१॥
पञ्चवदन-अरि-वाहन-रिपु-सुत-सुत-अरि पए ले नामा ॥२॥
माधव कत परबोधबि रामा ॥३॥
सुरभि-तनय-पति-सिरोमणि-दूषण रहत जनम धरि ठामा ॥४॥
खचर - चरन - नयनानल पैसति राघबि कत दिन आसे ॥५॥
कि हर-बान-वेद गुणि खाइति जदि न आओब तोहे पासे ॥६॥
रवि-सुअ-तनय दैए परबोधलि बाढति कओन बडाई ॥७॥
अम्बर सेष लेख दए आसिष विहि हलु झगल छडाई ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२२६)

गगन तीन हे तिलक-अरि-जुवनी तसु सम नागर बानी ॥१॥
सिन्धु-बन्धु-अरि-वाहन-गन सवि हरि हरि सुमर गोआली ॥२॥
माधव निरमति भुजगि मखाई ॥३॥
अब्ज—बन्धु—तनया—सहोदर तसु पुर देति वसाई ॥४॥
अथे तनं जुविनी बन्धु नहि दे(अ) हरितह धरणि लोटाई ॥५॥
हरि-आरूढि सेहओ न परंसए दाहिन हरि न सोहाई ॥६॥
हरि-निधि अवनत आओर कहति कत चारि दुआर रच राही ॥
तीनि-दोस अपने तोहे कएलह चारिम भेल उपाई ॥८॥

(२२७)

दखिन पवन वह मदन धनुषि गह तेजल सखी-जन मेल्ली ॥१॥
हरि-रिपु-रिपु-सुत-सुत-तनय-रिपु कए रहु ताहेरि सेरी ॥२॥
माधव तुअ विनु धनि बाहु खिनी ॥३॥
वचन न धर मन बहुत खेद कर अदबुद ताहेरि कहिनी ॥४॥
मलयानिल हार तसु पीवए मनमथ ताहि डराई ॥५॥
आतुर भइए जत भरहि निवारब तुअ विनु विरह न जाई ॥६॥

(२२८)

त्रिवलि तरङ्गिणि पुर दुग्गम जनि
मनमथे पत्र पठाउ ॥ १ ॥
जौवन दल-पति समए तोहर
रति-पति दूत पठाऊ ॥ २ ॥
माधव आवे साजिअ दहु बाला ॥ ३ ॥
तसु सैसवे तोहे जे सन्तापलि
से सरिआउति बाला ॥ ४ ॥
कुण्डल-चक्र-तिलक-अङ्कुस कए
चन्दन-कवच अभिरामा ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नयन-कटाख बान गुन धनु दए
साजि रहलि अछि रामा ॥ ६ ॥
सुन्दरि साजि खेत चलि आइलि
विद्यापतिकवि भाने ॥ ७ ॥

(२२९)

सहजहि तनु खिनि, माझ वेवि सनि, सिरिसि-कुसुम सम काया ॥१॥
तोहे मधु-रिपु, पति, कैसे धरति रति, अपुरुब मनमथ-माया ॥ २ ॥
माधव परिहर हढ परिरम्भा ॥ ३ ॥
भागि जाएत मन (अफल) जीव सन मदन-विटपि आरम्भा ॥ ४ ॥
सैसव अछल, से डरे पलाएल, जौवन नूतन वासी ॥ ५ ॥
कामिनि, कोमल, पाँहोन पचसर, भए जनु जाह उदासी ॥ ६ ॥
तोहर चतुरपन, जखने धरति मन, रस बूझति अवसेखी ॥ ७ ॥
एखने अलप-बुधि, न बुझ अधिक सुधि, केलि करब जिव राखी ॥ ८ ॥
तोहे जे नागर-मनि, ओ धनि जीव सनि, कोमल काच सरीरा ॥ ९ ॥
ते परि करब केलि, जे पुनु होअ मेलि, मूल राख वनिजारा ॥१०॥
हमरि अइसनि मति, मन दए सुन, दुर्ति, दुर कर सब अनुतापे ॥११॥
जओ अति कोमल, तैअओ न ढरि पल, कवहु भमर भरे कापे ॥१२॥

(२३०)

हरि विसरल बाहर गेह वसुह मिलल सुन्दर देह ॥ १ ॥
साने कोने आवे बुझए बोल मदने पाओल अपन तोल ॥ २ ॥
कि सखि कहब कहैते धाष खखन्दे जओरा कतए राख ॥ ३ ॥
अपथ पथ परिचय भेल जनम आँतर बेडा देल ॥ ४ ॥
गमने कैतवे करसि ओज परेओ परक करए षोज ॥ ५ ॥
ओछेओ जाति जोलहा जेओ ओल धरि नहि बुनए सेओ ॥ ६ ॥
देखल सुनल कहब (कि) तोहि पुनु कि बोलि पठाउति मोहि ॥ ७ ॥
सङ्गहि गमन सरस रस भान इ रस रूप नराएण जान ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२३१)

कुल-कामिनि भए कुलटा भेलिहु
किछु नहि गुनले आगु ॥ १ ॥
सबे परिहरि तुअ आधीनि भेलिहु
आबें तुअ आइति लागु ॥ २ ॥
माधव, जनु होअ पेम पुराने ॥ ३ ॥
नव अनुराग ओल धरि राखब,
जे न विघट मोर माने ॥ ४ ॥
सुमुखि-वचन सुनि, माधवे मने गुनि,
अङ्गिरल कए अपराधे ॥ ५ ॥
सुपुरुषसञो नेह, विद्यापति कह,
ओल धरि हो निरवाहे ॥ ६ ॥

(२३२)

की कान्हु निरेषह भौह-विभङ्ग
धनु मोहि सोपि गेल अपन अनङ्ग ॥ १ ॥
कञ्चने कामे गढल कुच-कुम्भ
भगइते मलब देइते परिरम्भ ॥ २ ॥
चतुर सखी-जन लाबथि नेह
आसे पसाहि वाङ्क शसि-रेह ॥ ३ ॥
राहु-तरास चान्दसञो आनि
अधर-सुधा मनमथे घरु जानि ॥ ४ ॥
जिव जञो राखञो रहञो अगोरि
पिबि जनु हलह लागति मोरि चोरि ॥ ५ ॥
कैतव करथि कलामति नारि
गुन-गाहक पहु बुझथि विचारि ॥ ६ ॥

ललितरागे

(२३३)

प्रथमहि गिरि-सम गौरव भेल हृदयहु हार आन्तर नहि देल ॥ १ ॥
सुपुरुष-वचन कएल अवधान भल-मन्द बुझब दुअओ अवसान ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चल चल माधव भलि (नहि) तुअ रीति पिसुन-वचने परिहरलि पिरीति।
परक वचने पहु आपल कान तहिखने जानल समय समान ॥ ४ ॥
आवे अपदहु हरि तेज(ह) अनुरोध काहुक जनु हो विहिक विरोध ॥
न भेले रङ्ग रभस दुर गेल इथि हम खेद एकओ नहि भेल ॥ ६ ॥
एके पए-खेद जे मन्दा समाज भलेहु तेजल आवे आषिक लाज ॥ ७ ॥
भनइ विद्यापति हरि-मने लाज काहुका जनु हो मन्दा समाज ॥ ८ ॥

(२३४)

रयनि समापलि फुलल सरोज
भमि भमि भमरी भमरा षोज ॥ १ ॥
दीप मन्द-रुचि अम्बर रात
जुगुतहि जानल भए गेल परात ॥ २ ॥
अबहु तेजह पहु मोहि न सोहाए
पुनु दरसन होत मोहि मदन दोहाए ॥ ३ ॥
नागर राख नारि-मन-रङ्ग
हठ कएले पहु हो रस-भङ्ग ॥ ४ ॥
तत करिअए जत फावए चोरि
परसन रस लए न रहिअ अगोरि ॥ ५ ॥

(२३५)

अधर भगइते अओध कर माथ सहए न पार पयोधर हाथ ॥ १ ॥
विघटलि नीवी करे धर जान्ति अङ्कुरल मदन धरए कत भान्ति ॥२॥
कोमल कामिनि नागर नाह कओने परि होएत केलि निरवाह ॥३॥
कुच कोरक तरे कर (ग)हि लेल काच वदर अरुण रुचि भेल ॥ ४ ॥
..... ॥ ५ ॥
लावए चाहिअ नखर विशेष भौह न आटए चान्दक रेष ॥ ६ ॥
तुअ मुख सो लोभे रहु हेरि चान्द झपाव वसन कत वेरि ॥ ७ ॥

(२३६)

माधव मास तीथि भउ माधव
अवधि कइए पिआ गेला ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुच-युग-संभु परसि करे बोललन्हि
ते परतिति मोहि भेला ॥ २ ॥
सखि हे कतहु न देषिअ मधाई ॥ ३ ॥
काँप सरीर थीर नहि मानस
अवधि निअर भेल आई ॥ ४ ॥
चान्दन अगर मृग-मद कुङ्कुम
के बोल सीतल चन्दा ॥ ५ ॥
पिआ-विसलेखे अनल जञो वरिसए
विपति चिन्हिअ भल-मन्दा ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति अरे रे कलामति
अवधि समापल आजी ॥ ७ ॥
लाख-देवि-पति पुरिह मनोरथ
आबिह सिवसिंह राजा ॥ ८ ॥

(२३७)

आएल वसन्त सकल वन-रञ्जक कुसुम वान सानन्दा ॥ १ ॥
फूललि मालि भूषल भमरा पिबि गेल मकरन्दा ॥ २ ॥
मानिनि आवे कि करिअ अवधाने ॥ ३ ॥
नहि नहि कए परिजने परिबोधह जुगुति देषञो तोरि आँने ॥ ४ ॥
विनु कारणे कुन्तल कैसे आकुल करञो जुगुति किछु ओछी ॥ ५ ॥
कुमढाकेरि चोरि भलि फाडलि कान्ध न आएलाह पोछी ॥ ६ ॥

नाटरागे

(२३८)

सपने देषल हरि उपजल रङ्गे
पुलक पुरल तनु जागु अनङ्गे ॥ १ ॥
वदन मेराए अधर-रस लेला
निसि अवसान कान्ह कहा गेला ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का लागि नीन्द भागलि विहि मोरा
न भेले सुरत-सुख लागल भोरा ॥ ३ ॥
मालति पाओल रसिक भमरा
भेल वियोग करम-दोस मोरा ॥ ४ ॥
निधने पाओल धन अनेके जतने
आँचर सओ सखि पल्लल रतने ॥ ५ ॥

(२३९)

रअनि काजर वम, भीम भुअङ्गम, कुलिस पलए दुरवार ॥ १ ॥
गरज तरज मन, रोसे वरिस घन, संसय पलु अभिसार ॥ २ ॥
सजनी वचन बोलइते मोहि लाज ॥ ३ ॥
से जानि जे होउ, सवे वरु अगिरु, साहस मन देल आज ॥ ४ ॥
ठामहि रहिअ घुमि, परसे चिन्हअ भुमि दिग मग उपजु सन्देहा ॥५॥
हरि हरि सिव सिव, तावे जाइह जीव, जावे न उपजु सिनेहा ॥६॥
चरन वेढले फनि, हित कए मानल धनि, नूपुर न करत रोर ॥ ७ ॥
सुमुखि पुछओ तोहि सरूप कहसि मोहि पेमक कतएक ओर ॥ ८ ॥
अपन सुहित मित देखिअ से परतख न पाइअ पेमक ओर ॥९॥
चाँद हरिन वह राहु कवल सह पेम पराभव थोर ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनहु सुचेतनि गमन न करह विलम्बे ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल कला अविलम्बे ।

विभासरागे

(२४०)

सुरुज सिन्दुर विन्दु, चान्दने लिहए इन्दु, तिथि कहि गेलि तिलके ॥१॥
विपरित अभिसार, अमिअ गलए धार, अङ्कुस कएल अलके ॥२॥
माधव भेटलि पसाहन वेरी ॥३॥
आदर हरलक, पुछिओ न पुछलक चतुर सखी-जन-मेली ॥ ४ ॥
केतकि दल लए, चम्पक दल दए, कवरी थोएलक आनी ॥ ५ ॥
चन्दने कुङ्कुमे अङ्ग-रुचि कएलक, समय निवेद सयानी ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२४१)

कामिनि वदन वेकत जनु करिहह चौदिस होएत उजोरे ॥ १ ॥
चान्दक भरमे अमिअ-लालच जैठ कए जाएत चकोरे ॥ २ ॥
सुन्दरि तुरित चलहि अभिसारे ॥ ३ ॥
अवहि उगत ससि तिमिरे तेजब निसि उसरत मदन-पसारे ॥ ४ ॥
मधुरे वचने भरमहु जनु बाजह सौरभे जानत आने ॥ ५ ॥
पङ्कज-लोभे भमरे भमि आओब करब अधर-मधु पाने ॥ ६ ॥
भने रसभाविनि मधुके जामिनि आएल चाहिअ निज गेहा ॥ ७ ॥

(२४२)

प्रथमहि कएलह हृदयक हार
बोललह तजे मोरि जिवन अधार ॥ १ ॥
अइसनेओ हठे विघटओलह पेम
जइसन चाँतरिआ हाथक हेम ॥ २ ॥
जे धर हरिसओ सिनेह बढाए
जत अनुसए तत कहहि न जाए ॥ ३ ॥
दुरजनि दूतीतह ई भेल
गिरि-सम गौरव सेहओ दुर गेल ॥ ४ ॥

(२४३)

रिपु पचसर, जनि अवसर, सरासन साजे ॥ १ ॥
हेरि सून पथ, घटी मनोरथ,
के जान कि होइति आजे ॥ २ ॥
निफल भेलि जुगती ॥ ३ ॥
हरि हरि हरि राति तेज
हरि पलटलि नहि दूती ॥ ४ ॥
साजि अभिसारा पडि अन्धकार(ा)
उगि जनु जा बोरा ॥ ५ ॥
आरति-बेरा जओ हो मेरा
लाख कुनो सुअ थोरा ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२४४)

झाखि झाखि न खिन कर तनू
भमर न रह मालति बिनु ॥ १ ॥
ताहि तोहि रिति बाढति पुनू
टूटलि वचन बोलह जनू ॥ २ ॥
एहे राधे धैरज धरू
बालमु अओताह उछाह करू ॥ ३ ॥
पिसुन-वचने बाढत रोस
वारए न पारिअ दिवस दास ॥ ४ ॥
सुजन-वचन टुट न नेहा
हाथे न मेट पखान क रेहा ॥ ५ ॥

(२४५)

जे छल से नहि रहले भाव बोललि बोल पलटि नहि आव ॥ १ ॥
रोस छडाए बढाओल हास रुसल वओसव वडे परेआस ॥ २ ॥
कओने परि हरि से बहुरत माइ हे कओने परी ॥ ३ ॥
नारि-सभाव कएल हमे मान पुरुष विचखन के नहि जान ॥ ४ ॥
आदरे मोरा हानि गए भेल वचनक दोसे पेम टुटि गेल ॥ ५ ॥
नागरे नागरि हृदयक मेलि पाचवान-बले बहुलत केलि ॥ ६ ॥
अनुनए मोरि बुझाउबि रोए वचनक कौशले की नहि होए ॥ ७ ॥

(२४६)

नहि किछ पुछलि रहलि धनि बैसि
लगसओ आइलि बहारे ॥ १ ॥
परम विरुहि भए नहि-नहि-नहि कए
गेलि दुर कए मोर करे ॥ २ ॥
माधव कह कके रुसलि रमणी ॥ ३ ॥
कते जतने पेअसि परिबोधलि
न भेलि निअरेओ आनी ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोर कलेवर तसु मुख ससधर
रोसे अनरुचि भेला ॥ ५ ॥
रुप-दरसन छले जनि नव रतोपले
कामे कनक-वलि देला ॥ ६ ॥
नयन-नीर-धारे जनि टूटल हारे
कुच सिलि पहरि पलला ॥ ७ ॥
कनक-कलस करु मदने अमिञ भरु
अधिक कि उभरि पलला ॥ ८ ॥

(२४७)

पहिलहि चोरि आएल पास आङ्गहि आङ्ग नुकाव तरास ॥ १ ॥
बाहरि भेले देषिञ देह जैसन सिनी-चान्दक रेह ॥ २ ॥
साजनि की कहब पुरुष(क) काज कौसल करइते तन्हि नहि लाज ॥३॥
एहितह पाप अधिक थिक नारि जे न गनए पर-पुरुषक गारि ॥ ४ ॥
खन एक रङ्ग (रभस) सब भान्ति से करत जकरि जे जाति ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति न कर विराम अवसर पाए पुरत तुअ काम ॥ ६ ॥

(२४८)

साझक बेरि उगल नव शशधर भरमे विदित सबतहू ॥ १ ॥
कुण्डल-चक्र-तरासे नुकाएल दुर भेल हेरथि राहू ॥ २ ॥
जनु वैससि रे वदना हाथ चळाई ॥ ३ ॥
तुअ मुख चङ्गिम अधिक चपल भेल कति खन धरब लुकाई ॥ ४ ॥
रातोपल जनि कमल बैसाओल नीलनलिन-दल-तहू ॥ ५ ॥
तिलक-कुसुम तहु माझ देषि कहु भमर आवथि नहु नहू ॥ ६ ॥
पाणि-पलव-गत अधर-विम्ब-रत दसन दालिम्ब विज तोरे ॥ ७ ॥
कीर दूर भेल पास न आबए भौह धनुहिके भोरे ॥ ८ ॥

(२४९)

जकर नयन जतहि लागल
तातहि सिथिल गेला ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तकर रूप सरूप निरूपए
काहु देखि नहि मेला ॥ २ ॥
कमल वदन राही (रे) ॥ ३ ॥
जगत तकर पुन सराहिअ
सुन्दरि मीलति जाही रे ॥ ४ ॥
पीन पयोधर चीबुक चुम्बए
कीए पटतर देला ॥ ५ ॥
वदन-चान्द-तरासे लुकाएल
पलटि हेर चकोरा ॥ ६ ॥

(२५०)

प्रथम समागम के नहि जान
सम कए तौलल पेम-परान ॥ १ ॥
मधथहु न बुझल तुअ परिपाटी
राउल वनिक घरहि-घर साटी ॥ २ ॥
कि पुछह अगे सखि कि कहिबो आँन
बुझए न पारल हरिक गेआन ॥ ३ ॥
विकनए आनल रतन अमूल
देषितहि बनिके हराओल मूल ॥ ४ ॥
सुलभ भेल पहु न लहए हार
काच तुला दए गहए गमार ॥ ५ ॥
गुरुतर रजनी वासर छोटि
पासङ्ग दूती विषए नहि षोटि ॥ ६ ॥
कसल कसौटी न भेल मलान
विनु हुतासे भेल बारह वान ॥ ७ ॥
भनइ विद्यापति थिर रहु रानि
लाभ न घटए मूलहु हो हानि ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२५१)

साँझहि निअ मकरन्द पिआए कमलिनि भमरा धएलि लुकाए ॥ १ ॥
भमि भमि भमरी बालमु षोज मधु पिबि भमरा सुतल सरोज ॥ २ ॥
केओ न कहए मझु बालमु बात रयणि समापलि भए गेल परात ॥३॥
लता-विलासिनि खण्डित भेलि जामिनि सगरि उजागरि गेलि ॥ ४ ॥
न (फूल) कुशेशय न उग सूरे सिनेह न जाए जीवसओ दूरे ॥ ५ ॥

(२५२)

पाहुन आएल भवानी
बाघ-छाल वइसए दिअ आँनी ॥ १ ॥
वसह चढल बुढ आवे
धुथुर गजा ए भोजन हुनि भावे ॥ २ ॥
भसम विलेपित आङ्गे
जटा वसथि सिर सुरसरि गाङ्गे ॥ ३ ॥
हाडमाल फणिमाल शोभे
डँवरु वजाव हर जुवतिक लोभे ॥ ४ ॥
विद्यापतिकवि भाने
ओ नहि बुढवा जगत किसाने ॥ ५ ॥

(२५३)

आजे अकामिक आएल भेषधारी भीषि भुगुति लए चलालि कुमारी॥१॥
भीषिआ न लेइ बढावए रिसी वदन निहारए विहुसी हँसी ॥ २ ॥
ए उमा सखि सङ्गे निकेहि अछली ओहि जोगिआ देषि मुरुछि पलली॥३॥
दुर कर गुनपन अरे भेषधारी काँ डिठिअओलए राजकुमारी ॥ ४ ॥
केओ बोल देषए देहे जनु काहू केओ बोल ओझा आनि चाहू ॥५॥
केओ बोल जोगिआहि देहे दहु आनी हुनिकिओ भए वरु जिवओ भवानी॥
भनइ विद्यापति अभिमत सेवा चन्दनदेवि-पति बैजल-देवा ॥ ७ ॥

(२५४)

प्रथमहि शङ्कर सासुर गेला
विनु परिचय उपहास पलला ॥ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुछिओ न पुछलके वैसलाह जहा
निरधन आदर के कर कहाँ ॥ २ ॥
हेमगिरि मडप कौतुक वसी
हेरि हसल सवे बुढ तपसी ॥ ३ ॥
से सुनि गौरि रहलि सिर नाए
के कहत माके तोहर जमाए ॥ ४ ॥
साप सरीर काख बोकाने
प्रकृति औषध केदहु जाने ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति सहज कहू
आडम्बरे आदर हो सबतहू ॥ ६ ॥

(२५५)

केहु देखल नगना
भिषिआ मगइते बुल आङ्गने आङ्गना ॥ १ ॥
उगन उमत केहु देषल विधाता
गौरिक नाह अभय वरदाता ॥ २ ॥
विभुति भुषण कर वीस अहारे
कण्ठ वासुकि सिर सुरसरि धारे ॥ ३ ॥
केलि भूत सङ्गे रहए मसाने
तैलोक इसर हर के नहि जाने ॥ ४ ॥

वसन्तरागे

(२५६)

मोर वउरा देखल केहु कतहु जात
वसह चढल विस पान खात ॥ १ ॥
नाखि निरर मुह चुअइ लार
पथके चलत बौरा विसम्भार ॥ २ ॥
बाट जाइते केहु हलब ठेलि
अब ओहि बौरे विनु मज अकेलि ॥ ३ ॥
हाथ डवरु कर लौआ संख
जोग जुगुति गिम भरल माथ ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरगज चढाए अठहु आङ्ग
सिर सुरसरि जटा बोलइ गाङ्ग ॥ ५ ॥

(२५७)

कुवलय कुमुदिनि चौदिस फूल
कैरव कोकिल दह दिस बूल ॥ १ ॥
खने कर साद खनहि कर खेद
बैसल विषधर पढ जनि वेद ॥ २ ॥
आएल रे वसन्त ऋतुराज
भमर विरहे चलु भमरि समाज ॥ ३ ॥
उरि उरि परेवा सवे गोपि मेलि
कान्ह पैसल वन जनि कर केलि ॥ ४ ॥
गोपी हसलि अपन मुख हेरि
चान्द पलाएल हरिणक सेरि ॥ ५ ॥

गुञ्जरीरागे

(२५८)

ओतएक तन्त उदन्त न जानिअ एतए अनल वम चन्दा ॥ १ ॥
सौरभ-सार-भार अरुझाएल दुइ पङ्कज मिलु मन्दा ॥ २ ॥
कोकिल काञि सन्तावह काहू ॥ ३ ॥
ताओ धरि जनु पञ्चम गावह जावे दिगन्तर नाहू ॥ ४ ॥
मदनक तन्त अन्त धरि पलटए बुझितहु होसि अजानी ॥ ५ ॥
आजुक कालि कालि नहि बूझसि जौवन-बन्ध छुट पानी ॥ ६ ॥
पिआ अनुरागी तओ अनुरागि(नि) दुहु दिस बाढु दुरन्ता ॥ ७ ॥
मओ वरु दसमि दसा गए अङ्गिरल कुसले आवथु मोर कन्ता ॥ ८ ॥
पाडरि-परिमल आसा पूरथु मधुकर गावथु गीते ॥ ९ ॥
चान्द रयनि दुहु अधिक सोहाउनि मोहि पति सबे विपरीते ॥ १० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वसन्तरागे

(२५९)

कतन झोरी सिन्दुरे भरलि भसमे भरु वोकान ॥ १ ॥
वसह केसरि मजूर मुसा चारुहु पलु पलान ॥ २ ॥
डिमकि डिमकि डवरु वाजए इसर खेलए फागु ॥ ३ ॥
भसमे सिन्दुरे दुअओ खेडा एकहि दिवसे लागु ॥ ४ ॥
सझाँञे सिन्दुरे भरु सरुसिति लाछीहि भरलि गोरी ॥ ५ ॥
इसरे भसमे भरु नराएन पीत वसन वोरी ॥ ६ ॥
एक तओ नागट अओके उमत इसर घुथुर खाए ॥ ७ ॥
अओके उमति खेडि खेलावए किछु न वोलए जाए ॥ ८ ॥
गरुड-वाहन देव नराएन वसह चढु महेस ॥ ९ ॥
भने विद्यापति कौतुके गोओल सङ्गहि फीरथि देस ॥१०॥

(२६०)

तरुअर वलि धर डारे जाँति
सखि गाढ अलिङ्गन तेहि भाति ॥ १ ॥
मओ नीन्दे निन्दारुधि करओ काह
सगरि रयनि कान्हु केलि चाह ॥ २ ॥
मालति-रस विलसए भमर जान
तेहि भाति कर अधर पान ॥ ३ ॥
कानन फुलि गेल कुन्द फूल
मालति मधु मधुकर पए गून ॥ ४ ॥
परिठवइ सरस कवि कण्ठहार
मधुसूदन राधा वन विहार ॥ ५ ॥

(२६१)

चल देखने जाउ ऋतु वसन्त
जहा कुन्द कुसुम कैतव हसन्त ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहा चन्दा निरमल भमरकार
रयनि उजागरि दिन अन्धार ॥ २ ॥
मुगुधलि मानिनि करए मान
परिपन्तिहि पेखए पञ्चबान ॥ ३ ॥
परिठवई सरस कवि-कण्ठहार
मधुसूदन-राधा-वन-विहार ॥ ४ ॥

(२६२)

जाहि देस पिक मधुकर नहि गूजर कुसुमित नहि कानने ॥१॥
छव ऋतु मास भेद नहि जानए सहजहि अवल मदने ॥२॥
सखि हे से देस पिअ गेल मोरा ॥३॥
रसमति वानी जतए न जानिअ सुनिअ पेम बड़ थोला ॥४॥
कहलिओ कहिनी जतए न बुझए की करति अङ्गित काजे ॥५॥
कओन परि ततहि रतल अछ बालभु निभय निगुण समाजे ॥६॥
हमे अपनाके धिक कए मानल कि कहब तन्हिकि बडाई ॥७॥
कि हमे गरुवि गमारि सबतह की रति-विरत कन्हाई ॥८॥

(२६३)

काच घटी अनुगत जल जेम नागर लखत हृदअगत पेम ॥
विद्यापति भन सुन वरनारि कतें रङ्ग सुरङ्ग मुरारि ॥
रूपनराअन एहु रस जान राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥

मालवराग

(२६४)

हसि निहारल पलटि हेरि, लाजें कि बोलब साँझक वेरि ॥१॥
हरखें आरति हरल चीर, सून पओधर, काम्प सरीर ॥२॥
सखि कि कहब कहइतें लाज, गोरू चिन्हए गोपक काज ॥३॥
निवि निरासलि, फुजलि आस, ततेओ देखि न आवए पास ॥४॥
अओ कत कहब मधुर बानि, काजर दूधें पखालल जानि ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सखि बुझावए धरिए हाथ गोप बोलावथि गोपी साथँ ॥६॥
तोहें न चिन्हह रसक भाव, बड़ें पुनें पुनमति पाव ॥७॥
भन विद्यापति तब्बे नारि पहुक दूषन दिअ विचारि ॥८॥
राजा रूपनरायेन जान सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥९॥

सुहवराग

(२६५)

तोहरा लागि धनि खिनि भेलि, तोहें बड बोलछड कान्ह ॥१॥
रूप-लोभ भेल, नेह दुर गेल, से थिर छाडल भाव ॥२॥
माधव, सुन्दरि समन्दए रोए ॥३॥
जदि तोहेँ चञ्चल सुनह सकन भए, अपना धन्ध नं कोए ॥४॥
आस दइए पर-पेअसि आनलि कुलसञो कुलमंति नारि ॥५॥
से ततबाहिं गेलि, डाईन सकल भेल, दुहु हल हृदअ विचारि ॥६॥
दूती बोलइते कान्ह लजाएल विद्यापतिकवि भाने ॥७॥
राजा सिवसिंह रूपनरायेन लखिमादेवि-रमाने ॥८॥

गुर्जरीराग

(२६६)

गुरुजन कहि दुरजनसञो वारि, कौतुकें फूटि करसि फुलवलि ॥१॥
कइतवें वारि सखीजन सङ्ग, अह-अभिसार दूर रति-रङ्ग ॥२॥
ए सखि, सुमुखि, वचन अनुमान, रातुक रति आरति समधान ॥३॥
अन्धकूप सम रअनि विलास, चोरक मन जञो वसए तरास ॥४॥
हरषित हो लङ्का कें राए, नागरे कि करब' नागरि पाए ॥५॥

वसन्तराग

(२६७)

नव रतिपति, नव परिमल, नागर नव, मलआनिल-धार ॥१॥
नवि नागरि नव नागर विलसए पुन फलेँ सबे सबे पार ॥२॥
मानिनि आब कि मान तोहार ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एत दिन मान भलेहुँ तोहें राखल पञ्चबान छल थोल ॥४॥
अबे अनङ्ग हे सरीरी देखिअ समअ पाए के बोल ॥५॥
विद्यापति कह के बसन्त सह मुनिहुँक मन हो लोभे ॥६॥
लखिमादेविपति रूपनराएन षटऋतु सबे रस सोभे ॥७॥

अहिरराग

(२६८)

सहज सुन्दर लोचन सीमा काजर अञ्जने न करु भीमा ॥१॥
तिलक दए मृगमद-मसी, बदन सरिस न कर ससी ॥२॥
चलहिँ सुन्दरि तेजि बेआज सुकृतेँ मिल सुपहु-समाज ॥३॥
पसर सौरभ की अङ्गरागे, उभअ-मन जदि अनुरागे ॥४॥
परिहर सखिकेर संग, मुखर-सुजन कहा सङ्ग ॥५॥
सरस कवि विद्यापति गावे मनक पाहुन मदन धावे ॥६॥
रूपनाराएन इ रस जाने रानिलखिमादेवि-रमाने ॥७॥

गुर्जरीराग

(२६९)

चिन्ताञे आसा कवलालि मोरि,
कान-कट्ठ भेलि कहिनी तोरि ॥१॥
मनओ फेदाएल अइसना काज,
पावनि दीप निझाएल आज ॥२॥
साजनि, कह कत कहिनी धन्ध,
बालाबन्ध छुटल अनुबन्ध ॥३॥
तञे जनितसि आओ दोसर कान्ह,
तेसर जनइत हमर परान ॥४॥
जत अनुराग राग केँ गेल,
मही गोप वध-भाजन भेल ॥५॥
विद्यापति भन बुझ रसमन्त
राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराग

(२७०)

बडेँ मनोरथेँ साजु अभिसार, पिसुन नअन वारि ॥१॥
काज न सिझल, तते वहल, हमे अभागलि नारि ॥२॥
साजनि हमर दिवस दोस ॥३॥
गरुअ पुरव-पाप-पराभव, कओने करेब रोस ॥४॥
न घर गेलुहु, न पर भेलुहुँ, न पुरु हृदअ-साध ॥५॥
आधहि पथ ससी हसि ऊगल तें भेल गमन-बाध ॥६॥
मोरे आसेँ पिआसल माधव, होएत मो वड पाप ॥७॥
सिव सिव सिव जाओ दुर जिव, सहए के पार सन्ताप ॥८॥
आपद अधिक धैरज करब, धैरज सबँ उपाए ॥९॥
भन विद्यापति होएत मनोरथ हरि रहु मन लाए ॥१०॥

धनछी राग

(२७१)

जलद वरिस जलधार, सर जञा पलए पहार ॥१॥
काजरें राङ्गलि राति, बाहर होइतें साति ॥२॥
साजनि अइसनि निसिँ अभिसार तोहि तेजि करए के पार ॥३॥
भमए भुअङ्ग भीम, पङ्केँ पुरल चौसीम ॥४॥
जलधर वीजु उजोर, तखने गरज घन घोर ॥५॥
भनइ विद्यापति गाव, महघ मदन परथाव ॥६॥

बरालीराग

(२७२)

काजर रंग वमए जनि राति,
अइसना बाहर होइतहुँ साति ॥ १ ॥
तलितहुँ तेज मिल अन्धकार,
आसा संसअँ पलु अभिसार ॥ २ ॥
भल न कएल मञे देल विसवास,
निकट जओन सत कान्हक वास ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जलद भुअङ्गम दुहु भेल सङ्ग, निचर निसाचर करए रस-रङ्ग ॥४॥
मन अवगाहए मनमथ रोस जीवओ देलें न होए भरोस ॥५॥
अपगम गमन बुझए मतिमान विद्यापतिकवि एहु रस जान ॥६॥

मालवराग

(२७३)

हृदअ तोहर जानि न भेला आनक रतन आनि मझे देला ॥१॥
कएल, माधव, हमे अकाज, हाथि मेलाउलि सिंह समाज ॥२॥
राख, माधव, मोरि विनती, देहे परिहरि पर-जुवती ॥३॥
चुम्बने नअन काजर गेला, दसने अधर खण्डित भेला ॥४॥
पीन पओधर नखरें मन्दा, जनि महेसर-सेखर चन्दा ॥५॥
न मुख वचन, न मन थीरे, काम्प घनहन सवे सरीरे ॥६॥
घर गुरुजन-दुजन-सङ्का लओलह माधव मोहि कलङ्का ॥७॥
भन विद्यापति तजे दुति भोरी चेतन गोपए वेकत चोरी ॥८॥

मालवराग

(२७४)

चरन कमल कदली विपरीत, हास कला से हरए साँचीत ॥१॥
के पतिआओब एहु परमान चम्पकें कएल पुहुवि निरमान ॥२॥
एरे माधव पलटि निहार अपरुब देखिअ जुवति-अवतार ॥३॥
कूप गभीर तरङ्गिनि-तीर जनमु सेमार-लता विनु नीर ॥४॥
चहकि चहकि दुइ खञ्जन खेल, काम-कमान चान्द उगि गेल ॥५॥
ऊपर हेरि तिमिरें करु वाद धमिलें कएल ताकर अवसाद ॥६॥
विद्यापति भन बुझ रसमन्त राए सिवसिंह लखिमादेवि कन्त ॥७॥

कोलावराग

(२७५)

थिर पद परिहरिए जे जन अथिरें मानस लाव ॥१॥
सब चाहिन दिने दिने खेल रत परतर पाव ॥२॥
साजनि, थिर मन कए थाक ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हठें जे जखने करम करिअ भल नहि परिपाक ॥४॥
बुधजन मन बुझि निवेदए सबे संसारेरि भाव ॥५॥
जखने जतें विभव रहए तखने तेहिँ गमाव ॥६॥
भन विद्यापति तजे जुवति चितेँ न झाँषहि आन ॥७॥

धनछीराग

(२७६)

तन्हिकरि धसमसि विरहक सोस,
तजे दिढ कए कैतव पोस ॥ १ ॥
सोलह सहस गोपी परिहार,
तन्हिकाहुँ कुल भेलिसि···जार ॥ २ ॥
मजे कि बोलब, सखि बोलइछ कान्ह
सब परिहरि नागरि तोहि मान ॥ ३ ॥
समअक वसेँ लहि सब अनुराग,
भलाहुक मन सन्देओ पद जाग ॥ ४ ॥
पिअरी दरसने नागर दूल,
धान्दू-गुने वनतुलसी फूल ॥ ५ ॥
विद्यापति भन बुझ रसमन्त,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥ ६ ॥

(२७७)

कांछिड कांछिअ ई वडि लाज विनु नञ्चले न छुटए काज ॥१॥
काछिअ जेहे वहाइअ सेह तवे से मिलए दुलभ नेह ॥२॥
साजनि झाटेँ कर अभिसार चोरी पेम संसारेरि सार ॥३॥
किछु न गुनब पथक सङ्का सिनी पलल वैरि कलङ्का ॥४॥
तोर गतागत जीवन मोर आसा पलल कन्हाई तोर ॥५॥
तन्हि पठओलाहुँ तोहर ठाम दाहिन वचन (छल से भेल) वाम॥६॥
तइओ तन्हिकि तहिँ पिआरि दूती कएलए जनि सिआरि ॥७॥
नागरि हसलि दूती हेरि टुटल बोलब मजे कत वेरि ॥८॥
भन विद्यापति ई रस जान रानि लखिमादेवि-रमान ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२७८)

मानिनि मान मौने मन साजि माधव मनसिज मनमथ झाँकि ॥१॥
वि(र)सें केलि मेलि रस-बाध तेसरा माथेँ सबे अपराध ॥२॥
दूती भए जनु जनमए नारि विनु भेलेँ भेलिहुँ गोआरि ॥३॥
एत एक कोसलेँ (भेलिहुँ) मन्द, तरनिक उदअ लहत की चन्द ॥४॥
पर-अनुरोधेँ बाध दुर जाए नाथ वराह दुअओ हल खाए ॥ ५ ॥
विद्यापति भन बुझ रसमन्त, राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥६॥

मालव राग

(२७९)

सूखल सर, सरसिज भेल झाल,
तरुन तरनि, तरु न रहल हाल ॥ १ ॥
देखि दरनि दरसाव पताल,
अवहुँ धराधर धरसि न धार ॥ २ ॥
जलधर जलधन गेल असेखि,
करए कृपा बड पर-दुख देखि ॥ ३ ॥
पथिक पिआसल आव अनेक,
देखि दुख मानए तोहर विवेक ॥ ४ ॥
पलट निआसा निरस निहारि,
कहदहुँ कओन होइति ई गारि ॥ ५ ॥
कओन-हृदय नहि उपजए रोस,
ओल धरि करिअ एहेँ पए दोस ॥ ६ ॥
विद्यापति भन बुझ रसमन्त,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥ ७ ॥

श्री राग

(२८०)

कमल कोष तनु कोमल हमारे,
दिढ आलिङ्गन सहए के पारे ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चापि चिबुक हे अधर मधु पीबे,
कन्नोने जानल हमेउ धरब जीवे ॥ २ ॥
पुरुष निठुर-हिअ सहज सभावे,
नोनुआ अङ्ग मोरा नख-खत लावे ॥ ३ ॥
तखनक.....,
मन्ने मरितहुँ ताहि तिरि-बध लाइ ॥ ४ ॥
ए कपटिनि सखि कि बोलिबौं तोही,
हाथँ बान्धि कुअँ मेललह मोही ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति सुनहु मुरारि,
पहु अवलेपए दोस विचारि ॥ ६ ॥

मालवराग

(२८१)

एकहिँ बेरिँ अनुराग बढाओल
पञ्चबान भेल मन्दा ॥ १ ॥
अधर बिम्बँवत जेति न पलिछए,
न होअए दिवसक चन्दा ॥ २ ॥
माधव तुअ गुने लुबुधलि राही ॥ ३ ॥
पिअ-विसरन मरनहुँतह आगर,
तोहेँ नागर सब चाही ॥ ४ ॥
दुइ मन-रभस तेसर नहि जानए,
पर दए समन्दए न जाई ॥ ५ ॥
चिन्ताञे चेतन अधिक बेआकुल रहलि,
सुमुखि रहलि सिर लाई ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुनह मधुरपति,
तोहेँ छाडि गति नहि आने ॥ ७ ॥
विसवासदेवि-पति रस-कोविन्दक
नृपति पदुमसिंह जाने ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बराली

(२८२)

करहिँ मिलल रह मुख नहि सुन्दर,
जनि अवसिन दिन चन्दा ॥ १ ॥
प्रकृति न रह थिर नअने गलए निर,
कमलँ झरए मकरन्दा ॥ २ ॥
माधव तुअ गुने झामरि रामा ॥३॥
दिन दिन खिन तनु पिडए कुसुमधनु,
हरि हरि ले पए नामा ॥ ४ ॥
निन्दए चान्दन, परिहर भूषन,
चान्द मानए जनि आगी ॥ ५ ॥
तेँ धनि दसमि दसा लग पाओल,
वधक होएव तोहेँ भागी ॥ ६ ॥
अवसर गेलें कि नेह वढाओँब,
विद्यापतिकवि भाने ॥ ७ ॥

सामरी राग

(२८३)

गाए चरावह गोकुल वास गोपक सङ्गेँ जन्हिक परिहास ॥१॥
अपनेहुँ गोप गरुअ की काज गुपुतें वोलसि मोहि वडि लाज ॥२॥
दूती वोलसि कान्हसओ केलि गोपवधूसओ जन्हिका मेलि ॥३॥
गामहिँ वसलेँ वोलिअ गमार नगरहँ नागर बोलिअ संसार॥४॥
वसथि वथान झालि दुइ गाए तें की विलसब नागरि पाए ॥५॥
आदि अन्त दुहु देलक गारि विद्यापति भन बुझथि मुरारि ॥६॥

सूहव राग

(२८४)

कुचजुग धरए कुम्भथल-कान्ति,
वाङ्क नखर खत अङ्कुस भान्ति ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोमावलि नग-सुण्डके अनुरूप,
पानि पिअए चल नाभी-कूप ॥ २ ॥
देखह माधव कएलिअँ साज,
बाला चललि जौवन-गजराज ॥ ३ ॥
मदन महाउतें कएल पसाह,
लीलाबे नागर हेरए चाह ॥ ४ ॥
पुनु लोचन पथ सीम न आउ,
सैसव-राज भीतिँ पराउ ॥ ५ ॥
विद्यापति भन बुझ रसमन्त,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥ ६ ॥

बरालीराग

(२८५)

सगरिओ रअनि चान्द-मअ हेरि,
मने मने धनि पुलकलि कत वेरि ॥ १ ॥
कालि दिवससञो होएत अन्धार,
अपने सु···हे करब अभिसार ॥ २ ॥
सखि, मञे की कहब हृदअ जत बास,
अपनेहिँ निधि आइलि जनि पास ॥ ३ ॥
एक रूप रह जुग बहि जाए,
ते गुन गौरवे एहे उपाए ॥ ४ ॥
खान्त निसाकर गरसओ राहु,
हो नहि दुख विरही जन काहु ॥ ५ ॥
विद्यापति भन सुनु वरनारि,
अवसर जानि जे मिलत मुरारि ॥ ६ ॥
राजा रूपनरायन जान,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥ ७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२८६)

पाए तक पाछु गेलि लाज,
पथँ चललेँ विसरलहुँ न काज ॥ १ ॥
जमुना-तीरँसञो समन्दल मान
कैसन कए की बुझत अआन ॥ २ ॥
ए सखि आओर की बोलबह से जानि,
कपटिहिँ निकटओ लओलह आनि ॥ ३ ॥
निअमिअ पेम हेम-सम हारि,
अङ्गिरिअ कामिक दुहु कुल गारि ॥ ४ ॥
पलटि जाइते घर बड बलहीन,
अबे सबे किछु भेल तोर अधीन ॥ ५ ॥
विद्यापति भन सुन वरनारि,
धैरजे तरुनि तिरोहित गारि ॥ ६ ॥

श्रीराग

(२८७)

से अति नागर तञे रस-सार, पसरओ वीथी पेम पसार ॥१॥
जौवन नगरँ वेसाहत रूप, तते मुलइहह जते सरूप ॥२॥
साजनि से हरि रस-बनिजार, गोप-भरमे जनु बोलह गमार ॥३॥
विधि-वसे अबे करब नहि मान, जइअओ सोलह-सहस-पति कान्ह॥४॥
तन्हि तोहँ उचित बहुत जे भेद, मनमथ मधथें करब परिछेद ॥५॥
भनइ विद्यापति एहु रस जान, राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान॥६॥

कानलराग

(२८८)

वदर सरिस कुच परसब लहु कत सुख पाओब करति उहुँ उहुँ ॥१॥
बाहुक बेढेँ परस निवार नीवी-मोष करए के पार ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माधव अनुभव पहिलुक सङ्ग नहि नहि करति इहे वथु रङ्ग ॥३॥
अधर पाने से हरति गेआन कमलकोष कए धरति परान ॥४॥
वैरी डीठिँ निहारति तोहि जनु भरमसि पुछिहिसि मोहि ॥५॥
नूतन रस संसारक सार विद्यापति कह कविकण्ठहार ॥६॥

धनछीराग

(२८६)

गुरुजन दुरजन परिजन वारि, न गुनल लाघव कुलके गारि ॥१॥
जीव कुसुम कए पूजल नेह, भरि उभकल तोहर सिनेह ॥२॥
.....वास, सखिँ जानव जओ वड उपहास ॥३॥
पुनु जनु आवह हमर समाज मञ्चे नहि रखवे आखिक लाज ॥४॥
मुनिहुँक काजँ पलए परमाद, हमराहुं जनु से पल अपवाद ॥५॥
सुन्दरि वचने हलल सिर झालि, नागर न सह कुगइँआ गारि॥६॥
जत अनुराग दूर सवे गेल भीतिक पुतरी विषधर भेल ॥७॥
विद्यापति कह सुन वरनारि पहु अवलेपिअ दोस विचारि ॥८॥
राजा रूपनराएन जान, सिरि सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥९॥

सुहवराग

(२९०)

चान्दक तेज रअनि धर जोति,
रजत-सहित धनि पहिरलि मोन्ति ॥ १ ॥
चान्दने तनु अनुलेप सिङ्गार,
धम्मिलँ थोएल कुन्दक भार ॥ २ ॥
हरि कि कहब अनुपम भान्ति,
सखि अभिसार दिवस सम राति ॥ ३ ॥
नअनक काजर दुर कर धोए,
चान्दक उदअँ कुमुद जनि होए ॥ ४ ॥
नअन चान्द दुहु एक तरङ्ग,
जमुना-जलँ विपरीत तरङ्ग ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जमुना तरि धनि आइलि राति,
तुअ अनुरागे अङ्गिरि कत साति ॥ ६ ॥
विद्यापति भन अभिनव कान्ह,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥ ७ ॥

धनाश्रीराग

(२९१)

जहुआ कान्ह देल तोहि आनि,
मने पाओल भेल चौगुन वानि ॥ १ ॥
अवे दिने दिने हे पेम भेल थोल,
कए अपराध बोलह कत बोल ॥ २ ॥
अवे तोहि साजनि मने नहि लाज,
हाथक काकन अरसी काज ॥ ३ ॥
पुरुष चञ्चल सहज सभाव,
कए मधुपान दसओ दिस धाव ॥ ४ ॥
एकहिँ बेर तजे दुर करु आस,
कूप न आवए पथिकक पास ॥ ५ ॥
गेले मान अधिक हो सङ्ग,
बल कए की उपजाओब रङ्ग ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति एहु रस जान,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥ ७ ॥

गुजरीराग

(२९२)

पहिलहिँ पेमक तरुअर बाढल,
कारन किछु नहि भेला ॥ १ ॥
साखा पल्लव कुसुमे वेआपल,
सौरभे दिस भरि गेला ॥ २ ॥
सखि हे, दुरजन दुरनए पाए,
मूरा जओ मूलहिँ सओ भाङ्गल अपदहिँ गेल सुखाए ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुलक धरम पहिलेहिँ सनिआओल,
कओने देब पलटाए ॥ ४ ॥
चोर-जननि जओ मने मने झाखिअ,
कान्दिअ वदन झम्पाए ॥ ५ ॥
ऐसेने देह गेह न सोहावए,
बाहर वम जनि आगि ॥ ६ ॥
विद्यापति भन अपनेहिँ आओत,
सिरिसिवसिंह रस लागि ॥ ७ ॥

धनछी रा ३

(२९३)

बाढिक पानि काढि जा जानि, ठाम रहल गए जे निज मानि ॥१॥
अइसनहुँ सुमुखि करह तोहेँ रोस, पुरुसक की दिअ एतवाहिँ दोस ॥
दह दिसँ भमर करओ मधुपान, थिर भए चाहिअ अपन गेआन ॥३॥
जातकि केतकि मालति सार, रमनी भए जदि करए विहार ॥ ४ ॥
मधु लए के घुर मधुपक सङ्ग, थावर गौरव ई बड रङ्ग ॥ ५ ॥
पर-अनुराग रागेँ गेल मोहि, से मओ छडलेँ समुझए तोहि ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति बुझ रसमन्त, राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥७॥

सुहव राग

(२९४)

वामा-नअन फुरन आरम्भ, पुलक-मुकुले पूरल कुच-कुम्भ ॥ १ ॥
नीवी निविल् सँसर तेँ वीधि, सगुने सुचि हलु साहस सीधि ॥२॥
चल चल सुन्दरि न कर वेआज, मदने महासिधि पाओबि आज ॥३॥
विलम्ब न कर अङ्गिरहिँ अभिसार, हठेँ पए फारअ कामिक बाण ॥४॥
ताहि तरुनिकाँ कओन तरङ्ग, जकरा मदन महीपति सङ्ग ॥ ५ ॥
विद्यापति कवि कहए विचारि, पुनमन्त पावए गुनमति नारि ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धनछी राग

(२९५)

ई दसि हालल दखिन चीर, हीराधारँ हराएल हीर ॥ १ ॥
अइसन नीरज देलए जोलि, वलअ भाङ्गल वाँह ममोलि ॥ २ ॥
भलि परिनति भेलि मुरारि, भल कए राखलि कुलक गारि ॥ ३ ॥
वकुलमाला गान्तल नाथेँ, मोहि पिन्धओलुहुँ अपने हाथेँ ॥ ४ ॥
सासुँ समारल फुजल वार, ननन्दें गान्तल टुटल हार ॥ ५ ॥
सरस कवि] विद्यापति गाव, मनक पाहुन मदन भाव ॥ ६ ॥
राजा रूपनरान्वेन जान, सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥ ७ ॥

गुर्जरी राग

(२९६)

न बुझए रस नहि बुझ परिहास, नहि आलिङ्गन भजुह-विलास ॥१॥
सब रस तहि खने चाहह ताहि, सागर कओन पएवे हो थाहि ॥२॥
माधव, सखि मोरि सहज अआनि, रस बूझति तओ होइति सआनि
अनुभवि बूझति जखने सँभोग, तहि खने कोपहु करवाँ जोग ॥४॥
एखनक आरतिँ रह पए दन्द, मुन्दलाँ मुकुलँ कतए मकरन्द ॥५॥
विद्यापति कह नव अनुराग, वड पुनमन्त पाव पए भाग ॥६॥
रूपनराएन बुझ रसमन्त, राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥७॥

धनछी राग

(२९७)

वसन हरइतेँ लाज दुर गेल, पिअक कलेवर अम्बर भेल ॥ १ ॥
अओंधें नअने निझावए दीब, मुकुलहुँ कमलँ भमर मधु पीब ॥ २ ॥
मनसिज तन्त कहओ मन लाए, वड उनमनिआ अवसर पाए ॥ ३ ॥
से सबे सुमरि मनहुँकाँ लाज, जत सबे विपरित तन्हिकर काज ॥ ४ ॥
हृदअक धाधसि धसमसि मोहि, आओर कहिनी कि कहबि तोहि ॥५॥
सकल ओ रस नहि अनुवद नारि, विद्यापति कवि कहए विचारि ।६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२९८)

पहु सब्बो उतरि बोलव बोल अइसन मन न मानए मोर ॥ १ ॥
से जदि वचने फलें उदास अपनि छाहरि तेज न पास ॥ २ ॥
सखि पचारसि मन्दें साथ हर ओ आदर अपन नाथ ॥ ३ ॥
कैरव सुरुज कमल चन्द परपुरुसक सिनेह मन्द ॥ ४ ॥
नागरि भए जदि हठें वि मान एकहि जनमे इछव आन ॥ ५ ॥
सरस भन कवि-कण्ठहार सुन्दरि राख कुल-वेवहार ॥ ६ ॥
ई रस रूपनराएन जान रानि लखिमादेवि-रमान ॥ ७ ॥

(२९९)

कोकिल गावए मधुरिम वानि, ऋतुँ वसन्तँ हे अमिअ -रसें सानि॥१॥
असमअ पसि आलाना पाए, चेओ चेओ करिअ काहु न सोहाए ॥२॥
साजनि अवेकत देह असवास, कान्हें जाएब मोहि पास ॥३॥
गुरु-सुमेरुतह सुपुरुस बोल, कुलक धरम छडलें की मोर ॥४॥
करमक दोपे विघटि गेल साटि, अगिलाँ जनम बुझव परिपाटि ॥५॥
विद्यापति भन न कर विराम, अवसर जानि धरत ओ काम ॥६॥
रूपनराएन बुझ रसमन्त, राए सिवसिंह लखिमादेवि-कन्त ॥७॥

सुहव राग

(३००)

नअनक नीर चरनतल गेल, थलक कमल अम्भोरुह भेल ॥ १ ॥
अधर अरुनिमा लखि नहि होए, सिसिरे किसलअ छाडु जनि धोए॥
माधव, जतनहुँ राखए गोए, सखिमुखि नोर ओल नहि होए ॥ ३ ॥
तुअ अनुराग सिथिल जानि, अउलिउ विसरलि मनसिज वानि ॥४॥

ललित राग

(३०१)

सपने देखल हरि, गेलाहु पुलकें पुरि,
जागल कुसुम-सरासन रे ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताहि अवसर गोरि नीन्द भाँगलि मोरि,
मनहि मलिन भेल वासन रे ॥ २॥
की सखि पओलह सुतलि जगओलह,
सपनेहुँ सङ्ग छडओलह रे ॥ ३॥
सामर सुन्दर हरि रहल आञ्चर धरि,
फोअइतें किङ्किणि-माला रे ॥ ४॥
आओर कहब कत रस उपजल जत,
के बोल कान्ह गोआला रे ॥ ५॥
ससरि सअनसिम हरि गहलिहुँ गिम,
मुखे मुखे कमल कमल मिलु रे ॥ ६॥
पुरलि सकल सिद्धि सहजें आइलि निधि,
तोर दोखें दइव अछोलिलिहुँ रे ॥ ७॥
भनइ विद्यापति अरे रे वरयुवति,
अनुसअ पेम पुराना रे ॥ ८॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन,
लखिमादेवि-रमाना रे ॥ ९॥

विभास राग

(३०२)

वदन कामिनि रे वेकत जनु करिहह चउदिश होएत उजोर ॥१॥
चान्दक भरमे अमिअ-रस लालस अनिठ कए जाएत चकोर ॥२॥
सुन्दरि तुरित चलहिँ अभिसार ॥३॥
अवहि उगत ससि, तिमिर तेजत निसि, उसरत मदन पसार ॥४॥
मधुर वचन भरमहुँ जनु वाजह सौरभे जानत आन ॥५॥
पङ्कज भरमे भमरे भमि आओब, करत अधर-मधुपान ॥६॥
तजें रस-कामिनि मधुक जामिनि गेल चाहिअ पिअ सेव ॥७॥
राजा सिवसिंह रूपनरायन कवि अभिनव-जयदेव ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालव राग

(३०३)

दरसन लागि पुजए नित काम, अनुखन जपए तोहरि पए नाम ॥१॥
अवधि समापलि, मास अखाढ, अवे दिने दिने जिवनकाँ गाढ ॥२॥
कहब समाद कृष्णकें मोर, सबतह जलद समअ वड घोर ॥३॥
हमे अबला हे गुपुत पञ्चवान, मरम लखिए कर सर-सन्धान ॥४॥
तुअ गुन बान्धल अछए परान, परक वेदन-दुख पर नहि जान ॥५॥

कोलार राग

(३०४)

पहिलहि अमिअ लोभायी अवे सिन्धु धसि विष वचन कोहायी ॥१॥
कैसनि भेलि ओअ रीती आदि मधुर परिनामक तीती ॥२॥
के तोके बोलए सआनी कोप न कएलह अवसर जानी ॥३॥
निधुवन - लालस नाहे, पेम लुबुध परिरम्भन चाहे ॥४॥
यदि खण्डसि तसु आसा सुतसि समिध दए वहत बतासा ॥५॥
विद्यापति कह जानी, हरिसब्बो कोप न करए सआनी ॥६॥

मलारी राग

(३०५)

दाहिन दिढ अनुरागे पिआ पर-वचन न लागे ॥१॥
बुझल सवे अवगाही सूते सरवर थाही ॥२॥
राधे चिते जनु झाखह आने तोके परसन पञ्चबाने ॥३॥
सुपहु-सुनारि-सिनेह चान्द कुमुद सम रेह ॥४॥
दिवसे दिवसे धर जोति सोना मेलाओलि मोति ॥५॥
सुकवि विद्यापति भान पुने मिल पिआ गुणमान ॥६॥

(३०६)

दुहुक अभिमत एक न मिलने दूतीके अपराधे ॥१॥
आन आन खने संकेत भुलाएल दुहुक मनोरथ बाधे ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तरुणी कहओ कहा सफल भेले अभिसार ॥३॥
राधानयन जरद जओ वरिसए कन्हायी रहल न जाई ॥४॥
दूती अपन चतुरपन खाएल चारिम कहहि न जाई ॥५॥
दुअओ परम वेआकुल-मानस जस राधा तसु कान्ह ॥६॥
एक मनोभव परिभव दाता दुअहु समहि समधान ॥७॥
भनइ विद्यापति एहु रस जानए राय निमह रसमन्ता ॥८॥
सिवसिंह राजा रूपनराअेन लखिमादेवी-कन्ता ॥९॥

(३०७)

नूपुर रसना परिहरि देह,
पीत बसन हे युवति पिधि लेह ॥१॥
सिथिल विलम्बे होएत (उप)हास,
गए नहि होएते कान्हक पास ॥२॥
गमन करह सखि वल्लभ-गेह,
पूरत अभिमत सकल सिनेह ॥३॥
कुङ्कुमे तओन पसाहनि देह,
नयन युगल दए काजर रेह ॥४॥
अवहि उदित होत तम पिबि चन्द,
जानि पिसुन जने बोलब मन्द ॥५॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि,
अभिनव नागर रूपे मुरारि ॥६॥
रूपनराएन एहु रस जान,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥७॥

(३०८)

ओहु राहु भीत एहु निसङ्क, ओहु कलङ्की इ न कलङ्क ॥१॥
सम बोलइते अनुचित मन जाग, सोनाक तुरना काग की नाग ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ए सखि पिआ मोर बड अगेआन,बोलथि वदन तोर चान्द समान॥३॥
चान्दहु चाहि कुटिल कटाख, तञे कामिनि किङ्किर ए राख ॥४॥
उथि अछ सुधा, इथी अछ हास, एतवा अछ किछु तुलना भास ॥५॥
भनइ विद्यापति कवि-कण्ठहार, तनिका दोसर काम प्रहार ॥६॥
राजा रूपनराएन जान, राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥७॥

(३०९)

कत एक हमे धनि कतए गोआला,जले थरे कुसुम कैसनि हो माला॥१॥
पवन न सह दीपक जोती, छुइलेहु मलिनि हो मोती ॥२॥
कि बोलिबो अरे सखि कि बोलिवो(आजे)अब आवह पुनु ऐसना काजे॥३॥
काव्हे निवेदसि कुमति सआनी, सब भन मधुर तीन्ति वडि बानी ॥४॥
परब न नोत करए सब कोइ, करिए पेम जञो विरह न होइ ॥५॥
नागरि जनके वचहुँ विलासा, रूषेहु वचने राखि गेलि आसा ॥६॥
भनइ विद्यापति एहु रस जाने, राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमाने ॥७॥

(३१०)

चारि पहर राति संगहि गमाओलि, अब पहु भेल भिनसारा ॥१॥
चान्द मलिन भेल, नखत मण्डल गेल, हम देहु मुकुति गोपाला ॥२॥
माधव, धनि समदह उठि जागि ॥३॥
ऐसनि कए परिबोधि पठइहह, पुनु आवए ओ अनुरागी ॥४॥
जे किछु पिआ देल, कञ्चुआ झापि लेल, हृदय कएल विसवासे ॥५॥
केस अरुझाएल, अधर सुखाएल, सखि कर बड उपहासे ॥६॥
भनइ विद्यापति सुनु वरजौवति, दण्ड निकट परमाने ॥७॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन, लखिमादेवि-रमाने ॥८॥

नरित राग

(३११)

पुरुष भमर सम, कुसुमे कुसुमे रम, पेअसि करए कि पारे ॥ १ ॥
डर न राखल पहु, परतख भेल लहु, ओर धरि भेल विचारे ॥ २ ॥
भल न कएल तोहहुँ सुमुखि सरूप कोहोऊँ, लेप न पिअ-अपराधे ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेहे सआनी नारि, पिअगुणे परचारि, बेकतेओ दोस नुकावे ॥४॥
निसि निसि कुमुदिनि, ससधर पेम जिनि, अधिक अधिक रस पावे।
भनइ विद्यापति अरे रे वरजुवति, अवहु करिअ अवधाने ॥६॥
राजा सिवसिंह रूपनरायन, लखिमादेवि रमाने ॥ ७ ॥

(३१२)

डरे न हेरए इन्दु, (चाँदने न लिखए) बिन्दु,
मलआनिर बोल आगी ॥ १ ॥
तुअ गुण कहि कहि, मुरछि पलए महि,
रयनि गमावए जागी ॥ २ ॥
सुन्दरि, कि कहब आवक सिनेहा,
तुअ दरसने विनु अनुखन खिन तनु,
अवे तसु जिवन सन्देहा ॥ ३ ॥
नोरे नअन भरि, तुअ पथ हेरि हेरि,
अनुखन रोअए कन्हाई ॥ ४ ॥
तोहरि वचन लए, धएल आस दए,
अवे न वचन पतिआई ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति, अरे रे कलामति,
न कर मनोरथ-बाधे ॥ ६ ॥
अधर सुधा दए, पीति बढावए,
पूरओ मनमथ-साधे ॥ ७ ॥

(३१३)

जामिनि दुर गेलि नुकि गेल चन्द,
भेलिहु सिद्धि न बढाइअ दन्द ॥ १ ॥
तसु छल-धुनि सुनि जीव मोर काप,
मन्ने जाएब जमुना जेरि झाप ॥ २ ॥
हठ तेज माधव जएवा देह,
राखल चाहिअ गुपुत सिनेह ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जागि जाएत पुर-परिजन मोर,
फाव चोरि जओ चेतन चोर ॥ ४ ॥
मञे जानल पि(अ) तोर जेम,
उसठ न कर सठ बढाओल पेम ॥ ५ ॥
धनि परबोधलि हरि रस राखि,
बोललि ए वचन सुधामधु माखि ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति ई रस जान,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमान ॥ ७ ॥

(३१४)

सुरभि निकुञ्ज वेदि भल भेलि, जनम गेंठि दुहु मानस मेलि ॥१॥
कामदेव करु कनेआ-दान, विधि महुपरक अधर मधु-पान ॥२॥
भल भेल राधे भेल निरबाह, पानिगहन विधि बोध विआह ॥३॥
ऊजर ऐपन मुकुताहार, नयने निवेदल वन्दनेवार ॥ ४ ॥
पीन पयोधर पुरहर भेल, करस झापन नव पल्लव देल ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति रसमय रीति, राधा-माधव उचित पिरीति ॥६॥

सारंगी राग

(३१५)

सहज सितल छल चन्द, सवतह से भेल मन्द ॥१॥
विरह सहाइअ नारि जिवइतके न हनिअ मारि ॥२॥
सखि हे पिआके कहब हमलागी, अबहु मिझाइअ आगी ॥३॥
परसञो पेम बढाए धनि कुल धम्म छुडाए ॥४॥
इ सबे कएल हमें मोहि, इथि सब कारण तोहि ॥५॥
अनुसर मलय-समीर मनमथ सोभ सरीर ॥६॥
भल जन मन्द विकार तथि नहि कओन परकार ॥७॥
सुकवि भनथि कण्ठहार होएब विरह-नरि पार ॥८॥
राए अरजुन रस जान गूणादेवि-रमान ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(३१६)

जखने संकेत चलु ससिमुखि तखने छल अन्धार।
आन्तर पान्तर बाट उगि गेल चन्दा करम-चण्डार ॥१॥
परम पेम पराभवे पाओल देखि गमनेरि बाध।
उतिम वचन जदि विहुचर आओर की अपराध ॥२॥
साजनि मन्दिर भेल असार।
अपन आरति आगु न गुनल साजि हल अभिसार ॥३॥
सुखम हेतु कमने विचारब कमनें चिन्हल चोर।
आसा दइअ सुपुरुसे वञ्चन दूषन लागत मोर ॥४॥
न परे पौलिहुँ न घरे गेलिहुँ दुहु कुल भेल हानि।
विधि निकारुन परम दारुन अबे कि करब जानि ॥५॥
संकेत-वन गमन न सम्भव पुनु पलटए न जाए।
युवतिवध रे व्याध पञ्चसर काहु न कहहु जाए ॥६॥
भने विद्यापति सुन तए युवति अछए गुण-निधान।
राए सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेवि-रमान ॥७॥

(३१७)

जत जत तोहे कहल सुजानि से सवे भेल सरूप।
माधुर जाइते आजे मए देखल कतेओ कान्ह(क रूप) ॥१॥
...सओ मनसिजे वेआकुल थीर मन नहि मोर।
भल कए हरि हेरि न भेले ई बड लागल भोर ॥२॥
साजनि...अपन वेदन जाहि निवेदओ तैसन मेदिनि थोल्।
हमहु नव कुरवहु से पहु राखलि चाहिअ तोर ॥३॥
चाहिअ भेल चाहिअ समाज।
से सवे कामिनि तोहतह सम्भव हेन मोर अनुमान।
की तन्हि मोहि छाटें मेरावह की मोर नेहे परान ॥४॥
भने विद्यापति सुन तए युवति निअ-मने अनुमान।
रतने जदि जतने गोपिअ तैअओ कि न जानए आन ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कानल राग

(३१८)

नगरक वानिनिओ रे हरि पुछ हरि पुछा
किए किए हाट विकाए ॥ १ ॥
.....हिर मनि मानिक ओ रे अनुपम
अनुपमा नाना रतन पसार ॥ २ ॥
एक लागु दुइओ ले
सिरिफिर सिरिफला सोनाकेर समान ॥ ३ ॥
अधरा सिरिफल ओरे आञ्चर आञ्चरा
अधरा अधिके बिकाए ॥ ४ ॥
विद्यापति कविओ गाविह गाविहा
झुमरि बुझ रसमन्त ॥ ५ ॥
सिरि महेसर महेसर हे जुडमदेवि-सुकन्त ॥ ६ ॥

(३१९)

करहि न सुन्दरि अलक तिलक राधे अङ्ग विलेपन कर बाधे ।१॥
तञे अनुरागिनि से अनुरागी भूषन होएत दूखन लागी ॥२॥
चल चल तञे चेतन साई, आसे पिआसल जनु कन्हाई ॥३॥
समुद कुमुद-लुबुध रसी अवहि उगत लुबुध ससी ॥४॥
आएल चाहिअ तरुणि तोर पिसुन नयन भम चकोर ॥५॥
चरन नेपुर उपर सारी मुखर मेखर करे नेवारी ॥८॥
अमुर सामर देह नुकाई चलहि तिमिर पथ समाई ॥७॥
भन विद्यापति युवति-रिती मधुर जानि कर परतीती ॥८॥
राजा रूपनराएन जान सुखे सुखमादेवि-रमान ॥९॥

(३२०)

प्रथमहि हाथ पयोधर लागु पुलके प्रमोदे मनोभव जागु ॥ १ ॥
नीवीबन्ध के जान कि भेला चेतनपन (कतए दहु गेला) ॥ २ ॥
कि सखि कहब मञे कहल न जाइ,
हरिक चरित कहइते रहओ लजाइ ॥ ३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धम्मिल धरइ अधरमधु पीवे रह (सरीर जाओ जनु) जीवे ॥४॥
दइन न मानए दोष न जाने गहवर गाढ अलिङ्गन दाने ॥ ५ ॥
अइसनि कहिनी न कहिअ आ(ने तोहर के) कह दो(स)र पराने॥६॥
भनइ विद्यापति एहु रस जाने,
राए सिवसिंह लखिमादेवि-रमाने ॥ ७ ॥

(१२१)

निसि निसिअरे भम, भीम, भुअङ्गम, जलधर बीजु उजोर ।
तरुन तिमिर निसि तइअओ चलल जासि,
बड सखि साहस तोर ॥ २ ॥
सुन्दरि, कमन पुरुष धन जे तोहर हरल मन,
ताहेरि उदेसे अभिसार ॥ ३ ॥
आगे तओ जौन नरि से कैसे जएबह तरि,
आरति न करिअ झाप ॥ ४ ॥
तोरा अछि पंचसर तें तोहि नहि डर, मोर हृदअ बड काप ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति अरे वर-जउवति साहस कहहि न जाए ॥ ६ ॥
अछए जुवति गति कमलादेवि-पति मन वस अरजुन राए ॥७॥

राघवीयवराडीय राग

(१२२)

साँझक वेराँ जमुनाक तीराँ कदवेरि वनतराँ
अकमि कानरा कि कहब काला,
सोझाँहि जुझल, सखि, कुसुम-सरा ॥१॥
मोहि भेटल कान्हू, अनतए कहिनी कहह जनू ।
उर चिर हरि करें कच धरि अधर पिबए मुख हेरी ॥२॥
पुनु पुनु भोरा परस कुच मोरा
निधने पाओल जनि कनय-कटोरा ॥३॥
अरे रे जुवती बुझलि जुगती,
दोसर मधुर-मधुपती ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तोरे अनुमानें विद्यापति भाने
राए शिवसिंह लखिमादेइ-रमाने ॥५॥

माधवीय वराडीय छन्द

(३२३)

ससन-परसेँ खसु अम्बर रे देखलि धनि-देह ॥१॥
नव जलधर तर चमकए रे जनि वीजुरि-रेह ॥२॥
आज देखलि धनि जाइतेँ रे, मोहि उपजल रङ्ग ॥३॥
कनकलता जनि संचर रे महि निरअवलम्ब ॥४॥
ता पुनु अपुरुव देखल रे कुचयुग अरविन्द ॥५॥
विगसित नहि किछु कारन रे सो मा मुख-चन्द ॥६॥
विद्यापति कवि गाओल रे बूझए रसमन्त ॥७॥
देवसिंह नृप-नागर रे हासिनिदेवि-कन्त ॥८॥

भठिआलवराडीय छन्द

(३२४)

नन्दक नन्दन कदवेरि तरु-तरेँ धिरेँ धिरेँ मुरलि बोलाव ॥१॥
समय सँकेत निकेतन बैसल बेरि बेरि बोलि पठाव ॥२॥
सामरी तोरा लागि अनुखने विकल मुरारि ॥३॥
जमुनाक तीरेँ उपवन उदवेगल फिरि फिरि ततहि निहारि ॥४॥
गोरस विकेनिकेँ अवइतेँ जाइतेँ जनि जनि पुछ वनमारि ॥५॥
तोँहे मतिमान सुमति मधुसूदन वचन सुनह किछु मोरा ॥६॥
भनइ विद्यापति सुन वर-जौवति वन्दह नन्दकिसोरा ॥७॥

कौशिक राग

(३२५)

लता तरुअर मण्डप दीअ, निरमल ससधर भिति धवलीअ ॥१॥
पौँअनाल अरिपन भल भेल, रात परीहन पल्लव देल ॥२॥
गावह माइ हे मङ्गल आए, वसन्त विआह बने पए जाए ॥३॥
मधुकर रमनी मङ्गल गाव, दुजवर कोकिल मन्त्र पढाव ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करु मकरन्द हथोदक नीर, विधु वरिआती धीर समीर ॥५॥
कनए केआ सुति तोरन तूल, लावा बिथरल वेलिक फूल ॥६॥
केसु कुसुम करु सिन्दुर दान, जौतुक पाओल मानिनि माँन ॥७॥
केलि कुतूहल नव पँचबान, विद्यापति कवि इढ कए भाँन ॥८॥
अभिनव नागर बुझए रसवन्त, मति महेसर रेणुकादेवि-कन्त ॥८॥

देशी राग देशरामकरी छन्द

(३२६)

कुसुमबान-विलास कानन केस सिन्दुर रेह ।
निविल् नीरद रुचिर दरसए अरुन जनि निज-देह ॥१॥
आज देखु गजराज-गति वरजु अति त्रिभुवन सार ।
जनि कामदेवक विजयवल्ली विहलि विहिं संसार ॥२॥
सरद-ससधर सरिस सुन्दर वदन लोचन लोल ।
विमल कञ्चन-कमल चढि जनि खेल खञ्जन-जोल् ॥३॥
अधर नव पल्लव मनोहर दसन दालिम जोति ।
जनि निविल् विद्रुम-दलें सुधारसें सीचि धरु गज-मोति ॥४॥
मत्त कोकिल वेनु वीना नाद तिहुअन भास ।
जनि मधुकर हाक पसाहि आनन करए वचन विकास ॥५॥
अमर भूधर सम पयोधर महघ मोतिम-हार ।
हेम-निर्मित्त-शम्भु-शेखर गङ्ग-निर्मल-धार ॥६॥
करभ कोमल कर सुसोभन जङ्घ-जुग आरम्भ ।
जानि मदन मल्ल वेआम कारने गढल हाटक थम्भ ॥७॥
सुकवि एहू कण्ठहारे गाओल रूप सकल सरूप ।
देविलखिमा-कन्त जानए सिरि सिवएसिंह भूप ॥८॥

केदार राग

(३२७)

जनि हुतवहँ हरि आनि मेराओल ता सम भेल विकार ॥१॥
दुअओ नयन तोर विषम मदन-सर सालए हृदय हमार ॥२॥
हरि हरि काँ लागि सुमुखि विहुँसि हसि हेरलह जीवन परल सन्देह॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पीन पयोधर अपरुव सुन्दर ऊपरँ मोतिम हार ॥४॥
जनि कनकाचल उपर विमल जल दुइ वह सुरसरि-धार ॥५॥
भनइ विद्यापति सुनु वरनागर सवहुँ होएत परकार ॥ ६ ॥

केदाराकेदार राग

(३२८)

आँचरे वदन झपावह गोरि
रःज सुनै छिअ चाँदक चोरि ॥१॥
घरेँ घरेँ पहरि गेलछ जोहि
एघने दूषन लागत तोहि ॥२॥
वाहर सुतह हेरह जनु काहु
चाँन भरमे मुख गरसत राहु ॥३॥
निरलि् निहारि फाँस गुन जोलि
बाँधि हलत तोँहँ खञ्जन बोलि ॥४॥
भनइ विद्यापति होहु निशङ्क
चाँन्दहुँकाँ किछु लागु कलङ्क ॥५॥

क्हिाग राग । केदार छन्द

(३२९)

उधसल केस कुसुम छिलि्आएल खण्डित दशन अधरे ॥१॥
नयन देखिअ जनि अरुन कमल दल मधुलोभे वैसल भमरे ॥२॥
कलावति कैतव न करह आजे ।
कञोन नागर सङ्ग रयनि गमओलिसि कह मोहि परिहरि लाजे ॥
पीन पयोधर नखरेख सुन्दर करेँ बाँधह काँ गोरि ।
मेरु शिखर नव उगिगेल ससधर गुपुति न रहलि ए चोरि ॥४॥
बेकतओ चोरि गुपुत कर कति खन विद्यापति कवि भान ॥५॥
मलहम जुगपति चिरेँ जीवें जीवथु ग्यासदीन सुरतान ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामोदकेदार राग

(३३०)

अवला अंशुक बालभु लेला, पानि पलव धनि आँतर देला ॥१॥
हठ न करह कान्हु न पुरत कामे, प्रथमक रभस विचारक ठामे ॥२॥
आबे नव जौवन समय निहारी, अपनेहि वेकत होएत परचारी ॥३॥
मदन भँडारक सुरत सयानी, मोहि सुनल अछि असमय जानी ॥४॥
मुकुलित लोचन नहिं परगासे, काँप कलेवर हिरदए तरसे ॥५॥
भनइ विद्यापति नव अनुरागी, सहिअ पराभव पिआ हिआ लागी ॥

श्री राग

(३३१)

कुन्द भमर सङ्गम सम्भाषव नञेने जगाओब अनङ्गे ॥१॥
आशा दए अनुराग बढाओब, नङ्गिम अङ्ग विभङ्गे ॥२॥
सुन्दरि हे उपदेश धरिए धरि, सुन सुन सुललित वानी ॥३॥
नागरिपन किछु कहबा चाहों कहलहुँ बुझए सयानी ॥४॥
कोकिल कूजित कण्ठ बैसाओब, अनुरञ्जब रितुराजे ॥५॥
मधुर हास मुख मण्डल मण्डब, घडिएक तेजव लाजे ॥६॥
कैतव कए कातर नागर सब गाढ आलिङ्गन दाने ॥७॥
कोप कैए परबोधल मानब घडिएक न करब माने ॥८॥
सम पसेवनि सह तनु चाँदन मुकुलित लोचन हेरी ॥९॥
नखेँ हनि पिआ मनिधाम छडाओब, सुरत बढाओब केली।
जूझल मनमथ पुनु जे जुझावए बोलि वचन परचारी ॥१०॥
गेल भाव जे पुनु पलटावए सेहे कलामति नारी ॥११॥
रस सिङ्गार सरस कवि गाओल बुझए सकल रसमन्ता ॥१३॥
राजा शिवसिंघ रूपनराएन लखिमादेविक कन्ता ॥१४॥

बसन्त राग

(३३२)

माघ माँस सिरि पञ्चमि गँजाइलि नवए मास पञ्चम हरुआइ ॥१॥
अति घन पीडा दुख बड पाओल बनसपती के बधाइ हे ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुभ खन वेरा सुकल पख हे दिनकर उदित समाइ ॥३॥
सोलह सँपुने बत्तिस लखनें जनम लेल रितुराइ हे ॥४॥
नाचए जुबतिगन हरषित जनमल बाल मधाइ हे ॥५॥
मधुर महारस मङ्गल गावए मानिनि मान उडाइ रे ॥६॥
वह मलयानिल ओत उचित हे वन घन भउ उजिआरा ॥७॥
माधवि फूल भल गजमुकता तुल तें देल वन्दनेवारा ॥८॥
पीअरि पाँडरि महुअरि गावए काहरकार धुथूरा ॥ ९ ॥
नागेसर कलि संखधूनि पुर तगर ताल समतूला ॥१०॥
मधु लए मधुकरें वालक दए हलु कमल पखुरिआ झुलाइ ॥११॥
पौ अनाल तोलि करि सुत बाँधल केसु कइलि वध नाही ॥१२॥
नव नव पल्लव सेज ओछाओल सिर दहु कदवेरि माला ॥१३॥
बैसलि भमरी हर उदगारए चक्का चान्द निहारा ॥१४॥
कनए केआसुति पत्र लिखिए हलु रासि नछत्र कए लोला ॥१५॥
कोकिल गणित गुणित भल जानए ऋतु वसन्त नाम थोएला ॥१६॥
बाल वसन्त तरुण भए धाओल वेढए सकल संसारा ॥१७॥
दखिन पवन वह आँग उगारए कुवलए-कुसुम-परागे ॥१८॥
सुललित हार मँजरि घन कज्जल आखितब्रो अञ्जन लागे ॥१९॥
नव वसन्त ऋतु अनुसर जौवति विद्यापति कवि गाया ॥२०॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल कला मन भाया ॥२१॥

विततमालव राग

(३३३)

विकट जटाचय किछु न लोक-भय हे, उर फनिपति दिगवास ॥ १ ॥
कओन पथ भेटताह हे, अगे माइ, जाइत उमत हमार ॥ २ ॥
त्रिपुर दहन करु, छारे छाल भरु, हे वसह चढल वर बूढ ॥ ३ ॥
तीनि नयन हर, एक अनल वर, हे सिर सुरसरि-जल-धार ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति गोरि विकलमति हे, ओहि उमताक उदेस ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालव राग

(३३४)

यदि तोरा नहिं खन नहि अवकास परकेँ जतनें ककें देल विसवास ॥१॥
विसवास दए कके सुतह निचीत, चारि पहर राति भमत सुचीत ॥२॥
कर जोरि पैचा परि कहबि विनती, विसरि न हलबिए पुरुव पिरीती ॥३॥
प्रथम पहर राति रभसें वहला, दोसर पहर परिजन निंद गेला ॥४॥
नींद निरुपइते भेलि अधराति तखने उगल चाँदा परम कुजाति ॥५॥
भनइ विद्यापति तखनुक भाव, जेहे पुनमत सेहे जन पएँ ज़ाव ॥६॥

विजयपुरमालव राग

(३३५)

कुण्डल तिलकें विराज मुख शोभित सीदुर विन्दु ॥ १ ॥
हेमलतामें समान विधि कवि रवि तारा इन्दु ॥ २ ॥
इन्दुवदनि धनि नयन विशाला, कमल कलित जनि मधुकर-माला ॥३॥
देखलि कलावति अपुरुव रमनी, जिनएँ आइलि सुरपुर गजगमनी ॥४॥
वेनो विमल विराज तसु रस कुसुमावलि हार।
स्याम भुअङ्गम देखि कहु करु काम परहार ॥ ५ ॥
करु परहार मदन सर बाला, कुटिल कटाख बान कनिआरा ॥६॥
कम्बु कण्ठ मृणाल भुज-वलित पयोधर भार।
कनक-कलस रसें पूरि रहु सञ्चित मदन भण्डार ॥७॥
मदन-भण्डार पयोधर गोरा, जनि उलटाओल कनय कटोरा ॥८॥
स्यामा सुलोचनि सुरति रति अपुरुव भूषन भार।
विद्यापति कविराज कह सुफले करथु अभिसार ॥९॥
करु अभिसार मदनसर बाला, कुटिल कटाख बान कनिआरा ॥१०॥

जोगिआमालव राग

(३३६)

कतन वेदन मोहि देसि मदना, हर नहि बाला, मोचे जुवति-जना ॥१॥
नहि मोहि जटाजूट चिकुरक वेनी, सिरँ सुरसरि नहि कुसुमक सेनी ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाँद तिलक मोहि नहि इन्दु छोटा,ललाट पावक नहि सिन्दुरक फोटा॥३॥
कण्ठ गरल नहि मृगमद चारु, फनिपति मोराँ नहि मुकुताहारु ॥४॥
भनइ विद्यापति सुन देव कामा, एक दोस अछि ओहि नामक वामा ॥५॥

विततासावरी राग

(३३७)

कामिनि करए सनाने, हेरितहिं हृदय हनए पँचवाने ॥१॥
चिकुर गरए जलधारा, मुखससि डरें जनि रोअए अधारा ॥२॥
तितल वसन तनु लागू, मुनिहुँक मानस मनमथ जागू ॥३॥
कुचयुग चारु चकेवा, निअ-कुल मिलत आनि कोने देवा ॥४॥
तेँ सङ्काअे भुज-पासे बान्धि धरिअ उडि जाएत अकाशे ॥५॥

जोगिआ आसावरी राग

(३३८)

कालि कहल पिआबे साँझहि रे जाएब मोअे मारुअ देश ॥१॥
मोअे अभागलि नहिं जानल रे सँगहि जैतहुँ सेह देश ॥२॥
हृदय बड दारुन रे, पिआ विनु विदरि न जाए ॥३॥
एकहि सयन सखि सूतल रे अछल बाँलभ निसि मोर ॥४॥
न जानल कति खन तेजि गेल रे, बिछुडल चकेवा–जोर ॥५॥
सून सेज हिअ सालए रे, पिआबे बिनु मरब मोअे आजि ॥६॥
विनति करओँ सहिलोलिनि रे, मोहि देहे अगिहर साजि ॥७॥
विद्यापति कवि गाओल रे, आए मिलत पिअ तोर ॥८॥
लखिमादेइ – वरनागर रे, राएसिवसिंह नहि भोर ॥

सिन्धुलासावरी राग

(३३९)

आज पुनिमाँ तिथि जानि मोअे पेलिहुँ, उचित तोहर अभिसार ॥१॥
देह जोति ससि किरन समाइति के विभिनावए पार ॥२॥
सुन्दरि अपनहुँ हृदय विचार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तोहें जनु तिमिर हित कए मानह, आनन तोर तिमिरारि ॥३॥
सहज विरोध दूरें परिहरब निचल उठ जतए मुरारि ॥४॥
दूती-वचन हीत कए मानल, चालक भेल पचबान ॥५॥
हरि-अभिसार चलालि वरकामिनि, विद्यापतिकवि-भान ॥६॥

सरसासावरी राग

(३४०)

चल चल सुन्दरि शुभकर आज, ततमत करइतें नहिं होए काज ॥१॥
गुरुजन-परिजन-डर कर दूर विनु साहसे, सिधि आसन पूर ॥२॥
विनु जपलें सिधि केओ नहिं पाब विनु गेले घर निधि नहिं आब ॥३॥
ओ परं-बल्लभ तोहें परनारि हम मध्यँ दूहू दिस गारि ॥४॥
तोहँ हुन्हि दरसन ई हम लाग तत कए देखिअ जेहन तुअ भाग ॥५॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि, जे अगिरिअ ताँ न गुनिअ गारि ॥६॥

द्राविणी राग

(३४१)

जौवन-रूप अछल दिन चारि, से देखि आदर कएल मुरारि ॥१॥
अब भेल झाल कुसुम सबे छूछ, वारि विहुन सर केओ नहि पूछ ॥२॥
हमरिओ विनति कहबि सखि रोए, सुपुरुष-वचन अफल नहि होए ॥३॥
जावे रहए धन अपना हाथ तावे से आदर कर संग साथ ॥४॥
धनिकक आदर सबतहु होए, निरधन बापुल् पुछ नहि कोए ॥५॥
भनइ विद्यापति राखब सील, जओ जग जीविअ नओ निधि मील ॥६॥

शुद्ध मलारी राग

(३४२)

रोपलह पहु लहु लतिका आनि, परतह जतने पटवितह पानि ॥१॥
तैं अरथित उपचित भेलि से, तोहें विसरलि भल बोलत के ॥२॥
माधव, बुझल तोहर अनुरोध, हेरितहु कएलह नयन-विरोध ॥३॥
एकहु भवन वसि दरसन-बाध, किछु न बुझिअ पहु की अपराध ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुपुरुष वचन सवहु विधि फूर, अमरखेँ विमरख न करिअ दूर ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति एहुं रस जान, राएसिवसिंह लखिमादेइ-रमान ॥ ६ ॥

अहिरानी राग

(३४३)

सुरुज सिन्दुर बिन्दु, चान्दन लिहए इन्दु, तिथि कहि गेलि तिलके ॥१॥
विपरित अभिसार, वरिस अमिअ-धार, अङ्कुश कए लतिके ॥ २ ॥
हे, माधव, भेटलि पसाहनि-वेरी,
आदर हरलक, पुछिओ न पुछलक, चतुर सखीजन हेरी ॥ ३ ॥
केतकि-दल लए, चम्पक-फुल दए, कवरी फोएलक आनी।
मृगमदकुङ्कुमें अगरुचि तलओलक समय निवेद सयाँनी ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति, सुन वर जौवति, कुहू निकट परमाने।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि-रमाने ॥ ५ ॥

(३४४)

नव जौवन अभिरामा,
जत देखल तत कहहि न पारिआ, छाओ अनुपम एक ठामा ॥ १ ॥
हरिन इन्दु अरविन्द करिनि हिम पिक बुझल अनुमानी ॥ २ ॥
नयन वरन परिमल छवि तनु-रुचि अओ अति सुललित वानी ॥ ३ ॥
कुचयुग उपर चिकुर फुजि पसरल, ता अरुझाएल हारा ॥ ४ ॥
जनि सुमेरु ऊपर मिलि ऊगल चाँद विहुनि सबे तारा ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति सुनु वर जौवति आन न पावए कोइ ॥ ६ ॥
कंसदलन नाराएन-सुन्दर तासु रमनि पए होइ ॥ ७ ॥

गोपीवल्लभा राग

(३४५)

गमने गमाउलि गरिमा, अगमने जिवन सन्देह ॥ १ ॥
दिनें दिनें तनु अवसन भेल हिम कमलिनि सम नेह ॥ २ ॥
अवहु न सुमरह मधुरिपु, कि करति सुन्दरि नाम ॥ ३ ॥
मोहि विसरलह कहिंनि रहु ठाम ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दिस कान्ह अओकाँ दिसँ सुवितत वंश विशाला ॥ ५ ॥
दुइ पथ चढलि नितम्बिनि संसञे पडु कुल-बाला ॥ ६ ॥
पाँचबान अलिआतए धैरजेँ कर पगु थीरे ॥ ७ ॥
आँचर मुँह दए काँदए झाँषए नयन वह नीरे ॥ ८ ॥

देशी राग

(३४६)

विदिता देवी विदिता हो, अविरल केस सोहन्ती ॥ १ ॥
एकाएक सहसको धारिनि जनि रंगापुर नटी ॥ २ ॥
कज्जल रूप तुअ काली कहिअए, उज्जल रूप तुअ वानी ॥ ३ ॥
रविमण्डल परचण्डा कहिअए गङ्गा कहिअए पानी ॥ ४ ॥
ब्रह्मा घर ब्रह्मानी कहिअए, हर-घर कहिअए गोरी ॥ ५ ॥
नारायन-घर कमला कहिअए, के जान उतपति तोरी ॥ ६ ॥
विद्यापति कविवरेँ एहो गाओल, जाचक-जनके गती ॥ ७ ॥
हासिनिदेइ-पति गरुडनरायण देवसिंह नरपती ॥ ८ ॥

अभिरामा शारङ्गी राग

(३४७)

नमित अलकैँ बेढला मुख-कमल–सोभे
राहुक बाहु पसरला शशि-मण्डल–लोभे ॥ १ ॥
मदन-सरेँ मुरुछली, चिर चेत न बाला,
देखलि से धनि हे वासि मालति-माला ॥ २ ॥
कलस कुच लोटाइली घन-सामरि वेनी
कनय-पवय सूतली जनि कारि नागिनी ॥ ४ ॥
भने विद्यापति भाविनी थिर थाक न मने,
राजाहुँ सिवसिंह रूपनाराएन लखिमादेविरमने ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनूरा

(३४८)

तोरए मोञ गेलिहुँ फूल, मोती मानिके तूल ॥ १ ॥
साजनि, साजी अछोरसि मोरि, गरुवि गरुवि आरति तोरि ॥२॥
डिठि देखइते दिवस चोरि ॥ ३ ॥
एत कन्हाइ पर-धन लोभ जे नहि लुबुध सेहे पए सोभ ॥ ४ ॥
निकुञ्जकेर समाज, इथिं नही मुख लाज ॥ ५ ॥
ढाँकिबो रे न अपजस-रासि, से कर कान्हु जे न लजासि ॥ ६ ॥
जखने नागर नगर जासि ॥ ७ ॥
पीन पयोधर भार, मदन-राए-भण्डार ॥ ८ ॥
रतने जडिलो ताहरि माथ, मलिन होए तन देहे हाथ ॥ ९ ॥
बड से कठिन हमर नाथ ॥ १० ॥
कवि भन कण्ठहार, रस एतए के पार ॥ १० ॥
सिरि शिवसिंह जानए तन्त, रतन सन लखिमा–कन्त ॥ ११ ॥
सब-कला-रसँ जे गुनमन्त ॥ ११ ॥

सारङ्गीभेद सूहव राग

(३४९)

पिअ परवास आस तुअ पासहिं तें कि बोलह जदि आन ॥ १ ॥
जे पतिपालक से भेल पावक इथीं कि बोलत आन ॥ २ ॥
साजनि, अघट न घटावह मोहि ॥ ३ ॥
पहिलहि आनि पानि पिअतमें गहि करें धरि सोंपलहुँ तोहि ॥४॥
कुलटा भए जदि पेम बढाइअ तें जीवने की काज ॥ ५ ॥
तिला एक रङ्ग–रभस-सुख पाओब रहत जनम भरि लाज ॥६॥
कुल-कामिनि भए निज-पिअ विलसए अपथें कतहु नहि जाइ ॥७॥
की मालति मधुकर उपभोगए किम्वा लताँहि सुखाइ ॥ ८ ॥
विद्यापति कह कुल रखलें रह दुति-वचने नहि काज ॥ ९ ॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा–देवि-समाज ॥ १० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्ध सूहव राग

(३५०)

सरदक ससघर सम मुख-मण्डल काचे झँपावह वासे ॥ १ ॥
अलपओ हास सुधारस बरिसओ छाडओ अमिअ पिआसे ॥२॥
कि आरे मानिनि अपनहुँ मने अनुमान,
रूसैतेँ आनहुँ बोलब अगेआन ॥ ३ ॥
हाटक घटन सिरीफल सुन्दर कुचयुग कोटि करु आघे ॥ ४ ॥
पानि-परस-रस अनुभव सुन्दरि न कर मनोरथ बाधे ॥ ५ ॥
नागर-अङ्ग-विभङ्गक आगरि विद्यापति कवि भाने ॥ ६ ॥
राज सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेवि-रमाने ॥ ७ ॥

कामसूहव राग

(३५१)

वदन-चाँद तोर, नयन चकोर मोर, रूप अमिअ रस पीवे ॥१॥
अधर मधुरि-फुल, पिअ मधुकर तुल, मधु बनु कति खन जीवे ॥२॥
हे मानिनि, मन तोर गढल पसाने ॥३॥
अपने रभसेँ हसि, किछुओ उतर देसि, सुषे जाओ निसि अवसाने ॥४॥
निअ मनें न गुनसि, पर-बोल न सुनसि, न छैलकि बानी ॥६॥
अपन अपन कजा, कहइतेँ परम लजा, अरथित आदर हानी ॥७॥
भनइ विद्यापति, सुनु वर जौवति, सबे धन न करिअ माने ॥८॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेवि-रमाने ॥९॥

करुणासूहव रा

(३५२)

न गौरव-शील-सोभाओ, सबे लए चढलिहु तोहरहिं नाओ ॥१॥
हमे अबला कत कहब अनेक, आइति पडलाँ बुझिअ विवेक ॥२॥
हठ तेज माधव कर मोहि पार, सबतहँ बड थिक पर-उपकार ॥३॥
हमरा भेलि आबे तोहेरि आस, से न करिअ जे हो उपहास ॥४॥
तोहें पर-पुरुष हमहु पर-नारि, हृदय काँप तुअ रीति विचारि ॥५॥
भल-मन्द जानि करिअ परिनाम, जस अपजस पए रह गए ठाम ॥६॥
भनइ विद्यापति तोँ हें गुनमान, हाथि महतेँ नव-के नहि जान ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन्दीपन कोडार राग

(३५३)

सखि हे, आज जाएब मोहीं ॥१॥
घर गुरुजन-डर न मानब, वचन चूकब नहीं ॥२॥
चाँदन आनि आनि अङ्ग लेपब भूषन कए गज मोती ॥३॥
अञ्जन विहुँन लोचन-युगल धरत धवल जोती ॥४॥
धवल-वसनें तनु झपाओब गमन करब मन्दा ॥५॥
जैअओ सगर गगन उगत सहसें सहसें चन्दा ॥६॥
न हमे काहुकि डीठि निवारबि न हमें करब ओते ॥७॥
अधिक चोरि परसओं करिअ इहे सिनेहक लोते ॥८॥
भनइ विद्यापति सुनह जुवति, साहसैं सकल काजे ॥९॥
बुझ सिवसिंह रस रसमय सोरमदेवि समाजे ॥१०॥

वियोगि कोडार राग

(३५४)

सिरिहिं मिलल देहा, कुचँ चाँद-रेहा, घामे न पिउल सुगन्धा ॥१॥
अधर मधुरिफुल, देखिअ ताहेरि तुल, धएलहिं अछ मकरन्दा ॥२॥
रामा आइलि पिआ विसराइ ॥३॥
पुरुष-केसरि जनि, दमनलता धनि, छुअइतें जा असिलाइ ॥४॥
गेलहि कएलह मान, की अवसर आँन, कि सिसु वालँभ तोरा ॥५॥
मुसए गेलिहे धन, जागल परिजन, लगहिक लाओक चोरा ॥६॥
भनइ विद्यापति सुनु वरजौवति, इ रस केओ केओं जाने।
राजा सिवसिंह रूपनाराएन, लखिमा देवि रमाने ॥८॥

धनछी राग । पञ्चम सुरा

(३५५)

आकुल चिकुरे वेढल मुख-सोभ, राहु कएल ससि-मण्डल लोभ ॥१॥
उभरल कुसुममाल धर अङ्ग जनि जमुना मिलु गङ्ग-तरङ्ग ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वदन सोहाओन स्नम जल बिन्दु, मदने मोति लए पूजल इन्दु ॥३॥
पिअ-मुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज, चाँद अधोमुख पिबए सरोज ॥४॥
कुच विपरीत विलम्बित हार, कनक कलस वम दूधक धार ॥५॥
किङ्किनि सबद नितम्बिनि छाज, मदन-विजय-रथ वाजन बाज ॥६॥
भनइ विद्यापति मने अनुमानि, कामिनि रम पिआ अनुमति जानि॥७॥

विभिआ धनछी राग

(३५६)

मलिन कुसुम तनु चीरे, कर पर वदन नयन ढरु नीरे ॥१॥
कि कहब माधव, ताही, तुअ गुन-लुबुधि मुगुधि भेलि राही ॥२॥
उरँलुर सामरि वेनी, कमल-कोष जनि कारि नागिनी ॥३॥
केअओ सखि ताकए साँसे, केअओ नलिनी-दलेँ करए बतासे ॥४॥
केअओ बोल आएल हरी, उससि उठलि सुनि नाम तोहरी ॥५॥
सुकवि विद्यापति गावे, विरहिनि-वेदन सखि समुझावे ॥६॥

योगिआ धनछी राग

(३५७)

लाखहुँ लता कोटि तरुअ जूवति कत न लेख ॥१॥
सवहि फूलाँ मधु मधुमय, मधुहुँ मधु विसेष ॥२॥
साजनि, हमर वचन सूँन ॥३॥
सबे परिहरि तोहि इछ, अओ कि सराहसि पून ॥४॥
तोरिए चिन्ता तोरि(ए) वरता, सेजहु तोरिए ठाम ॥५॥
सपनहुँ हरि तोहि विसरलि (ल)ए उठ तोरिए नाम ॥६॥
आलिङ्गन-वेराँ पाछु निहारए, तोहि विनु सुन कोर ॥७॥
हृदय-कथा, गुपुति वेथा, लाजे न छाडए नोर ॥८॥
सरस कवि विद्यापति गाओल निअमने अवधारि ॥९॥
जकर पेमें पराधिन बाँलमु सेहे कलावति नारि ॥१०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाम्भवी धनछी राग

(३५८)

सपने आएल सखि मझु पिअ पासे, तखनुक की कहब हृदय-हुलासे॥१॥
न देखिअ धनु-गुन न देखु सन्धाने, चौदिस परए कुसुम-सर-बाने॥२॥
वंक विलोचन विगसित थोरा, चाँद उगल जनि समुद्र हिलोरा॥३॥
उठलि चेहाए आलिंगन वेरी, रहलि लजाए सूनि सेज हेरी॥४॥
भनइ विद्यापति सुनह सपने, जत देखलह तत पुरतहु मने॥५॥

गौडीय गौडमालव राग

(३५९)

बाँधए विकट जटा, तथिहुं चाँदन फोटा॥१॥
कत जुग-सहस वएस वहि गेला, उमत महादेव सम तन भेला॥२॥
मौलि मेलए छार, सहज न तेजए पार॥३॥
सुकवि विद्यापति गाऊ, जिवओ सिवसिंह राऊ॥४॥

मैथिल गौड मालव राग

(३६०)

गेलाहुँ पुरुब-पेमे उतरो न देइ, दाहिन वचन वाम कए लेइ॥१॥
हे हरि, रस दए रुसलि रमनी, हमतह न आउति कुंजरगमनी॥२॥
गैए मनाबह रहओ समाजे, सबतह बड थिक आँखिक लाजे॥३॥
जे किछु कहलक से अछि लेले, भल कहि बुझब अपनहि गेले॥४॥
भनइ विद्यापति नारि सोभावे, रुसलि रमनि पुनु पुनुमत पावे॥५॥

राजविजय राग

(३६१)

कतहु श्मश्रुधर, कतहु पयोधर, भल वर मिलल सुशोभे॥१॥
अधँ गँधइलि नारि, गुनलि निज-गारि, गरुअ गौरि गुन लोभे॥२॥
आलो शिव शम्भू, तुमी शिव शम्भू, तुमी जो वधलो पचबाने॥३॥
गाँगँ लागि गिरिजाक मनौलि हे, कके देवि बोलह मन्दा॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चरन नमित फनि, मनिमय भूषन, घर खिखिआएल चन्दा ॥५॥
भनइ विद्यापति सुनह तिलोचन, पय-पङ्कज मोरि सेवा ॥६॥
चन्दलदेइ-पति वैद्यनाथ गति नीलकण्ठ हर देवा ॥७॥

उडाना राजविजय राग

(३६२)

जय जय भगवति भीमा भवानी, चारि वेदें अवतरु ब्रह्मवादिनी ॥१॥
हरिहर ब्रह्मा पुछइत भरमें, एकओ न जान तुअ मरमें ॥२॥
भनइ विद्यापति राए मुकुट-मणि, जिवओ रूपनराएन नृपति धरणि ॥३॥

देश राजविजय राग

(३६३)

जाति पदुमिनि सहति कता, गजें दमसलि दमन-लता ॥१॥
लोभे अधिक मूल न मार, जे मूल राखए से वनिजार ॥२॥
अछल जोर सिरीफल भाँति कएलह छोंलग नारँग काँति ॥३॥
भनइ विद्यापति न कर लाथ, भूषल न खाह दूहू हाथ ॥४॥

शुद्ध नाट राग

(३६४)

मृगमद-पङ्क अलका, मुख जनु करह तिलका ॥१॥
सँपुन पुनिमके चन्दा, कलकेँ होएत गए मन्दा ॥२॥
सहजें सुन्दरि वडि राही, कि करति अधिक पसाही ॥३॥
उजर नयन नलिना, काजरें न करु मलिना ॥४॥
दूधक धोएल भमरा, मसि बुडि जाएत समरा ॥५॥
पीन पयोधर गोरा, उलटल कनय-कटोरा ॥६॥
चाँदने धवल न करु, हिमें झापि जएत सुमेरु ॥७॥
विद्यापति हेन कवी, कतए तिमिर जहाँ रवी ॥८॥
रूपनराएन पहू, तौलि हलत गुरु लहू ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मलारी नाट राग

(३६६)

गगन गरज मेघा, उठए धरणि धेधा, पचसर हिअ गेल साली ॥ १ ॥
सुमुखि देह-खिन, जिउति आजुक दिन, के जान कि होइति काली ॥२॥
माधव, मन दए सुन तसु वानी ॥ ३ ॥
कुजन निरूपि सुजन सखि संगति जे किछु कहए सबानी ॥ ४ ॥
की हमे साँझक एकसरि तारा भादव चौठिक चन्दा ॥ ५ ॥
ऐसन कए पिआजे मोर मुख मोल्ल मो पति जीवन मन्दा ॥ ६ ॥
वामहु गति जत समदि पठओलन्हि से सवे कहि कहि गेली ॥७॥
तेरसि तिथि ससि, सामर पख निसि, दसमि दसा मोरि भेली ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति भने जनु मानह आने ॥ ९ ॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमाने ॥ १० ॥

(३६६)

रयनि काजर वम भीम भुअङ्गम कुलिश परए दुरवार ॥ १ ॥
गरजें तरस मन, रोखें वरिस धन, संसबे परु अभिसार ॥ २ ॥
सजनी, वचन छडैतें मोहि लाज ॥ ३ ॥
जे होएअ से होअओ वरु, सवे हमे अगिकरु, साहसँ मन दए आज॥४॥
ठमहि रहिअ धूमि, परसे चिन्हिअ भुमि, दिगमगँ उपजु सन्देह ॥५॥
हरि हरि सिव सिव, तावे जाइह जिव, जावे न उपजु सिनेह ॥६॥
चरन वेढले फनि, हित कए मानल, धनि नूपुर न करत रोर ॥ ७ ॥
सुमुखि पुछओ तोहि, सरूप कहसि मोहि, पेमक कत एक ओर ॥ ८ ॥
अपन सुहित-मित से परतख न पाइअ पेमक ओर ॥९॥
चाँद हरिन वह बाहुक बल सह पेम पराभव थोर ॥ ९ ॥
भनइ विद्यापति सुनह सुचेतनि गमन न करह विलम्बे ॥ १० ॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल-कला-अवलम्बे ॥ ११ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शङ्कु राग

(३६७)

करतल कमल नयन ढर नीर, न चेतए कुन्तल सँभर न चीर ॥ १ ॥
तुअ पथ हेरि हेरि चित नहि थीर, सुमरि पुरुब नेह दगध सरीर ॥२॥
कतें परि माधव, साधव माँन, विरहि जुवति माँग दरसन दान ॥ ३ ॥
जल मधे कमल, गगन मधे सूर, आँतर चाँदहु कुमुद कत दूर ॥ ४ ॥
गगन गरज मेघ, सिषर मयूर, कत जन जान सिनेह कत दूर ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति विपरित मान, राधा-वचने लजाएल कान्ह ॥ ६ ॥

(३६८)

गगन गरज घन जामिनि घोर, रतनहुँ लागि न सञ्चर चोर ॥ १ ॥
नेहना तजि अएलाहु निज-गेह अपनँहुँ न देखिअ अपनुक देह ॥२॥
तिला एक माधव परिहर मान, तुअ लागि ससञे परल परान ॥ ३ ॥
दुसह जमुना नरि ऐलिहु भाँगि, कुचयुग तरल तरनि तँ लागि ॥ ४ ॥
देह अनुमत हे जुझओ पचबान, तोहे सन नगर नागर नहि आन ॥५॥
भनइ विद्यापति नारि-सोभाव, अपनुक अभिमत उकुति बुझाव ॥ ६ ॥
राजा रूपनराएन जान, राए सिवसिंह लखिमादेइ-रमान ॥ ७ ॥

उत्तम नाट राग

(३६९)

सखि हे बालँभ जितब विदेसे ॥ १ ॥
हमे कुल-कामिनि, कहइते अनुचित, तोहन्हुँ देहुन्हि उपदेसे ॥२॥
ई न विदेसक बेली ॥ ३ ॥
दुरजनें हमर दुख न अनुमापब, तें तोहें पिआ गेल एली ॥ ४ ॥
किछु दिन करथु निवासे ॥ ५ ॥
हमे पूजल जे सेहे पए भुजब, ओ राखथु पर उपहासे ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होएता हे किए वध-भागी ॥ ७ ॥
जहिखने हुन्हि मनें माधव चिन्तब, हमहुँ मरब धसि आगी ॥८॥
विद्यापति कवि भाने,
राजा सिवसिंह रूपनराएन, लखिमादेवि-रमाने ॥ ९ ॥

देश देशाख राग

(३७०)

मान परीहर हे करु वचन मोरा
मार मनोभव हे धरु सरन तोरा ॥ १ ॥
न कर न कर हे विमुख आजे
अपुरुब पेमे हे पुनु भेल समाजे ॥ २ ॥
कमलवदनि हे करु आकम दाने
विनवे के नहि हे जग तेजए माने ॥ ३ ॥

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारी कुछ छात्रोपयोगी पुस्तकें

(१) अनुवादकला—अथवा वाग्व्यवहारादर्श—श्री चोरू देव शास्त्री २॥)
(२) अनुवाद चंद्रिका—दसवाँ संस्करण २॥)
(३) आदर्श प्रस्ताव रत्नमाला—पं० विश्वनाथ ४)
(४) अभिनव संस्कृत परिचय २)
(५) आदर्श लघुकौमुदी १।)
(६) गांधी विजय नाटकम्—म० म० पं० मथुराप्रसाद दिक्षित ॥)
(७) बाल निबंधादर्श—श्री विश्वनाथ शास्त्री १॥)
(८) भोज प्रबंध—सं० हि० टीका ३।॥)
(९) मध्य सिद्धान्त कौमुदी—प्रभाकरी सं० टीका हिन्दी अनुवाद सहित ५॥)
(१०) रघुवंश—स० हि० अन्वय समास आदि १–५ सर्ग ३)
(११) लघुसिद्धान्त कौमुदी—उपेन्द्र वृत्ति तथा सूत्र भाषानुवाद १॥)
(१२) सिद्धान्त कौमुदी—बाल मनोरमा तत्वबोधिनी दोनों टीका-सहित ४ भाग में १६)
(१३) साहित्य दर्पण—पं० शालिग्राम कृत हिन्दी अनुवाद सहित ८)
(१४) मेघदूत—स० हि० टीका सहित ५)
(१५) हितोपदेश—मित्रलाभ सं० हि० अश्लीलांश वर्जित १)

सर्वविध पुस्तक प्राप्तिस्थान—

मोतीलाल, बनारसीदास

नेपाली खपरा, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi